



महान भाषा

पृष्ठ

१

१

व्याख्या

भारतीय विद्वान् भारत मातृभूमि

भारत की भाषा के उपयोग

के विभिन्न विधा

प्रकीर्ण

प्रकाश

नाम



# सूची पत्र ।

विषय	पृष्ठ
अक्षरों का वर्गीकरण	१
व्यंजनों का संधि	११
स्वरों का संधि	१६
धातु पाठ	१९
क्रियाओं के रूप	२९
कारणों का निर्माण	३७
आगम का वर्गीकरण	३८
अभ्यास का वर्गीकरण	४५
प्रत्ययों का वर्गीकरण	६०
३ लिट् और ३ लोट्-	६७
सम्बन्धिस्वररहित क्रियाएं	७५
सम्बन्धी स्वर का वर्गीकरण	८६
सम्बन्धिस्वरान्वित क्रियाएं	८६
नियमविच्छेद क्रियाएं	११६
मूल संज्ञा पाठ	१५०
मूल विशेषण पाठ	१६८
मूलाव्यय पाठ	१७३

संज्ञाओं का निर्माण	१७५
विशेषणों का निर्माण	१८२
तरबर्ध वाचक और तमबर्ध वाचक	१८६
संख्यावाचक विशेषण	१९०
अध्यों का निर्माण	१९३
संज्ञाओं के रूप	१९९
प्रथम प्रकार	२०२
द्वितीय प्रकार	२१६
तृतीय प्रकार	२२०
नियम विरुद्ध संज्ञाएँ	२२३
विशेषणों का प्रथम भाग	२२७
द्वितीय भाग	२३१
तृतीय भाग	२३२
चतुर्थ भाग	२३६
नियमविरुद्ध विशेषण	२४२
उपसर्गों का वर्णन	२४८
और कितने अव्यय	२७३
कितने विशेषण	२७७
परित्यक्त धातु	२८१

शुद्धाशुद्ध पत्र

संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७	२३	अनस्वार	अनुसार
२०	१	अङ्गीकार	अनङ्गीकार
२२	१०	युग	युज्
२४	११	उन्मत्त	उन्मत्त
२६	१७	ΣΤΕΑ	ΣΤΕΛ
"	१८	खोंच	खींच
२७	८	ΤΙΑ	ΤΙΑ
४१	६	ΟΙΚ	ΟΙΧ
४६	४	α	α से
"	१०	πλϋ	πλϋθ
४७	५	में	में अभ्यास
५२	२	ΡΓ	ΡΑΓ
५४	११	γϋϋ	γϋϋ
५७	२	ΚΑΑΤ	ΚΛΑΤ
५८	१०	σ	α
६२	१	तीन	चार
७२	८	κεχρῶφων	κεχρῶφθων
७७	८	के	के वार्त्ती
७८	१२	εμειγνυτην	εμειγνύτην
८१	१५	διδῶσον	διδῶσθον

εἶ	१३	व्यनाधिक	व्यूनाधिक
εἶψυ	१०	ζῆν	ζῆν
εἶψ	१५	θανετ	θαυεῖ
εἶπ	४	ΒΛΑ	ΒΑΛ
१०β	५	ποιήσομαι	ποιήσεται
१०β	१२	σπερησομαι	σπαρησομε- ενο
११२	१५	γεγοναν	γεγονοτ
११ε	१३	λελουμενο	λελυμενο
१२३	१०	εληλυθοντ	εληλυθοτ
१२ε	४	ἔχτον	ἔχετον
१४४	६	ενεχειη	ενεχθειη
१५४	१२	θνε	θνα
"	१३	παρθ	πραθ
१५ε	१	εδειται	εδειται
१εο	७	βασνο	βασανο
१εε	२	δικο	δικα
"	३	कर्म	कर्म
१ε२	४	घमण्ड	घमण्ड
१ε५	६	πευεθεσ	πενθεσ
"	७	घटान	चटान
१εε	३	σχευοσ	σχευεσ

..	१२	σδγθος	σδγθεδ
..	२०	σφδ	अपना(त्व)- कुछ नहीं
१६७	१	सप्त	तप्त
१६८	२१	गाहिरा	गहिरा
१७२	१	न वरन	वरन
१७३	२	मत वान	मत वा न
"	११	आधिक्य	आधिक्य
१७८	५	की	की
१८२	२	βασιλεσ	βασιλισσα
१८२		वह आय <sup>स</sup>	(वह आय)से
१८३	१२	σωματιχ	σωματιχο
१८६	३	से	में
१८७	१०	इष्ट	इष्ट
१८८	१६	κλλιον	καλλιον
१८९	१५	वरिष्ठ	वरिष्ठ
१९१	९	ἀγδοσηχον	ὀγδοσηχοντα
१९५	१५	अत्य प्रणा <sup>ता</sup> न्वित	अत्यप्रणा <sup>ता</sup> न्वित
२०५	१	समाव	अभाव
२१३	७	के	के ८
"	५	होता	होना
"	६	अवश्यक	आवश्यक



२१६	५	तव	सब
२२३	१५	ὅ (सो)	ὅ
२२६	१५	ὅδ'ατ	ὅδ'ατ
२३०	१३	κρείττους	κρείττους
२३५	२	ἀπλόη } ἀπλή }	ἀπλόη } ἀπλή }
२५४	१	सम्पूर्णा	सम्पूर्णा
"	१०	और	और
२५८	१०	विरारित	विचारित
२६०	१३	और	और
"	१५	प्रत्येके	प्रत्येक
२६१	२	τατα'εμε	कुछ नहीं
"	१७	और	और
२७०	१४	आन्त	आता
२७६	१५	साथ नहीं	साथ
२७७	३	γένετα	γένετα
२८१	८	दरिद्र	दरिद्र

# यवनभाषा का व्याकरण

प्रथम अध्याय । अक्षरों का वर्णन

१ । यवनभाषा में २४ अक्षर हैं। यथा ।

सूत्रि।	नाम ।	उच्चारण ।
A α	आल्फा	आ वा आँ
B β	बेता	ब
Γ γ	गाम्मा	ग वा उ
Δ δ	देल्टा	द
E ε	एप्सीलोन	ए
Z ζ	जेता	ज
H η	एता	थ
Θ θ	थेता	थ
I ι	योता	इ वा ई वा य
K κ	काप्पा	क

Δ λ	लॉम्बो	ल
Μ μ	मु	म
Ν ν	नु	न
Ξ ξ	क्सी	क्ख
Ο ο	ओम्बीक्रॉन्	ओ
Π π	पी	प
Ρ ρ	रॉ	र
Σ σ ς	सिग्मा	स
Τ τ	ताँउ	त
Υ υ	उप्सीलोन्	उ वा ऊ
Φ φ	फी	फ
Χ χ	खी	ख
Ψ ψ	प्सी	प्स
Ω ω	ओम्बेगॉ	ओ

२। पहिली पंक्ति में जो प्रथम २ मूर्ति लिखी हुई हैं सो वाक्य के पहिले शब्द के आदि में और मनुष्य वा स्थान के विशेष

नाम' के आदि में आती हैं। द्वितीय २ मूर्ति और सब कहीं आती हैं और अक्षरद्वय अक्षर की द्वितीय और तृतीय मूर्तिमें यह अक्षर है कि तृतीय जो है सो शब्द के अन्तही में और द्वितीय मूर्ति और सब कहीं आती है जहां प्रथम मूर्ति के आने का नियम नहीं है।

३। हिन्दी में आ ए ओ इन तीन स्वरों का ह्रस्वत्व नहीं होता है परन्तु यवनभाषा में होता है और इस ह्रस्वत्व का चिह्न हमने स्वर के ऊपर लिख दिया। यथा आँ ऐँ ओँ । यदि कोई कहे कि आ का ह्रस्वत्व अ है तो यह ठीक नहीं है क्योंकि अ का उच्चारण आ के उच्चारण से भिन्न है और A का उच्चारण अ नहीं है बरन् ह्रस्व आँ है।

४। फिर T का उच्चारण हिन्दी में कभी नहीं होता है पर गुरुके ज्ञान से सीखना आवश्यक है। यह ए वा अ के उच्चारण से कुछ थोड़ा सा मिलता है। हमने नीचे के

- चिह्न से उस को बताया । यथा उ ऊ ।
- ५। Γ का उच्चारण X वा Y वा हसरे γ के पहिले उ होता है और सब कहीं ग ।
- ६। I का उच्चारण शब्द के आदि में हसरे स्वयंके पहिले य होता है और सब कहीं इ वा ई ।
- ७। Z का ठीक उच्चारण महाराष्ट्रों से होता है उन्नरदेशीयों से नहीं ।
- ८। इन २४ अक्षरों से अधिक पुराने समय में और एक था सो छदवां था और उस की मूर्ति F F था । उस का उच्चारण व से मिलता था । परन्तु पीछे से उस का उच्चारण और तब उसका लेखन भी छोड़ दिया गया और अब केवल द छः का अंक समझा जाता है ।
- ९। फिर और दो मूर्ति हैं जो अक्षर नहीं कहलाते हैं पर उच्चारण के लिये आव-श्यक है सो अल्पप्राण और महाप्राण क-हलाते हैं । महाप्राण का उच्चारण ह है और

अल्पप्राण केवल गले के खोलने को बताता है। अल्पप्राण की मूर्ति ० और महाप्राण की १ है। वे स्वरकी बड़ी मूर्ति की बाईं ओर और उसकी छोटी मूर्ति के ऊपर लिखे जाते हैं पर संयुक्त स्वर में दूसरे स्वरके ऊपर लिखे जाते हैं। यथा 'A A ॰ ॰' 'E U E U' केवल शब्द के आदिही में ये आते हैं।

२०। महाप्राण की मूर्ति ρ के साथ भी आता है जब कि वह शब्द के आदि में अथवा दूसरे ρ के पीछे आता है। यथा 'ρ ω π ρ ρ ०'। इस दशा में ρ का उच्चारण अधिक बलसे होता है।

२१। इन से अधिक और तीन मूर्ति है जो बल कहलाते हैं इस लिये कि शब्द के जिस अक्षर को बलके साथ पढ़ना है उसी अक्षर के स्वरके ऊपर लिखे जाते हैं सो ये हैं तीक्ष्ण / गुरु / सुत - । इन का सकल भेद हम यहां नहीं लिख सकते हैं

केवल इतनाही कहते हैं कि प्रश्नवाचक शब्दों में तीसरा बल और जहां दो स्वर आपस में मिल गये तहां प्रायः सुनवल आताहै । यथा  $\alpha\upsilon\theta\rho\omega\pi\tau\omicron\varsigma$   
 $\pi\acute{o}\tau\epsilon$   $\chi\alpha\iota$   $\theta\epsilon$   $\tau\acute{\omega}\nu$   $\eta\acute{\epsilon}\varsigma$  ।

१२ । इनसे अधिक स्थितिसूचक प्रश्नसूचक और विस्मयसूचक भी मूर्ति हैं । स्थितिसूचक मूर्ति तीन हैं अर्थात् जो  $\pi\epsilon\rho\iota\omicron\delta\omicron$  कहलाताहै और जो  $\chi\omega\lambda\omicron$  कहलाताहै और जो  $\chi\omicron\mu\mu\alpha\tau$  कहलाताहै ।  $\pi\epsilon\rho\iota\omicron\delta\omicron$  अधिक विलम्बकी स्थिति  $\chi\omega\lambda\omicron$  उस से न्यून और  $\chi\omicron\mu\mu\alpha\tau$  सब से छोड़े विलम्ब की स्थिति को बताना हैं । प्रश्नसूचक मूर्ति ; और विस्मयसूचक मूर्ति ! है ।

१३ । फिर और एक मूर्ति है सो शब्दके अन्तिम स्वर के लोप को बतानाहै । यथा  $\epsilon\acute{\alpha}\tau\tau$  के स्थाने  $\epsilon\acute{\alpha}\tau$  और  $\alpha\upsilon\alpha$  के स्थाने  $\alpha\upsilon$  । इस को अल्पशाणा की मूर्ति

कभी नहीं समझना चाहिये ।

१४। A, U ये तीन स्वर कब दीर्घ और कब ह्रस्व हैं यह लेखन से प्रगट नहीं होता है । एक एक शब्दमें उनका दीर्घत्व वा ह्रस्वत्व सीखने होगा ।

१५। निम्ने स्वरों से अधिक यवनभाषा में कई एक संयुक्त स्वर कहलाते हैं सो ये हैं ।

मूर्ति ।	उच्चारण	मूर्ति।	उच्चारण।
αλ	ऑर	αυ	ऑउ
ελ	रे	ευ	ओ
ολ	ओर	ηυ	एउ
υλ	उर	ου	ऊ

जब किसी स्वर के नीचे λ लिखा जाता तब उसका उच्चारण नहीं होता है ।

यथा A, α, Η, η, Ω, ω ।

जब दो स्वर एक साथ आते हैं परसंयुक्त नहीं बरन् उनका एक एक उच्चारण होता है तब हसरे के ऊपर... ऐसे



दो विन्दु लिखी जाती हैं। यथा  $\alpha \dot{\iota}$   
 $\eta \ddot{\iota}$ ।

(६) व्यंजनो के कई एक गण हैं सो निम्नलिखित चक्र से समझ पड़ेगें।

अचोष। शोष। मरु। प्राण। चिन्। सन्नुनासिका। संयुक्त।

कावस्थ।	$\chi$	$\gamma$	$\chi$	$\gamma$	$\xi$
दन्त।	$\tau$	$\delta$	$\theta$	$\nu$	$\zeta$
श्रोत्रस्थ।	$\sigma$	$\beta$	$\phi$	$\mu$	$\psi$
तालव।	$\lambda$	$\rho$	$\varsigma$		

इति अक्षरों का वर्णन।

### अभ्यास पत्र।

Δεῦτε πρὸς με πάντες οἱ  
 χολπιῶντες καὶ πεφορτισ-  
 μένοι, καὶ γὰρ ἀναπαύσω  
 ὑμᾶς. Ἄρατε τὸν ζυγὸν  
 μου ἐφ' ὑμᾶς, καὶ μάθετε  
 ἀπ' ἐμοῦ, ὅτι πρῶτος εἶμι

καὶ ταπεινὸς τῇ καρδίᾳ·  
καὶ εὐρήσετε ἀνάπαυσιν  
ταῖς ψυχαῖς ὑμῶν. Ὁ γὰρ  
ζυγὸς μου χρηστός, καὶ τὸ  
φορτίον μου ἑλαφρόν ἐστίν.

द्वितीय अध्याय — संधि का वर्णन।

१०। संस्कृत में जितनी संधि होती है उस से बहुत छोड़ी बचनभाषा में होती है तो भी इस छोड़ी सी संधि को जानना अति आवश्यक है।

अथ व्यंजनों की संधि।

१६। जब एक शब्द के अन्तमें कोई अक्षर आवे और दूसरा शब्द महाप्रान्त से आरम्भ हो तब उक्त अक्षर महाप्रान्तित होगा। यथा अंत् (जो अंत्० से निकला देवो १३) और ०त् मिलके अंत् ०त् होगा। वैसाही खत् (जो खत्त्०

से निकला) और ०१०५ मिलके ४००  
 ०१०५ होगा। समासों में भी वैसाही  
 होता है। यथा ०६४० और ०५६००  
 बहुव्रीहि समास होके ०६४०५६००  
 होगा।

१५। जब धातु इहराया जाता है (जैसा  
 संस्कृत में लिट् और जहोत्यादि गणमें  
 होता है) तब महाप्राणान्वित अक्षर अ-  
 वोष में बदला जाता है। यथा ०६ धा-  
 तुसे ०६०५५ नहीं बरन् ०६०५५५  
 और ०६ धातु से ०६०५४० नहीं बरन्  
 ०६०५४० होता है।

२०। जब धातु अथवा किसी मूलशब्द  
 के आदि में अवोष है और उस के अन्त  
 में महाप्राणान्वित अक्षर है और किसी  
 कारण से उस का महाप्राण निकल जा-  
 ता है तब वह आदि का अवोष महा-  
 प्राणान्वित होता है। यथा ०६०५ धा-  
 तु के पीछे जब ० लगे तब ० उस से

मिलके  $\psi$  होगा और तब  $\theta$  होजायेगा।  
यथा  $\theta\rho\epsilon\psi$ । वैसा ही  $\tau\rho\iota\chi$  के पीछे जब  
 $\sigma$  लगे तब  $\theta\rho\iota\epsilon$  होगा।

२१। समासों को छोड़के और २ शब्दों में  
तीन लंजन एक साथ प्राय नहीं रह स-  
कते हैं वरन् उन में से एक छूट जाता  
है। यथा  $\epsilon\sigma\phi\alpha\lambda$  और  $\sigma\theta\alpha$  मिलके  
 $\epsilon\sigma\phi\alpha\lambda\theta\alpha$  होगा।

२२। जब दो असम लंजन मिलते हैं तब प्रा-  
य पहिला बदलके दूसरे के समान होता  
है। यथा  $\Gamma\rho\alpha\kappa$  यावत्  $\tau\sigma$  प्रत्यय से मि-  
लके  $\gamma\rho\alpha\pi\tau\sigma$  और  $\theta\eta\chi$  प्रत्यय से मिल-  
के  $\gamma\rho\alpha\beta\theta\eta\chi$  होता है। वैसाही  $\Lambda\epsilon\Gamma$  या-  
वत्  $\theta\epsilon\chi\tau$  प्रत्यय से मिलके  $\lambda\epsilon\chi\theta\epsilon\chi\tau$   
और  $\tau\alpha$  प्रत्यय से मिलके  $\lambda\epsilon\chi\tau\alpha$  हो-  
गा। परन्तु  $\epsilon\chi$  उधसर्ग का  $\chi$  कभी न  
हीं बदलता है।

२३। जब दो अचोषा में दूसरा किसी कार-  
ण से बदलता है तब पहिला भी वैसा-

ही बदलता है। यथा  $\epsilon\gamma\tau\alpha$  से  $\epsilon\beta\theta\omicron\mu\omicron$  निकलता है और  $\nu\upsilon\chi\tau'$  और  $\eta\mu\epsilon\rho\alpha\upsilon$  अव्ययीभाव समास होके  $\nu\upsilon\chi\theta\eta\mu\epsilon\rho\omicron\upsilon$  होता है।

२४। जब शब्द के निर्माण में निरे स्वर (अर्थात् जो संयुक्त स्वर न हो) के पीछे  $\rho$  आता है तब  $\rho$  डहराया जाता है। यथा  $\acute{\alpha}$  और  $\rho\alpha\phi$  धातु से  $\acute{\alpha}\rho\rho\alpha\phi\omicron$  और  $\gamma\epsilon\rho\iota$  और  $\rho\epsilon$  धातु से  $\gamma\epsilon\rho\rho\rho\omicron$  होगा। देखो १०।

२५। जब  $\beta$  वा  $\phi$  के पीछे  $\sigma$  आता है तब वह  $\pi$  होके  $\psi$  बन जाता है और वैसाही जब  $\gamma$  वा  $\chi$  के पीछे  $\sigma$  आता है तब वह  $\kappa$  होके  $\xi$  बन जाता है। यथा  $\rho\alpha\beta$  और  $\sigma$  मिलके  $\rho\alpha\psi$  और  $\omicron\nu\gamma$  और  $\sigma$  मिलके  $\omicron\nu\xi$  होता है। देखो २०।

२६।  $\eta\mu$  से पहिले  $\gamma\beta\phi$  प्रायः  $\mu$  और  $\chi\chi$  प्रायः  $\gamma$  और  $\tau\theta\theta$  प्रायः  $\omicron$  होते हैं।

यथा ΤΤΠI यात्र से ΤΕΤΥμμενo  
 और ΤΤΥ यात्र से ΤΕΤΥμα  
 और ΑΔ यात्र से ὄσματα और  
 ΒαπτίI से Βαπτισματα होते  
 हैं ।

२०। TΘOY दूसरे τ का θ के पहिले σ  
 होते हैं और σ के पहिले प्राय कूट  
 जाते हैं । यथा ΠIΘ यात्र से  
 ΠΕIσTΕO और ΦΡΑΔ यात्रसे ΦΡΑσI  
 और σωματα से σωματα होते हैं ।

२१। N कण्ठस्थ अक्षरों के पहिले γ  
 (अर्थात् इ) और चोष्टस्थ अक्षरों के  
 पहिले μ और λ μ ν ρ के पहिले  
 इन्हीं के सटण और प्रत्ययों के σ  
 के पहिले प्राय लभ होजाता है ।  
 यथा συγ और γεγες मिलके συγ-  
 γεγες और συγ और φΕΡ  
 मिलके συμφερ और εγ और MEN  
 मिलके εμμεν और δαμον और

σ मिलके δαμῶσι होते हैं। परन्तु εν उपसर्ग ρ और σ के पहिले प्राय नहीं बदलता है।

२५। जब γτ γθ γθ के पीछे σ आता है तब उनका लोप होता है और अथस्य इस्व α ल उ दीर्घ और अथस्य ε वा ο यथाक्रम ε ल वा ου हो जाता है। यथा π α γ τ से π α σ और ζευγνυντ से ζευγνυσι और τυπτοντ से τυπτουσι और λεχθενε से λεχθεισι और πινεθ से πεισομα. होते हैं।

---

अथ स्वरो की संधि।

---

२६। वरुन इत्यस्वरान्त षाब्द ऐसे हैं कि

जब दूसरे शब्द के आदि में कोई स्वर आता है तब वह अल्पिष्ठ स्वर लक्ष्य होता है। देवो ए और ए ॥

३१। छोटे शब्द ऐसे हैं कि उन का अल्पिष्ठ स्वर वा संयुक्त स्वर अगिले शब्द के आदिम स्वर से मिल जाता है। यथा  $\alpha\lambda\epsilon\gamma\omega$  मिलके  $\alpha\lambda\gamma\omega$  और  $\tau\omicron\epsilon\gamma\alpha\upsilon\tau\iota\omicron\upsilon$  मिलके  $\tau\omicron\upsilon\gamma\alpha\upsilon\tau\iota\omicron\upsilon$  होते हैं।

३२। जब एक शब्द के निर्माण में दो स्वर वा संयुक्त स्वर एक साथ आते हैं तब निम्नलिखित चक्र के अनस्वार मिल जाते हैं। यथा।





जानना चाहिये कि ६ ० मिलके प्राय १ होता है केवल छोड़े रूपों में ६ १ और ६ ६ मिलके प्राय ६ १ केवल कभी २ १ होता है और ० ० मिलके प्राय ० पर छोड़े ही रूपों में ० ७ होता है। ऊपर के चक्र में जहां जहां कुछ नहीं लिखा गया तहां जानना चाहिये कि संधि नहीं होती है।

### इति संधि का वर्णन ।

---

### अथ क्रियाओं का वर्णन ।

---

तृतीय अध्याय धातु पाठ ।

१। क्रियाओं के विषय में तीन बातें समझनी आवश्यक है अर्थात् १<sup>म</sup> धातु २<sup>म</sup> प्रत्यय ३<sup>म</sup> प्रत्ययों के लगाने के पहिले धातु

के कौन से रूप होते हैं। यात तो चर की नेच के सदृश है प्रत्ययों के लगाने के निमित्त यात में जो कुछ लगता है सो चरकी भित्तियों से मिलता है और प्रत्ययों को छप्पर से मिलान कर सकते हैं।

३३। अब मूल्य २ यात अर्थ समेत नीचे लिखते हैं।

'ΑΓ ले आ रा ले जा	'ΑΛΛΑΓ बदलदे
'ΑΓ तोड़	'ΑΛΟ पकड़ा जा
'ΑΓΕΡ एकड़ा कर	'ΑΜΑΡΤ चक
'ΑΕΙΔ गा	'ΑΜΕΙΒ बदल
'ΑΙΡΕ ले	'ΑΝΤ सराकर
'ΑΙΣΘ जानले	'ΑΓ लगा (आप)
'ΑΙΤΕ मांग	'ΑΡ उठा
'ΑΚΟΥ सुन	'ΑΡ जोड़
'ΑΛ रुद	'ΑΡΕ प्रसन्न कर
'ΑΛΕΞ बचा	'ΑΡΚΕ } रक्षा कर वा
'ΑΔΙΦ लेप (लिप)	बढ़त हो

APNE	अग्नी कार कर	ΑΣΚΕ	अभ्यास कर
ΑΡΤΑΓ	छीन	ΑΥΞ	बढ़ा
ΑΡΧ	) पहिला हो वा ) आरम्भ कर		
ΒΑ		जा (गा)	ΒΛΕΠ
ΒΑΛ	डाल	ΒΟΣΚ	चरा
ΒΑΠ	डुबो	ΒΟΥΛ	चाह
ΒΑΣΤΑΓ	उठा	ΒΡΕΧ	भिगा
ΒΑΣΤΑΔ	उठा	ΒΡΟ	खा
ΒΛΑΒ	हानिकर	ΒΛΑΣΤ	उग
ΓΑΜ	विवाह कर	ΓΕΝ	हो (जन)
ΓΕΛΑ	हंस	ΓΝΟ	जान (ज्ञा)
ΓΕΜ	भर जा	ΓΡΑΦ	लिख
ΔΑΚ	दानसे काट (दंश)	ΔΕΜ	घर बना
ΔΑΜ	वशीभूत कर (दम)	ΔΕΡ	चर्म निकाल
ΔΕ	वान्य	ΔΕΧ	ग्रहण कर
ΔΕ	अभाव हो	ΔΙ	उर
ΔΕΙΚ	दिखा (दिश)	ΔΙΔΑΧ	सिखा

ΔΟ दे (दा)	ΔΡΑ कर
ΔΟΚ जान पड़	ΔΥ प्रवेश कर
ΔΡΑ भाग (हुं)	ΔΤΝΑ सक
'Ε डाल	'ΕΛΤ आशा कर
'Ε पहिन	'ΕΛΥΘ जा वा आ
'ΕΑ रहन दे	'ΕΜ पेयमें से फेंकदे (चम)
'ΕΓΕΡ जगा	'ΕΝΕΚ उठा
'ΕΔ बैठ (सद)	'ΕΠ कह (वच)
'ΕΔ खा (अद)	'ΕΠ पीके होले
'ΕΘ रीति की भाँतिसे कर	'ΕΡ कह
'ΕΙΚ समान हो	'ΕΡ पछ
'ΕΙΚ वषीभूत हो	'ΕΡΧ जा वा आ
'ΕΙΡΓ वन्द कर	'ΕΣ हो रह (अस)
'ΕΛ ले	'ΕΤΔ सो
'ΕΛΑ हांक	'ΕΤΡ हुंढके पा
'ΕΛΕΓΧ खण्डन कर	'ΕΥΧ प्रार्थना कर
'ΕΛΚ चसीट	'ΕΧΘ बैर कर
	ZHTE हुंढ
ZΑ जी (जीव)	ZTG जोड़ (युग)
ZE उबल	ZΩ कटि बांध

'HD आनन्द कर (स्वाद) 'HΣ बैर (आस)

'HK आ उक

⊙AN मर	⊙ENNA 'E⊙EA चार
⊙AT आश्चर्य कर	⊙ET दीड़ (याव)
⊙E राव (था)	⊙IG छू
⊙EA ध्यान से देख	⊙PAT तोड़ डाल
	⊙T पत्र कर (द्र)

'I जा (३)  
 'IA चंगा कर  
 'ID देख वाजान (विद)

'IK पञ्च  
 'ILA प्रसन्न कर

KALE उला वा नाम राव	KLAT से
KALTA टोप	KLEI बन्द बार
KAM थक (अम)	KLIN भुका
KAMTA भुका	KAT सन (शु)
KAT जला	KOIMA सला
KEI पडा रह	KOJA काट
KEP मंड	KOPE तम कर
KINE चला	KOMIZ लेआवा प्राप्त कर
KLA तोड़	KPA मिला

KPAΓ	चिन्ना	KTA	पा
KPEMA	लटका	KTEN	वय कर
KPIN	विचार कर	KY	गर्भिणी हो
KPYB	छिपा (गुप)	KYK	भुक

ΛAB	पा (लभ)	ΛEΓ	कर
ΛAΘ	छिप	ΛIΠ	छोड़
ΛAΛE	बोल	ΛOY	ज्ञान कर
ΛAMΠ	चमक	ΛY	गोट आदि खोल
ΛAX	भाग्य से पा		

		MEN	रह (UL)
MAN	उन्मत्त हो (मद)	MEP	भाग पा
MAΘ	सीख	MHNT	बना
MAX	लड़	MIG	मिला (मिश्र)
MEΘY	मतवाला हो	MIME	नकल कर
MEL	विन्नायमान हो	MNA	श्रमण कर (म्ना)
MEM	करने पर हो	MY	आँख मूँद

NE	कान (नह)	NET	लिफ्ट के बरतक
NEM	बोट	NIL	दुर्दै नष्ट हो
NET	पैर		

'OΔ	गन्धित हो	'ONΛ	लाभदायक हो
'OI	समझ	'OΠ	देख
'OI'	उठा	'OPA	देख
'OIG	द्वार आदि खोल	'OPET	आगे की ओर लुट
'OIK	चला जा	'OPTΓ	खोद
'OΛ	नाश हो वा कर	'OPXE	नाच
'OM	किरिया खा	'OΦEΛ	थार

ΠAΓ	दृढ़तासे लगा	ΠIΘ	मना
ΠAΘ	सखडःखभोग	ΠΔA	भरदे (पृ)
ΠAI	मार	ΠΛAΓ	मार
ΠAIG	ठहा कर	ΠΛAΔ	संचेमे हाल
ΠAT	करने को छोड़	ΠΛEK	मरोड़
ΠEMΠ	भेज	ΠΔET	नावपर चल (स)
ΠEΠ	पका (पच)	ΠNEP	वायु बह
ΠEPΘ	भूमि आदि नाश कर	ΠNIΓ	गला चोट
ΠET	गिर (पत)	ΠO	पी (पा)
ΠET	उड़	ΠOIE	कर वा बना
ΠETA	फैला	ΠOP	चल
ΠI	पी (पा)	ΠPA	जला



ΠΡΑ	वेच	ΠΤΥΧ	लपेट
ΠΡΑΓ	काम कर	ΠΥΘ	सूक्ष्म
ΠΡΙΑ	कीन	ΠΩΛΕ	बेच
ΠΤΥ	थक		

‘ΡΑ	छिड़क	‘ΡΙΦ	फेंक (तिप)
‘ΡΑΓ	तोड़	‘ΡΥ	बह
‘ΡΑΦ	सी	‘ΡΥ	छुड़ा
‘ΡΕ	कर	‘ΡΩ	बलवान कर
‘ΡΕΠ	गुरुतर हो		

ΣΑΠ	सड़	ΣΠΕΝΔ	नपावनकर
ΣΒΕ	उना	ΣΠΕΡ	बो
ΣΕΒ	सज	ΣΠΕΥΔ	शीघ्र कर
ΣΕΙ	दिला	ΣΤΑ	खड़ा हो
ΣΕΧ	लिये रह	ΣΤΑΓ	सुन्दर श्लोक गिर
ΣΚΕΔΑ	बिचरा	ΣΤΕΓ	} बाँपके जला } गम्यकर
ΣΚΕΠ	धानसे देव		
ΣΚΗΠ	टेक	ΣΤΕΑ	} भेज वा ठीक } करके राव
ΣΜΑ	पोंक		
ΣΠΑ	खेंच	ΣΤΕΝ	आहमार (स्नन)

ΣΤΕΡΓ	प्रेम कर	ΣΤΡ	चसीट
ΣΤΕΡΕ	हीन कर	ΣΦΑΓ	वध कर
ΣΤΙΓ	गोद	ΣΦΑΛ	गोकर खिला
ΣΤΡΕΦ	चूमा	ΣΦΙΓΓ	गला घोंट
ΣΤΡΟ	बिछा (स्त्र)	ΣΧΙΔ	छेद (छिद)
ΣΤΥΓ	बैर कर	ΣΩ	बचा

ΤΑΓ	क्रमसे राव	ΤΙ	बदला दे
ΤΑΡΑΧ	चबरा	ΤΙΔ	नोच
ΤΑΦ	कबर दे	ΤΛΑ	डख उढा
ΤΕΓΓ	भिगो	ΤΡΑΓ	खा
ΤΕΚ	जन	ΤΡΕΠ	फेर
ΤΕΜ	काट	ΤΡΕΦ	पोस
ΤΕΝ	तान (तन)	ΤΡΕΧ	दौड़
ΤΕΡ	चिस (ट्ट)	ΤΡΩΓ	खा
ΤΕΡΠ	आनन्ददे(त्प)	ΤΥΠ	मार
ΤΗΡΕ	रत्ताकर(त्रा)	ΤΥΧ	अटएसे हो

Υ	बरस	ΥΦΑΝ	बिन
ΦΑ	कर (भा)	ΦΑΓ	खा (भस)

ΦΑΝ	चमक	ΦΡΑΓ	रोक
ΦΕΝ	वधकर (हन)	ΦΡΑΔ	कह
ΦΕΡ	उठा (भ)	ΦΡΙΚ	रोमाञ्चित हो
ΦΘΑ	पहिलेकर वा हो	ΦΥ	हो (भू)
ΦΘΕΓΓ	धाव कर	ΦΥΓ	भाग
ΦΘΕΡ	विगड़	ΦΥΛΑΚ	पहरा दे
ΦΘΙ	घट वा क्षय हो	ΦΥΡ	सान
ΦΛΕΓ	जल		
ΧΑΝ	जभा	ΧΡΙ	तेल मल
ΧΑΡ	आनन्द कर (दृष)	ΧΡΑ	काम में ले आ
ΧΑΡΑΚ	} पत्थर आदि में खोद	ΧΡΕ	आवश्यक हो
ΧΡΑ		ईश्वरवाणी कह	ΧΡΩ
		ΧΥ	आडेल
ΨΑ	मल	ΨΕΓ	निन्दा कर
ΨΑΛ	वीणा आदि वजा	ΨΕΥΔ	भूठ कह
ΨΑΥ	छू	ΨΥΧ	वण्डा कर
ΩΘ	ढकेल		



३९। कर्तृत्व तीन प्रकार का है अर्थात् सकर्तृक परकर्तृक आत्मकर्तृक । सकर्तृक क्रिया वह है जो कर्ता के अधीन है यथा मैं बनाऊंगा सिंह आताहै । परकर्तृक क्रिया वह है जो कर्ता के अधीन नहीं हैं चाहे कर्ता उस चाहे प्रगट हो यथा रो-री खाई गई पिता से पुत्र मारा जावे । आत्मकर्तृक क्रिया वह है जिसका कर्ता और कर्म दोनों एकही है यथा वे आप को भुलानेहैं अपने लिये मंगवा लो । सकर्तृक क्रिया भी दो प्रकार की है अर्थात् सकर्मक और अकर्मक ।

४०। भाव ब्रह्म प्रकार का है जैसा चार्ता इच्छा शक्ति आज्ञा प्रार्थना अभिप्राय पुनः पुनः करण हेतुत्व नियम संज्ञा विशेषण इत्यादि ।

४१। काल मुख्य तो तीन हैं अर्थात् भूत भ-

विषय वर्तमान परन्तु इन तीनों के तीन २ प्रकार हैं क्योंकि प्रत्येक काल में तीनों काल का सम्बन्ध और अपेक्षा हो सकती है। और वर्तमान दो और प्रकार का है अर्थात् व्यवहार-वर्तमान और विशेष-वर्तमान। सो सब मिलाके बारह प्रकार के काल हैं। यथा ।

भूतकाभूत	वर्तिकाभूत	भवि काभूत																											
<table border="0"> <tr> <td>व्यव. वर्त</td> <td>व्यव. वर्त</td> <td>व्यव. वर्त</td> </tr> <tr> <td>वर्त. का</td> <td>वर्त. का</td> <td>वर्त. का</td> </tr> <tr> <td>वि. वर्त.</td> <td>वि. वर्त.</td> <td>वि. वर्त.</td> </tr> </table>	व्यव. वर्त	व्यव. वर्त	व्यव. वर्त	वर्त. का	वर्त. का	वर्त. का	वि. वर्त.	वि. वर्त.	वि. वर्त.	<table border="0"> <tr> <td>व्यव. वर्त</td> <td>व्यव. वर्त</td> <td>व्यव. वर्त</td> </tr> <tr> <td>वर्त. का</td> <td>वर्त. का</td> <td>वर्त. का</td> </tr> <tr> <td>वि. वर्त.</td> <td>वि. वर्त.</td> <td>वि. वर्त.</td> </tr> </table>	व्यव. वर्त	व्यव. वर्त	व्यव. वर्त	वर्त. का	वर्त. का	वर्त. का	वि. वर्त.	वि. वर्त.	वि. वर्त.	<table border="0"> <tr> <td>व्यव. वर्त</td> <td>व्यव. वर्त</td> <td>व्यव. वर्त</td> </tr> <tr> <td>वर्त. का</td> <td>वर्त. का</td> <td>वर्त. का</td> </tr> <tr> <td>वि. वर्त.</td> <td>वि. वर्त.</td> <td>वि. वर्त.</td> </tr> </table>	व्यव. वर्त	व्यव. वर्त	व्यव. वर्त	वर्त. का	वर्त. का	वर्त. का	वि. वर्त.	वि. वर्त.	वि. वर्त.
व्यव. वर्त	व्यव. वर्त	व्यव. वर्त																											
वर्त. का	वर्त. का	वर्त. का																											
वि. वर्त.	वि. वर्त.	वि. वर्त.																											
व्यव. वर्त	व्यव. वर्त	व्यव. वर्त																											
वर्त. का	वर्त. का	वर्त. का																											
वि. वर्त.	वि. वर्त.	वि. वर्त.																											
व्यव. वर्त	व्यव. वर्त	व्यव. वर्त																											
वर्त. का	वर्त. का	वर्त. का																											
वि. वर्त.	वि. वर्त.	वि. वर्त.																											
भूतका भविष्यत्	वर्त. का भविष्यत्	भवि. का भविष्यत्																											

९। पुरुष तीन हैं अर्थात् प्रथम मध्यम उत्तम ।

१०। वचन तीन हैं अर्थात् एकवचन द्विवचन बहुवचन ।

४१। लिङ्ग तीन है अर्थात् पुलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग  
 क्रीव ।

४२। अब कहना चाहिये कि इन मानसिक  
 भावनाओं में किस २ का यवनभाषा में ए  
 थक २ रूप है ।

लिङ्ग क्रिया के रूप से प्रगट नहीं होता है ।

वचन प्राय रूप से प्रगट होता है सदा  
 नहीं । इसका भेद पीछे जान पड़ेगा ।

पुरुष सर्वदा रूपसे प्रगट होता है ।

४३। क्रिया के जिन रूपों में केवल वचन औ  
 २ पुरुष का अन्तर है और किसी प्रकार का  
 नहीं उन रूपों का समूह लकार कहलाता  
 है । यवन भाषा में सत्तरह लकार हैं अ-  
 र्थात् लट् लङ् १ लृट् २ लृट् १ लृट्  
 २ लृट् १ लृच् २ लृच् १ लृच् २ लृच्  
 १ लिट् २ लिट् ३ लिट् १ लोट् २ लोट् ३  
 लोट् लिट् । इन लकारों का अर्थ काल से

कुछ ३ सम्बन्ध रखता है सम्पूर्ण नहीं ।

४४। लट्ट का अर्थ वर्तमान के वर्तमान का है। जैसा वह जाता है।

लड्ड का अर्थ भूत के वर्तमान का है। जैसा वह जाता था ।

तीनों लिट्ट का अर्थ वर्तमान के भूत का है। जैसा वह गया है ।

दोनों लट्ट और दोनों लट्ट का अर्थ वर्तमान के भविष्यत् का है । जैसा वह जावेगा ।

तीनों लोड्ड का अर्थ भूत के भूत का है। जैसा वह गया था ।

लिड्ड का अर्थ भविष्यत् के भूत का है। जैसा वह जा उकेगा ।

दोनों लड्ड और दोनों लट्ट का अर्थ किसी विशेष काल का नहीं है चरन् यही बताते हैं कि क्रिया का व्यापार किसी विशेष समय



में हुआ वा होनेवाला है। तथापि वार्ता और  
२ विशेषण भावों में उन का अर्थ सदा भू-  
त काल का है।

४५। १ और २ लृच् का अर्थ प्रायः सदा पर-  
कर्त्तक है और १ और २ लृट् सकर्त्तक वा  
आत्मकर्त्तक है।

३ लिट् और ३ लोट् का अर्थ प्रायः परक-  
र्त्तक वा आत्मकर्त्तक है और १ और २ लि-  
ट् और १ और २ लोट् सकर्त्तक हैं।

१ और २ लृच् का अर्थ प्रायः परकर्त्तक  
है और १ और २ लृट् सकर्त्तक वा आत्म-  
कर्त्तक है।

लिट् का अर्थ परकर्त्तक वा आत्मकर्त्त-  
क है।

लृट् और लृट् परकर्त्तक सकर्त्तक वा आ-  
त्मकर्त्तक हैं।

४६। यवनभाषा में भावों के केवल छः ही

एषक रूप हैं अर्थात् वार्ता संज्ञा विशेष-  
ण लोट् लिङ् लोट् । पहिले तीनों का अ-  
र्थ उनके नामों ही से प्रगट है ।

लोट् का अर्थ आज्ञा वा प्रार्थना है ।

लोट् के वङ्गन अर्थ हैं परन्तु वह प्राय  
लट् लिट् लृट् लृच् के वार्ता भाव के  
पीछे वाक्य के अर्थात् अङ्ग में आता है।  
यथा मैं आया हूँ कि आप से भेंट करूँ  
यहां करूँ यवनभाषा में लोट् भावमें  
होगा ।

लिङ् के भी वङ्गन अर्थ हैं विशेष कर  
के आपीर्ष्याद का परन्तु वह प्राय लङ्  
लृङ् लृच् लोट् के वार्ता भाव के पीछे  
वाक्य के अर्थात् अङ्गमें आता है । यथा  
मैं गया था कि आपसे भेंट करूँ यहां  
करूँ यवनभाषा में लिङ् भाव में होगा ।

४७। वार्त्ता भाव के सब लकार मिलते हैं।  
संज्ञा विशेषण और लिङ्. भावों के ल  
ङ्. और लोट्. को छोट्. के और सब  
लकार मिलते हैं।

लृट् और लोट् में दोनों लृट् और दो  
नों लृच्. और लिङ्. नहीं मिलते हैं।

४८। प्रत्यय दो प्रकार के हैं अर्थात् पर-  
स्मैपद और आत्मनेपद के प्रत्यय।

लृट् लङ्. १ लृङ्. २ लृङ्. १ लृट् २.

लृट् के प्रत्यय दोनोंपद के होते हैं।

१ लृच्. २ लृच्. १ लिट् २ लिट् १ लो

ङ्. २ लोट्. के प्रत्यय केवल परस्मैप-

द के होते हैं।

१ लृच्. २ लृच्. ३ लिट् ३ लोट्. लिङ्.

के प्रत्यय केवल आत्मनेपद के

होते हैं ।

४५। लृच् २ लृच् को छोड़के और सब लकारों में परस्मैपद का अर्थ सकर्त्तिक है और आत्मनेपद का अर्थ परकर्त्तिक वा आत्मकर्त्तिक है ।

### पञ्चम अध्याय—भित्तियों का निर्माण।

५०। हम कह आये हैं कि क्रिया का धातु चरकी नेव के समान है और प्रत्यय उस के छप्पर के समान है और इन प्रत्ययों के लगाने से पहिले जो ऊक धातु में लगता है सो उस की भित्तियों के समान है ।

प्रत्यय जो हैं सो पुरुष वचन भाव पद के अनुसार एक २ हैं और प्रत्ययों के लगने से पहिले जो धातु के रूप होते हैं सो लकारही के अनुसार एक २ हैं ।

सो अब हम लकारों के रूप लिखते हैं ।

पर

१ लट्

घोड़ीही क्रियाओं में मिलताहै । वह धातु से ऊँछ भी भिन्न नहीं है ।

पर ।

१ लृट्

का मध्यस्वर वज्रत क्रियाओं में धातु के मध्यस्वर से भिन्न है । यथा ΤΡΕΛ से ΤΡΑΠ ΣΤΕΛ से ΟΤΑΛ ΚΤΕΝ से ΧΤΑΛΥ । और इससे अधिक वार्ता

भाव में उसके आदि में आगम होता है।

अथ आगम का वर्णन ।

५३। आगम लङ् १ लुङ् २ लृङ् १ लृच्  
२ लृच् १ लोङ् २ लोङ् ३ लोङ् के वा-  
र्त्ता भावमें होता है ।

५४। मूल आगम ङ है । उस के लगा-  
ने में ये नियम स्मरणा रावना चाहि-  
ये ।

१। जब धातु के आदि में  $\rho$  है तब  
ङ के लगाने से वह दुहराया जाता है।  
यथा 'PA.ङ् से  $\acute{e}\rho\rho\alpha\varphi$  ।

२। जब धातु के आदि में स्वर वा संयु-  
क्त स्वर है तब संधि के ठीक नियम  
से नहीं बरन् निम्नलिखित प्रकारों से

इस स्वर का संयुक्त स्वर से ε मिलता है।

यथा ।

ε और α मिलके η होते हैं। AMAPTI  
से ημρπτ ।

ε और ε मिलके प्रायः η होते हैं। EΛEΓX  
से ηλεγγ ।

परन्तु कितनी क्रियाओं में ε । 'EΓ से  
εंग ।

ε और η मिलके η होते हैं। HK से ηκ

ε और ι मिलके दीर्घ ι होते हैं। IK  
से ικ ।

ε और ο मिलके ω होते हैं। ολ से ωλ

ε और υ मिलके दीर्घ υ होते हैं। γ  
से υ ।

ε और ω मिलके ω होते हैं। Ωο से  
ωο ।

ε और αυ मिलके ηυ होतेहैं। ΑΥΞ  
से ηυंξ ।

ε और αλ मिलके ηλ होतेहैं। ΑΙΣΘ से  
ηλσθ ।

ε और ελ मिलके ελ होतेहैं। ΕΙΚ से ελχ

ε और ολ मिलके ολ होतेहैं। ΟΙΚ से ολχ ।

ε और ευ मिलके ευ वां ηυ होतेहैं। ΕΥΡ

से ευρ । ΕΥΧ से ηυχ ।

ε और ου मिलके ου होतेहैं। ΟΥΤΑΔ

से ουταδ ।

३। इन स्वरादिक धातुओं का आगम ε से

होता है । ΑΓ (तोड़) ΑΛΟ 'ΕΙΚ

'ΕΛΠ 'ΟΡΑ 'ΩΘ। यथा εαγ

εαλο ।

४। ΒΟΥΛ ΔΥΝΑ ΜΕΛΛ का

आगम ε से हो सकता है परन्तु प्राय

η से होता है । यथा ηβουλ ηδυνα ।



५५।  $\Lambda\Gamma$  (लेजा) और  $\Lambda P$  (जोड़) का २ लड़  $\acute{\alpha}\gamma\alpha\gamma$   $\acute{\alpha}\rho\alpha\rho$  हैं।

५६।

२ लड़

में धातु के अन्त में  $\sigma$  लगता है। यथा  
 $\tau\tau\pi$  से  $\tau\upsilon\psi$   $\Delta E\Gamma$  से  $\lambda\epsilon\acute{\epsilon}\tau\iota$   
 से  $\tau\iota\sigma$   $\pi\epsilon\rho\circ$  से  $\pi\epsilon\rho\sigma$   
 $\phi\rho\alpha\Delta$  से  $\phi\rho\alpha\sigma$ ।

१। जब धातु के अन्तमें इस्व स्वर है तब वह प्राय दीर्घ होता है अर्थात्  $\epsilon\eta$  होता है। यथा  $\pi\omicron\iota\epsilon$  से  $\pi\omicron\lambda\eta\sigma$ ।  
 $\alpha$  प्राय  $\eta$  होता है  $\omicron\eta\alpha$  से  $\acute{o}\nu\eta\sigma$ ।  
 पर कभी  $\alpha$  रहता है।  $\eta\epsilon\alpha$  से  $\acute{\epsilon}\alpha\sigma$ ।  
 $\circ$   $\omega$  होता है।  $\Gamma\eta\omicron$  से  $\gamma\upsilon\omega\sigma$ ।  
 २। इन धातुओं के २ लड़ में मध्यस्वर दीर्घ होता है।  $\Lambda\alpha\chi$  से  $\lambda\eta\acute{\epsilon}$   $\Lambda\alpha\beta$   
 से  $\lambda\eta\psi$   $\Lambda\alpha\circ$  से  $\lambda\eta\sigma$   $\pi\Lambda\Gamma$

से गण्डे 'PT(बह) से ρευσ 'PAG  
 से ρण्डे TTX से टेवडे इTG से  
 फेवडे πIΘ से पेवIσ ΔI से  
 ठेवIσ । 'OΦEΛ XAP ।

३। इनधातुओं का र लृट् σ के लगाने के  
 पहिले अपने अन्त में ε लगाता है सो ग  
 बन जाता है ।

AISO 'ALEE 'AMARTATE  
 BLAST BOΣK BOTΛ 'EM  
 'ETA 'ETP ΘEΛ MAΘ MAX  
 MEL MELL 'OD 'OIX 'OI  
 (समभ) 'OΦEΛ XAP 'ΩΘ 'POΔ  
 का ठे लृहोता है ।

४। ΔAM θαμα होके और 'EAK  
 ελXU होके σ लगाने है ।

५। कितनी अनेकाङ्गान्वित ठे अन्त क्रियाओं

का ० निकल भी सकता है। यथा KOMIA  
से xomι βιβια̅̅ से βιβια।

५७

२ लुड्

में प्राय वैसाही ० लगता है और ऊपर  
के पद। १। २। ३। ४ में जो ऊँछ २ लु  
ट के विषय में लिखा है सो २ लुड् में  
भी घटना है। यथा ΛΕΓ से λεई  
ΠΟΙΕ से ποιησ 'PT से  
ρ̅ευσ ०φελ से ०φειलगσ।  
१। परन्तु जिनधातुओं के अन्त में λ μ ν ρ  
हैं उन में ० नहीं लगता है वरन् यातु  
का मध्यस्वर दीर्घ होता है। यथा MEN  
से μειν ΣΤΕΛ से στειλ।  
२। 'E (डाल) ०E ΔO में ० के  
स्थाने x लगता है। यथा ηx εθηx  
εθωx वार्ता भाव में होते हैं।

५८।

१ लृच्

में धातु का मध्यस्वर वैसेही बदलता है  
जैसा १ लृङ् में और अन्त में ऊँच नहीं  
लगता है। यथा  $\tau\rho\alpha\pi$

५९।

१ लृच्

में भी धातु का मध्यस्वर वैसेही बदल-  
ता है और अन्तमें  $\eta\sigma$  लगता है। यथा  
 $\tau\rho\alpha\pi\eta\sigma$ ।

६०।

२ लृच्

में क्रिया के अन्त में  $\theta$  लगता है। य-  
था  $\Lambda\epsilon\Gamma$  से  $\lambda\epsilon\chi\theta$ ।

१। ५८। १ में जो ऊँच २ लृङ् के विषय  
में लिखा है वो २ लृच् में भी चटता है।  
यथा  $\pi\omicron\iota\epsilon$  से  $\pi\omicron\iota\eta\theta$ ।  $\pi\rho\alpha$   
(वेच) से  $\pi\rho\alpha\theta$ ।

२। कितनी स्वरान्त क्रियाओं में  $\sigma$  बीच

में लगता है। यथा  $\tau\epsilon\lambda\epsilon$  से  $\tau\epsilon\lambda\epsilon\sigma\theta$   
 $\lambda\alpha\kappa\omicron\tau$  से  $\acute{\alpha}\chi\omicron\upsilon\sigma\theta$ ।

३। जिन धातुओं के अन्त में  $\acute{\epsilon}\lambda$   $\epsilon\rho$   $\epsilon\mu$   
 $\acute{\epsilon}\nu$  हैं वे २ लृच् में  $\epsilon$  को  $\alpha$  बदल देते हैं।  
 यथा  $\Sigma\tau\epsilon\lambda$  से  $\sigma\tau\alpha\lambda\theta$   $\Sigma\pi\epsilon\rho$  से  
 $\sigma\pi\alpha\rho\theta$ ।

४।  $\kappa\rho\iota\nu$   $\kappa\lambda\iota\nu$   $\tau\epsilon\nu$   $\kappa\tau\epsilon\nu$   
 $\pi\lambda\tau\nu$  का  $\upsilon$  २ लृच् में छूट जाता है।  
 यथा  $\chi\rho\iota\theta$   $\chi\lambda\iota\theta$   $\tau\alpha\theta$   $\chi\tau\alpha\theta$   
 $\pi\lambda\upsilon$ ।

५। इन धातुओं का २ लृच्  $\epsilon$  लगाके  $\theta$  ल  
 गते हैं।  $\beta\omicron\tau\lambda$   $\gamma\alpha\mu$   $\mu\epsilon\lambda$   $\nu\epsilon\mu$   
 $\omicron\iota$  (समभ्) यथा  $\beta\omicron\upsilon\lambda\eta\theta$   $\gamma\alpha\mu\eta\theta$   
 $\omicron\iota\eta\theta$ ।

६।

२ लृच्

में क्रिया ठीक २ लृच् के अनुसार बदल  
 ता है और अन्त में  $\theta\eta\sigma$  लगता है यथा

$\rho\omega\iota\eta\theta\eta\sigma$   $\pi\rho\alpha\theta\eta\sigma$   $\tau\epsilon\lambda\epsilon\sigma\theta\eta\sigma$   
 $\sigma\pi\alpha\rho\theta\eta\sigma$   $\chi\rho\iota\theta\eta\sigma$   $\nu\epsilon\mu\eta\theta\eta\sigma$ ।

६२।

र लिट्

के अन्त में  $\chi$  वा महाप्राण लगता है  
 और आदि में होता है ।

अथ अभ्यास का वर्णन ।

६३। अभ्यास तीनों लिट् और तीनों लोट् और  
 र लिट्ट के सब भावों में होता है ।

६४। उसका अर्थ यह है कि क्रिया का प्र  
 थम अक्षर उहराया जाता है और जब  
 प्रथम अक्षर अंजन है तब दोनों के बीच  
 में  $\epsilon$  आ जाता है ।

६५। जब क्रिया के आदि में  $\rho$  है तब  $\epsilon$   
 दोनों  $\rho$  के पहिले ही आता है। यथा  
 $\rho\pi\iota\kappa$  से  $\epsilon\rho\rho\iota\kappa$  ।

२। जब क्रिया के आदि में संयुक्त व्यंजन है तब यह इहराया नहीं जाता है केवल  $\epsilon$  उस के पहिले आता है । यथा  $\Psi\Lambda\Lambda$  से  $\epsilon\Psi\alpha\lambda\lambda$  ।

३। जब क्रिया के आदि में दो व्यंजन हैं तब प्रायः वैसाही होता है सदा नहीं यथा  $\Sigma\pi\epsilon\rho$  से  $\epsilon\Sigma\pi\alpha\rho$  । किन्तु  $\Gamma\rho\alpha\kappa$  से  $\gamma\epsilon\gamma\rho\alpha\kappa$  ।

४।  $\Lambda\Lambda\beta$   $\Lambda\lambda\chi$   $\mu\epsilon\rho$   $\psi\epsilon$  में प्रथम अक्षर नहीं इहराया जाता है  $\lambda\alpha\lambda\epsilon\lambda$  आदि में लगता है । यथा  $\Lambda\Lambda\beta$  से  $\epsilon\lambda\lambda\beta$  ।

५। जब क्रिया के आदि में स्वर वा संयुक्त स्वर है तब अभ्यास प्रायः ठीक ऊपर लिखित आगम के समान होता है ।

६। इन स्वरादिक धातुओं का अभ्यास पहिले स्वर और पहिले व्यंजन के इह-

रने से होता है तब दूसरा स्वर दीर्घ होता है ।

ΕΓΕΡ से ΕΥΗΥΕΡΧ ΕΛΑ से  
 ΕΛΗΛΑΧ ΕΛΤΘ से ΕΛΗΛΥΘ  
 'ΟΛ से ΟΛΩΛ ΕΝΕΚ से ΕΥΗΝΟΧ  
 'ΟΜ से ΟΜΩΜΟΧ 'ΟΔ से ΟΔΩΔ  
 'ΑΛΙΦ से ΑΛΗΛΙΦ 'ΟΡΥΓ से ΟΡΩΡΥΥ  
 ΘΙΣΤΑ से ΕΪΣΤΑ होता है ।

५। जब क्रिया के अन्तमें दन्त्य अथवा  
 तालव्य व्यंजन अथवा स्वर वा संयुक्त  
 स्वर है तब X र लिट में लगता है औ-  
 र जब उसके अन्तमें कण्ठस्थ अथवा  
 ओष्ठस्थ व्यंजन है तब महाप्राण लगता  
 है अर्थात् अन्य व्यंजन महाप्राणान्वित  
 होता है । यथा ΨΑΛ से ΕΨΑΛΧ  
 ΠΝΕΤ से ΠΕΠΝΕΥΧ ΤΤΠ से  
 ΤΕΤΥΦ ΔΕΓ से ΛΕΛΕΧ ।



१। x से पहिले  $\theta$   $\theta$  छूट जाते हैं। यथा  
 $\phi\rho\alpha\Delta$  से  $\pi\epsilon\phi\rho\alpha\chi$ ।

२। जो कुछ पद 11 में २ लट्ट के विषय में  
 लिखा है सो १ लिट्ट में भी चटता है। यथा  
 $\Gamma\chi\theta$  से  $\epsilon\gamma\chi\omega\chi$ ।

३। इन पाठश्रों के १ लिट्ट में मध्यस्वर दीर्घ  
 होता है।  $\Lambda\chi\theta$  से  $\epsilon\iota\lambda\eta\chi$   $\Lambda\alpha\theta$  से  
 $\lambda\epsilon\lambda\eta\theta$   $\Lambda\alpha\beta$  से  $\epsilon\iota\lambda\eta\phi$   $\tau\tau\chi$  से  
 $\tau\epsilon\tau\epsilon\upsilon\chi$   $\pi\iota\theta$  से  $\pi\epsilon\pi\epsilon\iota\chi$   $\Delta\iota$   
 से  $\theta\epsilon\theta\omicron\iota\chi$ ।

४। इन पाठश्रों का १ लिट्ट  $\epsilon$  लगाके x  
 लगाते हैं।  $\chi\alpha\mu\alpha\rho\tau\iota$  से  $\chi\epsilon\mu\alpha\rho\tau\eta\chi$   
 $\mu\alpha\theta$  से  $\mu\epsilon\mu\alpha\theta\eta\chi$   $MEN$  से  
 $\mu\epsilon\mu\epsilon\nu\eta\chi$   $NEM$  से  $\nu\epsilon\nu\epsilon\mu\eta\chi$   
 $\chi\alpha\rho$  से  $\chi\epsilon\chi\alpha\rho\eta\chi$   $\theta\omicron\lambda$  से  $\theta\omicron\lambda\omega\lambda\epsilon\chi$   
 ५। जो कुछ पद 13 में २ लट्ट के विषय

में लिखा है सो र लिट में भी चटता है। यथा  
 ἄπαιρ से ἔσπαρξ।

६। जो कुछ ६०।४ में र लृच् के विषयमें  
 लिखा है सो र लिट में भी चटता है। यथा  
 ἄπαιρ से ἔσπαρξ।

६६। रलिट .

के अन्तमें कुछ नहीं लगता है परन्तु म  
 थ्यस्वर प्राय किसी न, किसी प्रकार से बद  
 लता है अर्थात् ।

१। जब मथ्यस्वर ε है तब ο होता है। यथा  
 ἄπαιρ से ἔσπαρξ ΓΕΝ से  
 γέγυγ।

२। जब ι है तब οι होता है। यथा  
 ἄπαιρ से ἔσπαρξ।

३। जब और कोई ह्रस्व स्वर है तब प्राय उदात्त  
 जाता है। यथा ἄπαιρ से ἔσπαρξ  
 οΔ से ὀδωδ।

४। ΛΑΧ से λελογχ ΠΑΘ से  
 ΠΕΠΟΝΘ ΠΓ से ἐρρ'ωγ।

६७। ३लिड

के अन्तमें प्राय कुछ नहीं लगता है प-  
 रन्त ।

१। ५६।२ में जो कुछ लिखा है सो ३लि-  
 ड में भी चटता है यथा ΠΕΠΟΝΘ।

२। ६०।२ में जो कुछ लिखा है सो ३ लिड  
 में भी चटता है यथा ΧΡΙ से χερρις  
 ΓΝΟ से ἐγνωσ ।

३। ६०।३ में जो कुछ लिखा है सो ३ लिड  
 में भी चटता है । यथा ΣΤΕΛ से ἐστ'αλ

४। ६०।४ में जो कुछ लिखा है सो ३लिड  
 में भी चटता है । यथा ΤΕΝ से τετα ।

५। ΤΡΕΠ ΤΡΕϙ ΣΤΡΕϙ का ε  
 α होता है । यथा ἐστ'ραφ ।

६। ΒΟΥΛ ΜΑΧ'ΟΙΧ ΧΑΡ के

३ लिट् में ε लगता है। यथा μεμᾶχη।  
 ६८। १ २ ३ लोट्-

यथाक्रम १ २ ३ लिट् के ठीक समान हैं  
 केवल उनके आदि में आगम लगता है।

यथा ἔπεπυευχ ἔλελεχ  
 ἔπεποιηχ ἔπεφευχ ἔλελοιπ  
 ἔχεχρισ ἔμεμᾶχη।

१। जब लिट् का पहिला अक्षर स्वरवा सं-  
 युक्त स्वर है तब लोट्- उससे कुछ भी भि-  
 न्न नहीं है यथा ἔσταλ ἔλεηφ  
 ἔλεηλυθ।

६९। लिट्

३ लिट् के ठीक समान है केवल उस  
 के अन्त में σ लगता है। यथा πεποισσ  
 ἔστραψ।

७०। लट्

थोड़ी क्रियाओं में धातु के समान है पर-

४। ΛΑΧ से λελογχ ΠΑΘ से  
 ΠΕΠΟΝΘ ΠΓ से ἐρρ'ωγ।

६७।

इलिड

के अन्तमें प्राय कुछ नहीं लगता है प  
 रन्त ।

१। ५६।१ में जो कुछ लिखा है सो इलि  
 ड में भी चटता है यथा ΠΕΠΟΛΗ।

१। ६०।२ में जो कुछ लिखा है सो इ लिड  
 में भी चटता है यथा ΧΡΙ से χερρ'ισ.  
 ΓΝΟ से ἐγν'ωσ ।

३। ६०।३ में जो कुछ लिखा है सो इ लिड  
 में भी चटता है । यथा ΣΤΕΛ से ἐστ'αλ।

४। ६०।४ में जो कुछ लिखा है सो इलिड  
 में भी चटता है । यथा ΤΕΝ से τετα ।

५। ΤΡΕΠ ΤΡΕϙ ΣΤΡΕϙ का ε  
 α होता है । यथा ἐστ'ραφ ।

६। ΒΟΥΛ ΜΑΧ'ΟΙΧ ΧΑΡ के

३ लिट् में ε लगता है। यथा μεμᾶχη।

६८। १ २ ३ लोट्-

यथाक्रम १ २ ३ लिट् के ठीक समान हैं केवल उनके आदि में आगम लगता है।

यथा ἔπεπνευκ ἔλελεχ

ἔπεποιηκ ἔπεφευχ ἔλελοιπ

ἔχεχρισ ἔμεμᾶχη।

१। जब लिट् का पहिला अक्षर स्वरवा संयुक्त स्वर है तब लोट्-उससे कुछ भी भिन्न नहीं है यथा ἔστραλ ἔλετηφ

ἔλετηλυθ।

६९। लिट्

लिट्

३लिट् के ठीक समान है केवल उस

के अन्तमें σ लगता है। यथा πεποιησ

ἔστραψ।

७०। लट्

लट्

थोड़ी क्रियाओं में पाठ के समान है पाठ

न प्राय उसमें धात किसी व किसी प्र-  
कारसे बड़ाया जाता है चाहे मध्यमें कुछ  
मिला देने से चाहे अन्तमें कुछ लगा देने  
से चाहे दोनों प्रकार से । बहुत छोड़ी क्रि-  
याओं में लट् धातु से छोटा भी है ।

१। इन धातुओं का लट् अन्तमें १० लगा-  
ता है । 'ΑΓ (तोड़-) ΔΕΙΚ 'ΕΙΡΓ

ΖΥΓ ΜΙΓ 'ΟΙΓ 'ΟΜ ΠΑΓ ΡΑΓ  
ΠΑΓ ΠΗΥΥ 'ΕΑΓ ρήγυυ होते हैं।

२। 'ΟΛ λ को डूहानके 'Ολλυ होता है।

३। इन धातुओं का लट् अन्तमें ११ लगा-  
गता है ।

'Ε (पहिन) ΖΩ ΚΡΑ ΚΟΡΕ ΚΡΕΜΑ

ΠΕΤΑ ΨΩ ΣΒΕ ΣΚΕΔΑ

ΣΤΡΟ ΧΡΩΙ

ΚΡΑ ΧΕΡΟΥΥΥ और ΣΤΡΟ

ΟΤΟΡΕΥΥΥ वा 'ΟΤρωυυυ होते हैं।

४। इन धातुओं का लट् अन्तमें  $\alpha\upsilon$  लगा  
ता है ।  $\text{ἄρισθ ἄμαρτ βλάστ ἕκθ}$   
 $\text{ἄτθ θιγ λαχ λιπ λιβ λαθ}$   
 $\text{μαθ πτθ ττχ}$ ।

$\theta\iota\gamma$  से लेके  $\tau\tau\chi$  तक इन सभी के  
मध्यस्वरके पीछे सावनासिक व्यंजन लग  
ता है । यथा  $\theta\iota\gamma\gamma\alpha\upsilon \lambda\alpha\mu\beta\alpha\upsilon \lambda\alpha\upsilon$   
 $\theta\alpha\upsilon \tau\tau\gamma\chi\alpha\upsilon$ ।

५। इन धातुओं का लट् अन्त में  $\iota\upsilon$  लगा  
ता है ।

$\beta\alpha \rho\alpha$  । यथा  $\beta\alpha\iota\upsilon \rho\alpha\iota\upsilon$ ।

६। इन धातुओं का लट् अन्त में  $\sigma\chi$  ल  
गाता है ।

$\text{ἄρε βρο γνο διδαχ δρα}$  (भाग)।

$\text{ῶαν ἴλα μεθτ μνα πρα}$  (वेच)।

$\text{ῶαν}$   $\theta\upsilon\alpha$  होता है और वह और  $\beta\rho\theta$

$\gamma\eta\theta \mu\eta\alpha$  के स्वर दीर्घ होते हैं । यथा



φυλασσ वा φυλαττ πττχ

से πτυσσ वा πτυττ φρατ

से φρασσ वा φραττ।

१६। ΘΕΤ ΝΕΤ ΠΛΕΤ ΠΝΕΤ

‘ΡΤ (बह) ΧΤ लट में अपना २ स्वर

वा संयुक्त स्वर ε बनाते हैं अर्थात् θε

νε πλε πνε ρε χε होते हैं।

१७। ΓΑΜ ΔΟΚ ΕΜ ΩΘ ΣΙΤΤ

का लट अन्तमें ε लगाता है।

१८। ΔΑΜ का लट अन्तमें σ लगाता

है।

१९। ΕΛΚ का लट अन्तमें υ लगा

ता है।

२०। इनधातुओं का लट आदि में अभ्या-

स पाता है और उनके साथ ल पड़ता है।

ΓΕΝ से γιγν ΓΝΟ से γιγνώσκ

ΔΟ से δίδω ΔΡΑ(भाग) से διόρασκ

'E (डाल) से ईE OE से τΙΘE ΓONA से  
 ὀνιϑα πAA से πμπλα πPA (जला)  
 से πμπρα πPA (वेव) से πμπρασ  
 πET (गिर) से ππT TEK से τixT  
 MNA से μμvησx ΣTA से ईσx।  
 जब ΓEN और ΓNO का मूल γ निकल  
 भी सकता है। यथा γiv γivωσx।  
 २१। वृद्धत v-अन्त और p-अन्त क्रियाओं  
 का लट् मध्यस्वर को संयुक्त स्वर कर देते  
 हैं। यथा KTEN से xTEiv MAN से  
 μxiv। सब वनाई हुई αv-अन्त क्रियाओं  
 का लट् वैसा ही होता है।  
 २२। प्रायः λ-अन्त क्रियाओं का लट् λ को  
 डहराता है। यथा ΣTEλ से σTEλλ।  
 किन्तु ὀφEλ ὀφEιλ होता है।  
 २३। 'EΔ का लट् ईσθl है।  
 २४। πAΘ का लट् πxσ है।

२५। NE का लङ् ११० है।

३१।

लङ्

वीक लङ् के समान होता है। यथा

ḍāḥy ḍāḥya।

इति धितियों का निर्माण।

षष्ठः अध्यायः — कृष्ण का लगन।

३२। पहिले हम प्रत्ययों को लिखेंगे से-  
से नहीं जैसे एवभाष्य में मिलते हैं  
बन् ऐसे जैसे प्रथम काल में थे जहां  
तब अनुमान से जाना जाता है।

रूप	पुरुष	परस्मै पद			आत्मने पद		
		एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम रूप	प्र.	११	१०१	१११	१०१	१०१	१०१
	म.	०	१०१	३१	०	१०१	०१०
	उ.	११	१३१	१३१	१११	१३१	१३१
द्वितीय रूप	प्र.	१	१११	११	०१	१११	१११
	म.	०	१०१	३१	०	१०१	०१०
	उ.	१	१३१	१३१	११	१३१	१३१
तृतीय रूप	प्र.	१०१	१०१	१०१	१०१	१०१	१०१
	म.	०	१०१	३१	०	१०१	०१०
	उ.	१	१३१	१३१	१	१३१	१३१
संज्ञा	प्र.	१०१	१०१	३१	१०१	१०१	१०१
	म.	०	१०१	३१	०	१०१	०१०
विशेषण	प्र.	१	१३१	१३१	१	१३१	१३१
	म.	०	१०१	३१	०	१०१	०१०

७३। इस चक्र के विषय में पाठक लोग ती-  
न बातें देखेंगे ।

१। लोट में उत्तम पुरुष नहीं है ।

२। परस्मैपद में उत्तम पुरुष का द्विवचन  
नहीं है ।

३। संज्ञा भाव और विशेषण भावमें पुरुष  
नहीं और संज्ञाभावमें वचन भी नहीं होता  
है । क्रिया के विशेषण में तो और २

विशेषणों की नाईं लिङ् वचन कारक  
होते हैं पर इसका वर्णन पीछे होगा ।

४। ऊपरि लिखित प्रत्ययों के देखने से  
जान पड़ेगा कि उनमें बद्धन सम्बन्ध है ।

उत्तम पुरुष सदा ५ से आरम्भ होता  
है ।

प्रथम पुरुष के एकवचन से उसका बद्ध  
वचन प्राय ४ के आदि में लगाने से ब-  
ना है ।

आत्मनेपद का प्रायः प्रत्येक रूप परस्मैपद के उसी रूप से उसे ऊँच बढ़ाने से बना है।  
यथा १। से १०।  $\mu\epsilon\gamma$  से  $\mu\epsilon\theta\alpha$  १०  
से ०००।

५। पाण्डितों को स्पष्ट देव पड़ेगा कि यवनक्रिया संस्कृत क्रिया से कितना मिलता है।

७४। ये प्रत्यय इसी प्रकार से सब क्रियाओं के ३ लिट और ३ लोड में और छोड़ी क्रियाओं के छोड़े और लकारों में भी लगते हैं। अवशिष्ट सब लकारों में प्रत्यय के पहिले कोई सम्बन्धी स्वर आ जाता है।

७५। अब बतावेंगे कि ऊपरिलिखित चक्र के किस २ रूप के प्रत्यय किस २ लकारों में लगते हैं।

७६। जिसको हम ने प्रथम रूप कहा है उस रूप के दोनों पद के प्रत्यय इन ल-

कारों में लगते हैं ।

लट के वार्ता और लेट भावमें ।

१ और २ लट के वार्ता भावमें ।

१ और २ लट के लेट भावमें ।

७७ । उसी रूप के परस्मैपदही के प्रत्यय

इन लकारों में लगते हैं ।

१ और २ लिट के वार्ता और लेट भावमें ।

१ और २ लृट के लेट भावमें ।

७८ । उसी रूप के आत्मनेपदही के प्रत्यय

इन लकारों में लगते हैं ।

३ लिट के वार्ता भावमें ।

१ और २ लृट के वार्ता भावमें ।

लिट्टट के वार्ता भावमें ।

७९ । जिसको हमने द्वितीय रूप कहा है

उस रूप के दोनों पद इन लकारों में

लगते हैं ।

लड् में ।

लट् के लिङ् में ।

१ और २ लड् के वार्ता और लिङ् भावमें ।

८० । उसी रूप के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं ।

१ और २ लिट् के लिङ् में ।

१ और २ लृट् के वार्ता और लिङ् में ।

१ और २ लृट् के लिङ् में ।

१ और २ लोट् में ।

८१ । उसी रूप के आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं ।

१ लोट् में ।

लिट् के लिङ् भावमें ।

१ और २ लृट् के लिङ् भावमें ।

८२ । लोट् के दोनों पद ही मुख्य प्रत्यय लकारों में लगते हैं ।

लृट् के लोट् भावमें ।



१ और २ लड् के लोट् भावमें ।

८३ । उस के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं ।

१ और २ लिट् के लोट् भावमें ।

१ और २ लृच् के लोट् भावमें ।

८४ । उस के आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं ।

३ लिट् के लोट् भावमें ।

लिङ्गट् के लोट् भावमें ।

८५ । संज्ञा और विशेषण के दोनों पदके प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं ।

लट् के स' और वि' भावों में ।

१ और २ लड् के स' और वि' भावों में ।

१ और २ लृट् के स' और वि' भावों में ।

८६ । उन के परस्मैपदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं ।

१ और २ लिट् के स' और वि' भावों में ।

१ और २ लृच् के स. और वि. भावों में ।

८७। उनके आत्मने पदही के प्रत्यय इन लकारों में लगते हैं ।

३ लिट् के स. और वि. भावों में ।

लिट् के स. और वि. भावों में ।

१ और २ लृच् के स. और वि. भावों में ।

अथ ३ लिट् और ३ लोट्-का वर्णन ।

८८। ऊपरिलिखित चक्र के अनुसार आत्मनेपदही के प्रत्यय लगते हैं । केवल ब्रह्मवचन का  $\sigma\theta\omega\gamma$   $\sigma\theta\omega\sigma\alpha\gamma$  भी हो सकता है । और प्रत्ययों के पहिले इन दो लकारों का अन्तभाग संधि के नियमों से बदलता है । यथा  $\tau\epsilon\tau\upsilon\pi$  और  $\mu\alpha\iota$  मिलके  $\tau\acute{\epsilon}\tau\upsilon\mu\mu\alpha\iota$  और  $\acute{\epsilon}\lambda\epsilon\lambda\epsilon\gamma$  और

$\sigma\sigma$  मिलके  $\epsilon\lambda\epsilon\lambda\epsilon\zeta\sigma$  और  $\epsilon\pi\epsilon\phi\rho\alpha\delta$   
 और  $\mu\eta\nu$  मिलके  $\epsilon\pi\epsilon\phi\rho\alpha\sigma\mu\eta\nu$   
 और  $\pi\epsilon\pi\lambda\epsilon\chi$  और  $\mu\epsilon\nu\sigma$  मिलके  
 $\pi\epsilon\pi\lambda\epsilon\gamma\mu\epsilon\nu\sigma$  होते हैं। और संज्ञान्त  
 क्रियाओं में प्रत्ययके  $\sigma\theta$  का  $\sigma$  लुप्त हो  
 ता है। यथा  $\tau\epsilon\tau\upsilon\pi$  और  $\sigma\theta\omega$  मि-  
 लके  $\tau\epsilon\tau\upsilon\phi\theta\omega$  और  $\pi\epsilon\pi\epsilon\iota\theta$  और  
 $\sigma\theta\alpha$  मिलके  $\pi\epsilon\pi\epsilon\iota\sigma\theta\alpha$  होते हैं।  
 इस से अधिक इन 3 बातों को जानरखो।  
 1) प्रत्ययके  $\mu$  के पहिले दो  $\gamma$  में से एक  
 निकल जाता है। यथा  $\Sigma\phi\iota\gamma\gamma$  से  
 $\epsilon\sigma\phi\iota\gamma\mu\eta\nu$ ।  
 2) प्रत्ययके  $\mu$  के पहिले दो  $\mu$  में से एक  
 निकलता है। यथा  $\kappa\alpha\mu\mu$  का  $\mu$  सं-  
 धि के नियम के अनुसार  $\mu$  हो जाता है  
 पर  $\mu\epsilon\theta\alpha$  से मिलके  $\kappa\epsilon\chi\alpha\mu\mu\epsilon\theta\alpha$   
 होता है।

३। संज्ञानात क्रियाओं में और उन स्वरात्त क्रियाओं में भी जो ० लगाने हैं प्रथम और द्वितीय रूप के प्रथम पुरुष का वद्भवचन नहीं होता है और किसी क्रियाके लेट्ट और लिड्ड का कोई रूप नहीं होता है। इन का अर्थ अन्यप्रकार से प्रगट किया जाता है।

८५। अब इन दो लकारों के उदाहरण देने हैं।

१। स्वरात्त धातु ΠΟΙΕ।

इलिट्ट

वार्ता भाव।

एकवचन	द्विवचन	वद्भवचन
प्र. ΠΕΠΟΙΗΤΑΙ	ΠΕΠΟΙΗΣΘΟΥ	ΠΕΠΟΙΗΥΤΑΙ
म. ΠΕΠΟΙΗΣΑΙ	ΠΕΠΟΙΗΣΘΟΥ	ΠΕΠΟΙΗΣΘΕ
उ. ΠΕΠΟΙΗΜΑΙ	ΠΕΠΟΙΗΜΕΘΟΥ	ΠΕΠΟΙΗΜΕΘΑ



इलिट्।

सार्ता भावा

प्र.सँसैस्ता	सँसैसथु	
म.सँसैस्ता	सँसैसथु	सँसैसथे
उ.सँसैस्य	सँसैस्यथु	सँसैस्यथे

लोट् भाव ।

म.सँसैसथु	सँसैसथु	सँसैसथु- या सथुस्य
म.सँसैसु	सँसैसथु	सँसैसथे

संज्ञा भाव ।

सँसैसु

विप्रोषण भाव ।

सँसैस्यु

इलोट्।

प्र.सँसैसु	सँसैसु	
म.सँसैसु	सँसैसु	सँसैसु
उ.सँसैसु	सँसैसु	सँसैसु

३ श्लोष्टस्य च जनान् धातु कृत्वा

३ लिट्

कर्त्ता भाव ।

प्र. खेचरुपता ।	खेचरुफ्थुः	
म. खेचरुषा ।	खेचरुफ्थुः	खेचरुफ्थे
उ. खेचरुम्मा ।	खेचरुम्मेथुः	खेचरुम्मेथा

लोट् भाव ।

प्र. खेचरुफ्थुः	खेचरुफ्थुः	खेचरुफ्थुः वा फ्थुः
म. खेचरुषुः	खेचरुफ्थुः	खेचरुफ्थे

संज्ञा भाव ।

खेचरुफ्थुः

विज्ञेयता भाव ।

खेचरुम्मेथुः

३ लोट्

प्र. एखेचरुपतो	एखेचरुफ्थुः	
म. एखेचरुषुः	एखेचरुफ्थुः	एखेचरुफ्थे
उ. एखेचरुम्मेथुः	एखेचरुम्मेथुः	एखेचरुम्मेथा

४ काठस्थवं जनान् पानुः **ΑΛΛΑΓ** ।

३ लिट्

वार्ता भाव ।

प्र. ἠλλάχται	ἠλλάχθον	
म. ἠλλάξαι	ἠλλάχθον	ἠλλάχθε
उ. ἠλλαγμαι	ἠλλάγμεθον	ἠλλάγμεθα

लोट् भाव ।

प्र. ἠλλάχθω	ἠλλάχθον	ἠλλάχθ <sup>χθωσαν</sup> ων सा
म. ἠλλαξο	ἠλλαχθον	ἠλλαχθε

संज्ञा भाव ।

ἠλλᾶχθαι

विशेषण भाव ।

ἠλλαγμενο

३ लोट्

प्र. ἠλλαχτο	ἠλλάχθην	
म. ἠλλαξο	ἠλλαχθον	ἠλλαχθε
उ. ἠλλάγμην	ἠλλάγμέθον	ἠλλάγμεθα



५। दन्त्यसंज्ञान्त क्रिया सखेयात् ।

३ लिट्

वार्ता भाव ।

प्र. ऐसखेयास्ता	ऐसखेयाσθον	
म. ऐसखेयासा	ऐसखेयाσθον	ऐसखेयाσθε
उ. ऐसखेयाσμαι	ऐसखेयाσμεθον	ऐसखेयाσμεθα.

लोट् भाव ।

प्र. ऐसखेयाσθα	ऐसखेयाσθων	ऐसखेयाσθων वा σθωσων
म. ऐसखेयाσθ	ऐसखेयाσθον	ऐसखेयाσθε

संज्ञा भाव ।

ऐसखेयाσθα

विशेषण भाव ।

ऐसखेयाσμενο

३ लोट्.

प्र. ऐसखेयाστο	ऐसखेयाσθην	
म. ऐसखेयाσθ	ऐसखेयाσθον	ऐसखेयाσθε
उ. ऐसखेयाσμη	ऐसखेयाσμεθον	ऐसखेयाσμεθα

इति ३ लिट् श्रौर ३ लोट्. कावार्ता ।

अथ सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन।

१०। हम कह आये हैं कि ३ लिट् और ३ लोट् को छोड़के और २ लकार भी कितनी क्रियाओं में विना सम्बन्धी स्वर के अपने प्रत्यय लगाते हैं। ये लकार लट् लङ् १ लृट् २ लिट् हैं परन्तु केवल वार्ता लोट् संज्ञा विशेषण भावों में सम्बन्धी स्वर नहीं आता है लोट् और लिङ् में आता है।

११। इन धातुओं का १ लृङ् विना सम्बन्धी स्वर के होता है। 'E (इल) 'AΛO BA ΓNO ΔO TAA ΘE ΔPA (भाग) ΔT ΣBE ΣTA ΚΘA ΚT और बनाई हुई क्रिया βιo भी। और केवल लोट् भाव में ΓA धातु की भी यही दशा है।

१२। इन धातुओं के लट् और लङ् विना सम्बन्धी स्वरके होते हैं।



अथ सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन।

५०। हम कह आये हैं कि ३ लिट और ३ लोट को छोटके और २ लकार भी कितनी क्रियाओं में विना सम्बन्धी स्वर के अपने प्रत्यय लगाते हैं। ये लकार लट लड़ १ लड़ २ लिट हैं परन्तु केवल वार्ता लोट संज्ञा विशेषण भावों में सम्बन्धी स्वर नहीं आता हो लोट और लिड़ में आता है।

५१। इन धातुओं का १ लड़ विना सम्बन्धी स्वर के होता है। 'ए (डाल) 'AΛO BA ΓNO ΔO TΛA ΘE ΔPA (भाग) ΔT ΣBE ΣTA कृ०A कृT और बनार्इ हुई क्रिया βιo भी। और केवल लोट भाव में ITT धातु की भी यही दशा है।

५२। इन धातुओं के लट और लड़ विना सम्बन्धी स्वरके होने है।

५। दन्व्यबंजनान्त क्रिया श्चेयात् ।

३ लिट्

वार्ता भाव ।

प्र. ऐश्चेयास्ताः	ऐश्चेयासथु	
म. ऐश्चेयासाः	ऐश्चेयासथु	ऐश्चेयासथे
उ. ऐश्चेयासामः	ऐश्चेयासमथु	ऐश्चेयासमथे

लोट् भाव ।

प्र. ऐश्चेयासथु	ऐश्चेयासथु	ऐश्चेयासथुः वा सथुसाय
म. ऐश्चेयासो	ऐश्चेयासथु	ऐश्चेयासथे

संज्ञा भाव ।

ऐश्चेयासथाः

विशेषण भाव ।

ऐश्चेयासमेव

३ लोट्

प्र. ऐश्चेयासतो	ऐश्चेयासथु	
म. ऐश्चेयासो	ऐश्चेयासथु	ऐश्चेयासथे
उ. ऐश्चेयासमथु	ऐश्चेयासमथु	ऐश्चेयासमथे

इति ३ लिट् श्चेयात् ३ लोट् क्ववार्तात् ।

अथ सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन।

५०। हम कह आये हैं कि ३ लिट् और ३ लोट् को छोट्टके और २ लकार भी कितनी क्रियाओं में विना सम्बन्धी स्वर के अपने प्रत्यय लगाते हैं। ये लकार लट् लङ् २ लृट् २ लिट् हैं परन्तु केवल वार्ता लोट् संज्ञा विशेषण भावों में सम्बन्धी स्वर नहीं आता है लोट् और लिङ् में आता है।

५१। इन धातुओं का १ लृङ् विना सम्बन्धी स्वर के होता है। 'ए (इल) 'ΑΛΟ ΒΑ ΓΝΟ ΔΟ ΤΛΑ ΘΕ ΔΡΑ (भाग) ΔΥ ΣΒΕ ΞΤΑ ΚΘΑ ΚΥ और बनार्इ डई क्रिया βιo थी। और केवल लोट् भाव में ΓΑ धातुकी भी यही दशा है।

५२। इन धातुओं के लट् और लङ् विना सम्बन्धी स्वरके होते हैं।

सह

उदाहरण ।

१। यु लगाने वाला यात्रु MIT ।

सह

वार्ता भाव ।

परस्मैपद ।

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

प्र. मीग्युसि

मीग्युसुतु

मीग्युसुसि वा  
युसुसि

म. मीग्युस

मीग्युसुतु

मीग्युसुते

उ. मीग्युमि

मीग्युमेव

आत्मनेपद ।

प्र. मीग्युसुतु

मीग्युसुथु

मीग्युसुतुतु

म. मीग्युसुसि

मीग्युसुथु

मीग्युसुथे

उ. मीग्युमि

मीग्युथुथु

मीग्युथुथु

लोट भाव ।

परस्मैपद ।

प्र. मीग्युतु

मीग्युतु

मीग्युतुतु  
तुतुतु

म. मीग्युथु

मीग्युतु

मीग्युते

## आत्मनेपद ।

प्र. मीग्नύσθω	मीग्नύσθων	मीग्नύσθων <sup>ता</sup> σθωσαν
म. मीग्नύσο	मीग्नύσθον	मीग्नύσθε

संज्ञाभाव ।

पर.	मीग्नύना
आ.	मीग्नύσθαι

विशेषण भाव ।

पर.	मीग्नύन्त
आ.	मीग्नύμενο

लङ्.

परस्मैपद ।

प्र. ἐμίγνυ	ἐμίγνύτην	ἐμίγνυσαν
म. ἐμίγνυς	ἐμίγνυτον	ἐμίγνυτε
उ. ἐμίγνυ		ἐμίγνυμεν

आत्मनेपद ।

प्र. ἐμίγνυτο	ἐμίγνύσθην	ἐμίγνυντο
म. ἐμίγνυσο	ἐμίγνύσθον	ἐμίγνυσθε
उ. ἐμίγνύμην	ἐμίγνύμεθον	ἐμίγνύμεθα



प्र. δίδω <sup>ν</sup> τα	διδόν <sup>των</sup>	διδόν <sup>των</sup> <small>वा</small>
म. δίδο <sup>θ</sup> ι	δίδο <sup>τον</sup>	δίδο <sup>τε</sup> <small>τῶσαν</small>

आत्मनेपद ।

प्र. δίδο <sup>σ</sup> θω	διδό <sup>σ</sup> θων	διδό <sup>σ</sup> θων <small>वा</small>
म. δίδο <sup>σ</sup> σο	διδό <sup>σ</sup> σθον	διδό <sup>σ</sup> σθε <small>σθῶσαν</small>

संज्ञाभाव ।

पर. δίδो<sup>ν</sup>αι  
 आ. δίδο<sup>σ</sup>θα<sup>ι</sup>

विशेषणभाव ।

पर. δίδो<sup>ν</sup>τ  
 आ. δίδο<sup>μ</sup>ε<sup>ν</sup>ο

लङ्

परस्मैपद ।

प्र. ἐδίδω	ἐδιδό <sup>ν</sup> την	ἐδίδο <sup>σαν</sup>
म. ἐδίδω <sup>ς</sup>	ἐδίδο <sup>τον</sup>	ἐδίδο <sup>τε</sup>
उ. ἐδίδω <sup>ν</sup>		ἐδίδο <sup>μεν</sup>

आत्मनेपद ।

प्र. ἐδίδο <sup>το</sup>	ἐδιδό <sup>σ</sup> σθην	ἐδίδο <sup>ν</sup> το
म. ἐδίδο <sup>σο</sup>	ἐδιδό <sup>σ</sup> σθον	ἐδίδο <sup>σ</sup> σθε
उ. ἐδιδό <sup>μ</sup> ην	ἐδιδό <sup>μ</sup> ε <sup>θ</sup> ον	ἐδιδό <sup>μ</sup> ε <sup>θ</sup> ο

## ३। ΣΤΑ

( लृङ् )

चार्त्ता भाव।

परस्मैषद।

प्र. ἔστη	ἔστηρήν	ἔστησαν
म. ἔστης	ἔστητος	ἔστητε
उ. ἔστην		ἔστημεν

आत्मनेषद।

प्र. ἔστατο	ἔστασθην	ἔσταυτο
म. ἔστασο	ἔστασθον	ἔστασθε
उ. ἔσταμην	ἔσταμεθον	ἔσταμεθα

लोट् भाव।

परस्मैषद।

प्र. στήτω	στήτων	στάτων वा στήτωσαν
म. στήθι	στήτου	στήτε

आत्मनेषद।

प्र. στάσθω	στάσθων	στάσθων वा σθωσθ्व
म. στάσο	στάσθον	στάσθε

प्र. दिदोत	दिदोत	दिदόντων वा
म. दिदोथि	दिदोत	दिदो <sup>τῶσαν</sup> τε

आत्मनेपद ।

प्र. दिदोसथि	दिदोसथ	दिदो <sup>σθῶσαν</sup> σθ
म. दिदोसो	दिदोसथ	दिदो <sup>σθ</sup> σθε

संज्ञाभाव ।

पर. दिदो<sup>ν</sup>α  
 आ. दिदो<sup>σθ</sup>α

विशेषणभाव ।

पर. दिदो<sup>ν</sup>τ  
 आ. दिदो<sup>μ</sup>ε<sup>ν</sup>ο

लङ्

परस्मैपद ।

प्र. एदिद	Εδιदότην	Εδιदουσαν
म. एदिद	Εδιदου <sup>σ</sup> τ	Εδιदου <sup>σ</sup> τε
उ. एदिद		Εδιदόμε <sup>ν</sup>

आत्मनेपद ।

प्र. एदिदोतो	Εδιदούσθην	Εδιदού <sup>σ</sup> το
म. एदिदोसो	Εδιदού <sup>σ</sup> θ	Εδιदού <sup>σ</sup> θε
उ. एदिदोम	Εδιदόμε <sup>θ</sup> ον	Εδιदόμε <sup>θ</sup> ε

१। लट लड्ड १ लड्ड २ लट्ट १ लच २ लच  
 च लिहट्ट के प्रथम पुरुष के बहुवचन और  
 उत्तम पुरुष के तीनों वचन में ० लगता है  
 और उत्तम पुरुष के एकवचन के परस्मैपद  
 में यह ० ७ होता है ।

२। उन्हीं लकारों के अवशिष्ट रूपों में ६  
 लगता है ।

३। १ लट्ट में वैसेही ० ७ ६ लगते  
 हैं और इन के पहिले ६ भी लगता है और  
 र संधि से ६० ०७ और ६७ ७ और  
 ६६ ६८ होने हैं ।

४। २ लड्ड और १ और २ लिट्ट के सब रू-  
 पों में पूर्वकालमें ७ लगता था परन्तु अ-  
 ब प्रथम पुरुष के एकवचन के परस्मैप-  
 द में ६ लगता है और सब रूपों में ७  
 पा १ और २ लोड्ड के सब रूपों में ६८  
 लगता है ।

इति सम्बन्धिस्वररहित क्रियाओं का वर्णन ।

अथ सम्बन्धी स्वर का वर्णन ।

५७। पूर्वोक्त क्रियाओं को छोड़के और सब क्रियाओं के ३ लिट् और ३ लोट् को छोड़के और सब लकारों में प्रत्ययों के पहिले कोई न कोई सम्बन्धी स्वर लग जाता है कहीं अ कहीं ए कहीं ण कहीं ० कहीं ७ कहीं अल कहीं एल कहीं ०ल और कहीं २ इन में से दो साथ २ लगते हैं अर्थात्  
 ०ले ०लण एलण एए ए० ए७ अले  
 अलण एले एल७ ए०ले ए०ल और इन से अधिक इन लकारों में ऊपर लिखित चक्र में के प्रत्यय न्यनाधिक बदलके लगते हैं।

५८। अब बतावेंगे कि किस २ प्रत्यय के पहिले कौन २ सम्बन्धी स्वर लगता है ।

वार्ता भावमें

१। लट लड़ १ लड़ २ लट १ लव २ लव  
 च लिट्ट के प्रथम पुरुष के बङ्गवचन और  
 उत्तम पुरुष के तीनों वचन में ० लगता है  
 और उत्तम पुरुष के एकवचन के परस्मैपद  
 में यह ० ७ होता है ।

२। उन्हीं लकारों के अवशिष्ट रूपों में ६  
 लगता है ।

३। लट में वैसेही ० ७ ६ लगते  
 हैं और इन के पहिले ६ भी लगता है और  
 संधि से ६० ०७ और ६७ ७ और  
 ६६ ६८ होते हैं ।

४। लड़ और १ और २ लिट्ट के सब रू-  
 पों में पूर्वकालमें ५ लगता था परन्तु अ-  
 ब प्रथम पुरुष के एकवचन के परस्मैप-  
 द में ६ लगता है और सब रूपों में ५  
 पा १ और २ लोड के सब रूपों में ६८  
 लगता है ।

२।२ और ३ लघु के सब रूपों में १ ल  
गता है ।

१५ ।

लोट भाव में

१। चार्त्ता भाव का ० ७ और उस का ६  
१ हो जाता है और उसका ७ ज्यों का त्यों  
रहता है ।

१०० ।

लिङ् भाव में

१। जिन क्रियाओं के चार्त्ता भाव में सम्ब-  
न्धी स्वर नहीं लगता है उन में से ५-  
अन्त क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ७।१  
लगता है और ६-अन्त क्रियाओं के लिङ्  
के परस्मैपद में ६।१ लगता है और ०-अन्त  
क्रियाओं के लिङ् के परस्मैपद में ०।१ लग-  
ता है परन्तु देववचन में और वद्ववचन के  
प्रथम और उत्तम पुरुषों में इन का १  
ह्रस्व भी सकता है और उन के वद्ववचन  
के प्रथम पुरुष में १ ६ हो सकता है ।

यथा ।

कृA के लट् के लिट् का परस्मैपद ।

प्र. φαίν	φαίντην	φαίνσαν
म. φαίνς	φαίντων	φαίντε
उ. φαίνν		φαίνμεν

अथवा

प्र. φαίν	φαίντην	φαίνεν
म. φαίνς	φαίντων	φαίντε
उ. φαίνν		φαίνμεν

अब इन की छोड़के और सब क्रियाओं और  
इस के आभवेपदकी भी बात है ।

२। लट् २ लृट् १ लृच् २ लृच् लिङ्गट् २  
लिट् २ लिङ्ग के परस्मैपदके प्रथम अक्षर  
के बदलवसन में 01E परन्तु और सब रू-  
पों के दोसोँ पद में 0L लगता है ।

३। १ लृट् में 60L और 601E लगते  
हैं परन्तु संयुक्ते में 0L और 01E होते हैं ।



५।१ और २ लुच के सब रूपों में १ ल  
जता है ।

१५ ।

लेट भाव में

१। चार्ती भाव का ० २ और उस का ६  
१ हो जाता है और उसका ५ अंशों का नों  
रहता है ।

१०० ।

लिङ्ग भाव में

१। जिन क्रियाओं के चार्ती भाव में सम्ब-  
न्धी स्वर नहीं लगता है उन में से ५-  
अन्त क्रियाओं के लिङ्ग के परस्मैपद में ०।१  
लगता है और ६-अन्त क्रियाओं के लिङ्ग  
के परस्मैपद में ६।१ लगता है और ०-अन्त  
क्रियाओं के लिङ्ग के परस्मैपद में ०।१ लग-  
ता है परन्तु प्रवचन में और वद्वचन के  
प्रथम और उत्तम पुरुषों में इन का १  
हो भी सकता है और उन के वद्वचन  
के प्रथम पुरुष में १ ६ हो सकता है ।

यथा ।

६A के लृट् के लिङ् का परस्मैपद ।

प्र. φαίν	φαίντην	φαίνσαν
म. φαίνε	φαίντων	φαίντε
उ. φαίν		φαίμεν

अथवा

प्र. φαίν	φαίνην	φαίεν
म. φαίνε	φαίεν	φαίτε
उ. φαίν		φαίμεν

अब इन को छोड़के और सब क्रियाओं और इस के आत्मनेपद की भी बात है ।

श्री लृट् २ लृट् १ लृच् २ लृच् लिङ् लृट् २ लिङ् के परस्मैपद के प्रथम अक्षर के बदलवचन में ०१६ परन्तु और सब रूपों के दोनों पद में ०१ लगता है ।

श्री १ लृट् में ६०१ और ६०१६ लगते हैं परन्तु संयुक्ते में ०१ और ०१६ होते हैं ।

किन्तु अथेना नगर की भाषा में ०८११ सब रूपों में लगता है ।

४।२ लुड के प्रथम पुरुष के बहुवचन के परस्मैपद में ०८१६ परन्तु और सब रूपों में ०८१७ लगता है । किन्तु अथेना नगरवासियों की भाषा में प्रथम पुरुष के एकवचन में ६१६ लगता है और प्रथम पुरुष के बहुवचन और मध्यम पुरुष के एकवचन में ६१० लगता है ।

५।१ और २ लुव और १६ के २ लिट के सब रूपों में ६११ लगता है परन्तु प्रथम पुरुष के बहुवचन में ६१६ भी और मध्यम और उत्तम पुरुषों के बहुवचन में ६१ भी लग सकता है ।

२०१।

लोह भाव में

१। लुड १ लुड १ लिट २ लिट लिड्ड  
के ४१०४ प्रत्यय के पहिले ० और सब रूपों में ६ लगता है ।

२। २ लुङ् के सब रूपों में ५ लगता है ।

३। १ लृच् २ लृच् के सब रूपों में १ लगता है ।

१०२।

संज्ञा भावमें

१। लट् १ लुङ् २ लृट् १ लिट् २ लिट् १ लृच् २ लृच् लिङ्गट् के प्रत्ययों के पहिले ६ लगता है ।

२। १ लृट् में ६६ लगता है सो ६६ होता है ।

३। २ लुङ् में ५ लगता है ।

४। १ और् २ लृच् में १ लगता है ।

१०३।

विशेषण भावमें

१। लट् १ लुङ् २ लृट् १ लिट् २ लिट् लिङ्गट् २ लृच् २ लृच् में ० लगता है ।

२। १ लृट् के प्रत्ययों के पहिले ६० लगता है सो ०५ होता है ।

३। २ लुङ् में ५ लगता है

४। १ और् २ लृच् में ६ लगता है ।

१०४। अब बतावेंगे कि इन सम्बन्धी स्वरों से मिलके ऊपरिलिखित चक्र में के प्रत्यय किस प्रकार से बदलते हैं ।

१। २ और २ लिट् के ङट् में का ट् लग्न होता है और अवशिष्ट सब लकारों के ङट् और गट् में का ट् छूटके ए। और १ होते हैं ।

२। ०यट् ०यण्ट् और ०यट् ०यण्ट् और ०यट् ०यण्ट् होते हैं । पर कभी २ ०यट् ०य भी हो सकता है ।

३। ङट् ए। ङ और गट् १ण्ट् और ०यण्ट् होते हैं । पर कभी २ २ और २ लिट् में यह ०ण्ट् ०ण्ट् वा ०ण्ट् होता है ।

४। ङण्ट् और गण्ट् का ङ छूटके एण्ट् ए। वा १ होता है और

५। ५। प्रत्यय लग्न

६। ङट् १ गट्

०११८ का ८ लम होता है ।

७। ६१६ का ६ कभी २ ००५ होता है ।

८। ५८ का ८ सदा लम होता है और ५ के पहिले ०५ भी १ लव २ लव १ लोड्ड २ लोड्ड में लगता है और कभी २ और लकारों में भी ।

९। ६०० ५०० ०१०० ५१०० ६१०० का ० छूटता है और तब ६० ०५ और ५० ० संधि से होते हैं

१०। ०५ ५५ ६१५ १५ ६१५ ०१५ का ५ सदा ५ होता है पर ०५ ५५ के अन्त में ५ लगता है ।

११। ६०६ का ०६ सदा लम होता है पर ५०६ ०५ से बदल जाता है और १०६ १८६ हो जाता है ।

१२। ५८०५ ८००५ से बदल सकता है और १ के उपरान्त सदा ऐसा बदलता

१०४। अब बतावेंगे कि इन सम्बन्धी स्वरों से मिलके ऊपरिलिखित चक्र में के प्रत्यय किस प्रकार से बदलते हैं ।

१। २ और २ लिट् के ङट् में का ट् लुप्त होता है और अवशिष्ट सब लकारों के ङट् और गट् में का ट् छूटके ए और ण होते हैं ।

२। ०यट् ०यण्ट् और ०यट् ०यण्ट् और ०यट् ०यण्ट् होते हैं । पर कभी २ ०यट् ०य भी हो सकता है ।

३। ङट् ङण्ट् और गट् गण्ट् और ०यट् ०यण्ट् होते हैं । पर कभी २ २ और २ लिट् से यह ०य ०यण्ट् वा ०यण्ट् होता है ।

४। ङण्ट् और गण्ट् का ङ छूटके ङण्ट् ए वा ण होता है और गण्ट् ण ।

५। ५५ प्रत्यय लुप्त होता है ।

६। ङट् ङण्ट् ०यट् गट् ०यण्ट् ०यण्ट् ०यण्ट् ०यण्ट्

०११२ का २ लुप्त होता है ।

७। ६१६ का ६ कभी २ ७०० होता है ।

८। ५२ का २ सदा लुप्त होता है और ५ के पहिले ७० भी २ लघु २ लघु २ लोड्ड २ लोड्ड में लगता है और कभी २ और लकारों में भी ।

९। ६०० ००० ०१०० ०१०० ६१०० का ० छूटता है और तब ६० ०५ और ०० ० संधि से होते हैं

१०। ०५ ०५ ६१५ १५ ६११५ ०११५ का ५ सदा ५ होता है पर ०५ ०५ के अन्त में ५ लगता है ।

११। ६०६ का ०६ सदा लुप्त होता है पर ००६ ०५ से बदल जाता है और १०६ १०६ हो जाता है ।

१२। ५२०५ २०००५ से बदल सकता है और १ के उपरान्त सदा ऐसा बदलता



है । परन्तु इस  $\tau\omega\sigma\alpha\gamma$  के पहिले  
 ० नहीं बरन् उस के स्थाने  $\epsilon$  लगता है ।  
 १३। बहुवचन का  $\sigma\theta\omega\gamma$   $\sigma\theta\omega\sigma\alpha\gamma$  भी  
 हो सकता है ।

१४। १ और २ लिट्र का  $\epsilon\gamma\alpha$  वैसा ही रह  
 ता है पर और सबलकारों का  $\epsilon\gamma\alpha$   $\epsilon\lambda\gamma$   
 से बदल जाता है और  $\alpha\gamma\alpha$   $\alpha\lambda$  हो जा  
 ता है ।

१५। १ और २ लिट्र के  $\sigma\gamma\tau$  का  $\gamma$  छूट  
 जाता है ।

१६। जिन क्रियाओं के अन्तमें  $\alpha$   $\epsilon$   $o$  है  
 उनमें यह स्वर सम्बन्धी स्वर से संधि के  
 नियमानुसार मिलता है । परन्तु इन चार वा  
 तों को जान रवो ।

१। ० और  $\epsilon\lambda\gamma$  मिलके  $o\lambda\gamma$  नहीं बरन्  
 $o\lambda\gamma$  होता है । यथा  $\mu\lambda\sigma\theta\epsilon\epsilon\lambda\gamma$  से  
 $\mu\lambda\sigma\theta o\lambda\gamma$  ।

२। इन क्रियाओं के लट के लिङ् के परस्मैपद में प्रायः ०।१ सम्बन्धी स्वर लगता है। यथा  
 τιμ<sup>α</sup> से τιμ<sup>ω</sup>η τιμ<sup>ω</sup>ήτην  
 τιμ<sup>ω</sup>ήσαν इत्यादि और φιλε से  
 φιλαίη φιλοίητην φιλοίησαν  
 इत्यादि ।

३। ΖΑ ΧΡΑ (काममें लेना) ΣΜΑ ΨΑ ΠΕ  
 υα δισυα का α ε और ει से मिलके α ε  
 नहीं बनरू η होता है यथा χράετα  
 से χρ<sup>η</sup>τα और ζαειν से ζ<sup>η</sup>ν ।

४। एकाङ्गान्वित धातुओं में केवल ε प्रत्यय  
 के साथ संधि होता है और किसी प्रत्यय के साथ  
 नहीं होता है। यथा πνέεε से πνέ<sup>ε</sup> पर-  
 न्त πνέουσα πν<sup>ο</sup>ύσα नहीं होता है ।

५। जहां २ प्रथम पुरुष के अन्तमें ε वा  
 स्वरदिकषाब्दके पहिले आता है तहां २  
 प्रत्यय के अन्तमें ν लगता है। यथा

ἔχουσι αὐτοῦ और ἔλεγε οὗτος  
 ही होगा वरन् ἔχουσιν αὐτοῦ और  
 ἔλεγεν οὗτος ।

अथ सम्बन्धिस्वराश्रितक्रियाओं के अक्षरानु

१०५।

१२६

MEN और ὄΑΝ

शार्ती भाव ।

परस्मैपद ।

एकवचन

द्विवचन

बहुवचन

ἔχουσι

ἔχουσιν

ἔχουσιν

ἔχουσιν

ἔχουσιν

ἔχουσιν

ἔχουσιν

ἔχουσιν

ἔχουσιν

उत्तर

ἔχουσιν

ἔχουσιν

ἔχουσιν

ἔχουσιν

ἔχουσιν

ἔχουσιν

लिङ् भाव ।

परस्मैपद ।

प्र० मेनो᳚	मेनो᳚ιτην	μενο᳚᳚εν
म० मेनो᳚ις	μενο᳚᳚ιτου	μενο᳚᳚ιτε
उ० मेनो᳚ιμι		μενο᳚᳚ιμεν

अथवा

प्र० मेनो᳚ιη	μενο᳚᳚ιητην	μενο᳚᳚ιησαν
म० मेनो᳚ιης	μενο᳚᳚ιητου	μενο᳚᳚ιητε
उ० मेनो᳚ιην		μενο᳚᳚ιημεν

आत्मनेपद ।

प्र० θानो᳚᳚ιτο	θानो᳚᳚ισθην	θानो᳚᳚ιγτο
म० θानो᳚᳚ι	θानो᳚᳚ισθον	θानो᳚᳚ισθε
उ० θानो᳚᳚ιμην	θानो᳚᳚ιμεθον	θानो᳚᳚ιμεθα

संज्ञाभाव ।

पर०	μενε᳚᳚᳚εν
आ०	θानε᳚᳚᳚᳚᳚᳚

विधोषण भाव ।

प्र. βάλετω	βαλέτων	βαλόντων καβαλέτωσαν
म. βάλε	βάλετον	βάλετε
	आत्मनेपद ।	
प्र. λαβέσθω	λαβέσθων	λαβέσθων κα
म. λαβού	λάβεσθον	σθώσαν λάβεσθε
	संज्ञाभाव ।	
पर	βαλεῖν	
आ.	λαβέσθαι	
	विशेषणभाव ।	
पर	βαλόντ	
आ.	λαβομένο	

२ लट्

ΚΤΛΑΚ और ΠΟΙΕΙ

वार्ता भाव ।

परस्मैपद ।

प्र. फुलाखै	फुलाखैतुन	फुलाखैसु
म. फुलाखैसु	फुलाखैतुन	फुलाखैसु
उ. फुलाखै		फुलाखैसु

आत्मनेपद ।

प्र. पोईसुतु	पोईसुतु	पोईसुतु
म. पोईसुतु	पोईसुतु	पोईसुतु
उ. पोईसुतु	पोईसुतु	पोईसुतु

लिट् भाव ।

परस्मैपद ।

प्र. फुलाखै	फुलाखैतुन	फुलाखैसु
म. फुलाखैसु	फुलाखैतुन	फुलाखैसु
उ. फुलाखैसु		फुलाखैसु

आत्मनेपद ।

प्र. पोईसुतु	पोईसुतु	पोईसुतु
म. पोईसुतु	पोईसुतु	पोईसुतु
उ. पोईसुतु	पोईसुतु	पोईसुतु

संज्ञा भाव ।

पर. फुलाखैसु  
 आ. पोईसुतु  
 विधोवर्ण भाव ।

परः φυλαξόντ  
 आः ποιησομενο

१०८।

२ लड्ड

ΠΡΑΓ और ΣΤΕΛ

वार्त्ता भाव ।

परस्मैपद ।

प्र·ἐπραξε	ἐπραξάτην	ἐπραξαν
म·ἐπραξας	ἐπράξατον	ἐπράξατε
उ·ἐπραξα		ἐπράξαμεν

आत्मनेपद ।

प्र·ἐστείλατο	ἐστειλάσθην	ἐστείλαντο
म·ἐστείλω	ἐστείλασθον	ἐστείλασθε
उ·ἐστείλάμην	ἐστείλάμεθον	ἐστείλάμεθα

लेट्ट भाव ।

परस्मैपद ।





दाती भाव ।

प्र.σπαρήσεται	σπαρήσῃσθον	σπαρήσονται
म.σπαρήσῃσθε	σπαρήσῃσθον	σπαρήσῃσθε
उ.σπαρήσομαι	σπαρησομεθον	σπαρησομεθα

लिङ्. भाव ।

प्र.σπαρήσοιτο	σπαρησοισθην	σπαρησοιντο
म.σπαρησοιο	σπαρησοισθον	σπαρησοισθε
उ.σπαρησοιμην	σπαρησοιμεθον	σπαρησοιμεθα

संज्ञा भाव ।

σπαρήσεσθα
विशेषणभाव ।
σπερησομενο

१२१ ।

Λ Ε Γ ।

दाती भाव ।

प्र. ἐλέχθη	ἑλέχθητην	ἐλέχθησαν
म. ἐλέχθης	ἐλέχθητον	ἐλέχθητε
उ. ἐλέχθην		ἐλέχθημεν

लेट् भाव ।

प्र. λεχθή	λεχθήτον	λεχθῶσι
म. λεχθῆς	λεχθῆτον	λεχθῆτε
उ. λεχθῶ		λεχθῶμεν

लिङ् भाव ।

प्र. λεχθείη	λεχθειήτην	λεχθείησαν वा χθείεν
म. λεχθείης	λεχθείητον	λεχθείητε वा χθείτε
उ. λεχθείην		λεχθείημεν वा χθείμεν

लोट् भाव ।

प्र. λεχθήτω	λεχθήτων	λεχθήτωσαν
म. λέχθητι	λέχθητον	λέχθητε

संज्ञा भाव ।

लेख्थेना ।

विशेषण भाव ।

लेखेन्ति

२ लृच् ।

ZHTE

कर्त्ता भाव ।

प्र. Ζητηθήσε- ται	Ζητηθήσεσ- θον	Ζητηθήσων- ται
म. Ζητηθήσῃ σα σελ	Ζητηθήσεσ- θον	Ζητηθήσεσθε
त. Ζητηθήσο- μαι	Ζητηθήσο- μεθον	Ζητηθήσομε- θα

लिङ् भाव ।

प्र. Ζητηθήσο- το	Ζητηθήσο- ισθην	Ζητηθήσο- ντο
म. Ζητηθήσο- ισ	Ζητηθήσο- ισθον	Ζητηθήσο- σθε
त. Ζητηθήσο- ι- μην	Ζητηθήσο- ι- μεθον	Ζητηθήσο- ι- μεθα

संज्ञा भाव ।

Ζητηθήσεσθαι

विशेषण भाव ।

Ζητηθήσομενο

१३

लिङ्ग

ΓΡΑΦ

चार्त्त भाव।

१. γεγραπεται	गेग्रॉपेसथोन	गेग्रॉपणुता
२. गेग्रॉप्थे प्थे	गेग्रॉपेसथोन	गेग्रॉपेसथे
३. गेग्रॉपोमा	गेग्रॉपोमे- थोन	गेग्रॉपोमेथे

लिङ्ग भाव।

१. गेग्रॉपोितो	गेग्रॉपो(स- थेण)	गेग्रॉपो(न- तो)
२. गेग्रॉपोιο	गेग्रॉपो(स- थेण)	गेग्रॉपो(स- थे)
३. गेग्रॉपो(ι- μην)	गेग्रॉपो(ιमे- थेण)	गेग्रॉपो(ιμ- थे)

संज्ञा भाव ।

गेग्रॉपेसथा

विशेषण भाव।

गेग्रॉपोमेनो

११४ ।

लिट्

KPIN

वार्ता भाव ।

प्र. खέχρικε	खेच्रिकात्तन्	खेच्रीकासि
म. खέचρικας	खेच्रीकाτον	खेच्रीκατε
उ. खέचρικα		खेच्रीκαμεν

लेट् भाव ।

प्र. खεχρίκη	खेच्रीक्यत्तन्	खेच्रीक्यसि
म. खεχρίκῃς	खेच्रीक्यत्तन्	खेच्रीक्यτε
उ. खεχρίκω		खेच्रीक्यμεν

लिङ् भाव ।

प्र. खεχρίχοι	खेच्रीचोत्तन्	खेच्रीचोसि
म. खεχρίχοις	खेच्रीचोत्तन्	खेच्रीचोस्ते
उ. खεχρίχοιμι		खेच्रीचोस्मि

लोट् भाव ।

प्र. खεχρικέτω	खेच्रीकेत्तन्	खेच्रीकωσ
म. खέχρικε	खेच्रीकेत्तन्	खेच्रीकेत्

संज्ञाभाव।

ΧΕΧΡΙΧΕΝΑΙ

विशेषणभाव।

ΧΕΧΡΙΧΟΤ

११५।

१ लोट्

फृत् ।

प्र. ἔπεφύχει	ἔπεφύχειτῆν	ἔπεφύχεισαν
म. ἔπεφύχεις	ἔπεφύχειτον	ἔπεφύχειτε
उ. ἔπεφύχειν		ἔπεφύκειμεν

११६।

२ लिट्

ΓΕΝ ।

बार्ता भाव।

प्र. γέγονε	γεγόνατον	γεγόνασι
म. γέγονας	γεγόνατον	γεγόνατε
उ. γέγονα		γεγόναμεν

## लोट् भावः।

प्र. गेगόνη	गेगόνητον	गेगόνωσι
म. गेगόνης	गेगόνητον	गेगόνητε
उ. गेगόνω		गेगόνωμεν

## लिट् भावः।

प्र. गेगόνोι	गेगονοίτην	गेगονοιεν
म. गेगόνोις	गेगονοίτον	गेगόνοιτε
उ. गेगονοιμι		गेगονοιμεν

## लोट् भावः।

प्र. गेगονέτω	गेगονέτων	गेगονόντων या गेगώσων
म. गेगονε	गेगόνετον	गेगόνετε

## संज्ञा भावः।

गेगονέναι

## विशेषण भावः।

गेगονον

प्र. ἐφθόρει	ἐφθορείτην	ἐφθόρεισαν
म. ἐφθόρεις	ἐφθόρειτον	ἐφθόρειτε
उ. ἐφθόρειν		ἐφθόριμεν

१२८।

लट्

ΓΝΟ और ΠΤΘ ।

वाल्मी भाव ।

परस्मैपद ।

प्र. γινώσκει	γινώσκετον	γινώσχουσι
म. γινώσκεις	γινώσκετον	γινώσχετε
उ. γινώσχω		γινώσχομεν

आत्मनेपद ।

प्र. πυνθάνε- ται	πυνθάνεσ- θον	πυνθάνον- ται
म. πυνθάνη- σθε	πυνθάνεσ- θον	πυνθάνεσθε
उ. πυνθάνο- μαι	πυνθάνο- μεθον	πυνθάνομεθα



लेट् भाव।

परस्मैपद।

प्र. γινώσκη	γινώσκητον	γινώσχωσι
म. γινώσκησ	γινώσκητον	γινώσκητε
उ. γινώσχω		γινώσχωμεν

आत्मनेपद।

प्र. πυνθάνη ται	πυνθάνησ θου	πυνθάνω- νται
म. πυνθάνη	πυνθάνησ θου	πυνθάνησ θε
उ. πυνθάνω- μαι	πυνθανώ- μεθου	πυνθανώ- μεθα

लिट् भाव।

परस्मैपद।

प्र. γινώσχοι	γινώσχοίτην	γινώσχοιεν
म. γινώσχοις	γινώσχοιτόν	γινώσχοιτε
उ. γινώσχοιμι		γινώσχοιμεν

आत्मने पद ।

आत्मनेपद

प्र. पृथ्वानोऽसि	पृथ्वानोऽसि	पृथ्वानोऽसि
म. पृथ्वानो	पृथ्वानो	पृथ्वानो
उ. पृथ्वानोमि	पृथ्वानोमि	पृथ्वानोमि

लोट् भाव।  
परस्मैपद।

प्र. गीवश्चेत्	गीवश्चेत्	गीवश्चेत्
म. गीवश्चे	गीवश्चे	गीवश्चे

आत्मनेपद।

प्र. पृथ्वानेऽसि	पृथ्वानेऽसि	पृथ्वानेऽसि
म. पृथ्वानो	पृथ्वानो	पृथ्वानो

सिञ्चा भाव।

- पर. गीवश्चेत्
- आ. पृथ्वानेऽसि
- विशेषणभाव।
- पर. गीवश्चेत्
- आ. पृथ्वानोमि



विशेषणभावः

ὄντ

लड्

प्र. ἦν	ἦσαν	ἦσαν
म. ἦν वा ἦσθα	ἦτον	ἦτε
उ. ἦν वा ἦμεν		ἦμεν

१२१। हम कह आये हैं कि ३ लिट और ३ लो-  
 उ-के प्रथम पुरुषका वद्भवचन वार्ता भाव में  
 और ३ लिट का कोई रूप लेट और लिड-  
 भावों में नहीं होता है। सो उन के अर्थ में  
 ३ लिट का विशेषण भावऽथ यात के ३ए  
 रूप के साथ आता है। यथा ἄτ से ३ लिट  
 के वार्ता भाव के अर्थ में λελοῦμένο  
 εἶσθε। उसी के लेट भाव के अर्थ में λελυ-  
 μένο ἢ ἦτον ὡσεῖ इत्यादि। उसी  
 के लिड- भाव के अर्थ में λελυμένο  
 εἶη εἰρήτην εἶεν इत्यादि। और ३ लो-

३. के अर्थमें λελυμενο ἦσαν ।

१२२

२। II ।

यह धातु केवल लट और लड़ के केवल परस्मैपदमें होता है। लट के एकवचन के वार्ता भाव में और लड़ के तीनों वचन में धातु ६ होता है। और लड़ का आगम ११ है।

लट  
वार्ता भाव ।

प्र० εἶσα	ἴτον	ἴσασι
मं० εἶσα वा εἶ	ἴτον	ἴτε
उ० εἶμι		ἴμεν

लड़ भाव ।

प्र० ἴη	ἴητον	ἴωσι	इत्यादि
---------	-------	------	---------

लिड़ भाव ।

प्र० ἴοι	ἴοίτην	ἴοιεν	इत्यादि
----------	--------	-------	---------

लोट भाव।

प्र. ἴτω	ἴτων	ἴοντων वा ἴωσων
म. ἴθι	ἴθου	ἴτε

संज्ञा भाव।

ἴεναι

विशेषण भाव।

ἴοντες

लट्

प्र. ἴει	ἴείτην	ἴεισων
म. ἴεις	ἴειτου	ἴειτε
उ. ἴειय या ἴीय		ἴειμεν

इस धातु के लट् के वार्ता भाव का अर्थ प्रा-  
य वर्तमान के भविष्यत् का है।

२३। ἴεαιतो और EPX ।

EPX लट् और लृ. में होता है। ἴεαιतो  
और सब लकारों में। ἴεαιतो ला ७

२ लट में एउ होता है और १ लड में ल  
म होता है ।

१ लड

वार्ता भाव ।

प्र. ἦλθε | ἦλθέτην | ἦλθον इत्यादि

लेट भाव ।

प्र. ἔλθη | ἔλθητον | ἔλθωσι इत्यादि

लिड भाव ।

प्र. ἔλθοι | ἔλθοίτην | ἔλθοιεν इत्यादि

लोट भाव ।

प्र. ἐλθέτω | ἐλθέτων | ἐλθόντων वा  
ἐλθέτωσαν  
प्र. ἔλθε | ἔλθετόν | ἔλθετε

संज्ञा भाव ।

ἐλθεῖν

विशेषणभाव ।

ἐλθόντ

१ लिट

वार्ता भाव ।

प्र-ἐλήλυθε ἐληλύθατον ἐληλύθασι इत्यादि

लेट् भाव ।

प्र-ἐληλύθη ἐληλύθητον ἐληλύθωσι इत्यादि

लिट् भाव ।

प्र-ἐληλύθοι ἐληλυथοίτην ἐληλύθοιεν इत्या-

संज्ञाभाव ।

ἐληλυθέναι

विशेषणभाव ।

ἐληλυθοντ

लेट्

प्र-ἐληλύθει ἐληλυθείτην ἐληλύθεισαν इ-

लेट्

वार्ता भाव ।

प्र-ἐλεύσεται ἐλεύσεσθον ἐλεύσοντα इत्या-

लिट् भाव ।





प्र. ईदेल ईदेटोव ईदोउल इत्यादि  
आत्मनेपद।

प्र. ईदेटल ईदेटोव ईदोवतल इत्यादि  
लिङ्. भाव।  
परस्मैपद।

प्र. ईदोल ईदोलतण् ईदोलव् इत्यादि  
आत्मनेपद।

प्र. ईदोलतो ईदोलोतण् ईदोलवतो इत्यादि  
संज्ञा भाव।  
परस्मैपद।

ईदेलव्

आत्मनेपद।

ईदेटोल

विषोषाभाव।

पर. ईदोवत

आ. ईदोववो

लेट्

वार्त्ताभावः।

परस्मैपदः।

प्र-ἔχει ἔχτον ἔχουσα इत्यादि

आत्मनेपदः।

प्र-ἔχεται ἔχεσθον ἔχονται इत्यादि

लेट् भावः।

परस्मैपदः।

प्र-ἔχη ἔχητον ἔχωσα इत्यादि

आत्मनेपदः।

प्र-ἔχηται ἔχησθον ἔχονται इत्यादि

लिट् भावः।

परस्मैपदः।

प्र-ἔχοι ἐχοίτην ἔχοιεν इत्यादि

आत्मनेपदः।

प्र-ἔχοιτο ἐχοίστην ἔχοιντο इत्यादि

लोट् भाव ।

परस्मैपद ।

प्र-ḗχέτω ḗχέτων ḗχόντων वा ḗχέτωσων  
आत्मनेपद ।

प्र-ḗχέσθω ḗχέσθων ḗχέσθων वा σθίωσων  
संज्ञाभाव ।

पर- ḗχेल्व

आ- ḗχέσθα

विशेषणभाव ।

पर- ḗχοντ

आ- ḗχομενο

लङ् ।

परस्मैपद ।

प्र-ḗχε ḗχέτην ḗχον ḗχον  
इत्यादि

आत्मनेपद ।

प्र-ḗχετο ḗχέσθη ḗχοντο ḗχοντο  
इत्यादि

१२५।

५। 'OPA 'OIL 'IA ।

'OPA से लट लड् १ लिट् ३ लिट् १ लो-  
ड् ३ लोड् ।

'OIL से २ लिट् ३ लिट् २ लोड् ३ लोड् २  
लृच् २ लृच् ।

'IA से १ लृड् २ लिट् २ लोड्

१ लृड् का ८ आगम से मिलके ६८ हो-  
ता है ।

'IA के २ लिट् का अभ्यास लेट् लिट् सं-  
ज्ञा विशेषण में ६८ से होता है । वार्ता  
भाव के एकवचन में ०८ से । और द्वि-  
वचन और बहुवचन में नहीं होता है  
परन्तु धातु का ० ८ से बदल जाता है ।  
ऐसाही लोट् के सब रूपों में भी ।

२ लोड् में ६८ ही में आगम लगके १  
होता है ।

'IA के २ लिट् का अर्थ जानने का है

और सब लकारों का अर्थ देखने का है।

लिङ्

वार्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र. ए᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚ इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र. ए᳚᳚᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚ इत्यादि

लेट् भावः

परस्मैपद।

प्र. ᳚᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚ इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र. ᳚᳚᳚᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚ इत्यादि

लिङ् भावः

परस्मैपद।

प्र. ᳚᳚᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚ ᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚᳚ इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र.  $\dot{\iota}\delta\acute{o}\iota\tau\omicron$   $\dot{\iota}\delta\acute{o}\iota\sigma\theta\eta\upsilon$   $\dot{\iota}\delta\acute{o}\iota\upsilon\tau\omicron$  इत्यादि

लोटभाव ।

परस्मैपदा ।

प्र.  $\dot{\iota}\delta\acute{\epsilon}\tau\omega$   $\dot{\iota}\delta\acute{\epsilon}\tau\omega\upsilon$   $\dot{\iota}\delta\acute{o}\nu\tau\omega\upsilon$  वा  $\dot{\iota}\delta\acute{\epsilon}\tau\omega$   $\sigma\alpha\upsilon$  इत्यादि

आत्मनेपदा ।

प्र.  $\dot{\iota}\delta\acute{\epsilon}\sigma\theta\omega$   $\dot{\iota}\delta\acute{\epsilon}\sigma\theta\omega\upsilon$   $\dot{\iota}\delta\acute{\epsilon}\sigma\theta\acute{\omega}\upsilon$  वा  $\sigma\theta\omega\sigma\alpha\upsilon$  इत्यादि

संज्ञाभाव ।

पर.  $\dot{\iota}\delta\acute{\epsilon}\tau\upsilon$

आ.  $\dot{\iota}\delta\acute{\epsilon}\sigma\theta\alpha$

विशेषणभाव

पर.  $\dot{\iota}\delta\acute{o}\nu\tau$

आ.  $\dot{\iota}\delta\acute{o}\mu\epsilon\upsilon\omicron$

॥ रलिट्

वार्ता भाव ।

प्र.  $\acute{o}\dot{\iota}\delta\acute{\epsilon}$   $\dot{\iota}\sigma\tau\omicron\upsilon$   $\dot{\iota}\sigma\alpha\sigma\iota$

म.  $\acute{o}\dot{\iota}\sigma\theta\alpha$  वा  $\dot{\iota}\sigma\tau\omicron\upsilon$   $\dot{\iota}\sigma\tau\epsilon$

उ.  $\acute{o}\dot{\iota}\delta\acute{\alpha}$   $\dot{\iota}\sigma\mu\epsilon\upsilon$

संज्ञाभाव।

ॐफ्थिण्वा।

विशेषणभाव।

ॐफ्थेय्

स्त्व

वार्त्ताभाव।

प्र० ॐफ्थिसेत्वा ॐफ्थिसेत्थोन ॐफ्थिसेत्थोन्त्वा  
इत्या०

लिङ् भाव।

प्र० ॐफ्थिसेत्थोत्थो ॐफ्थिसेत्थोत्थोन्त्थो ॐफ्थिसेत्थोत्थोन्त्थो  
इत्या०

संज्ञाभाव।

ॐफ्थिसेत्थेत्वा।

विशेषणभाव।

ॐफ्थिसेत्थेमेवो

इ लिङ्

वार्त्ताभाव।



लिङ् भाव ।

प्र० ओ० प० ओ० प० ओ० प० इत्यादि

संज्ञाभाव ।

ओ० प० ए० ओ० प०

विषोषणभाव ।

ओ० प० ओ० प०

स्त्वच्

वार्त्ताभाव ।

प्र० ओ० प० ओ० प० ओ० प० इत्यादि

लोट भाव ।

प्र० ओ० प० ओ० प० ओ० प० इत्यादि

लिङ् भाव ।

प्र० ओ० प० ओ० प० ओ० प० इत्यादि

लोट भाव ।

प्र० ओ० प० ओ० प० ओ० प० इत्यादि

संज्ञा भाव ।

०फ०भ०य०

विशेषण भाव ।

०फ०भ०ए०

इत्य०

वार्त्ता भाव ।

प्र० ०फ०भ०से०ता ०फ०भ०से०थ० ०फ०भ०से०न्ता  
इत्या०

लिङ् भाव ।

प्र० ०फ०भ०से०ता ०फ०भ०से०थ० ०फ०भ०से०न्ता  
इत्या०

संज्ञा भाव ।

०फ०भ०से०थ०

विशेषण भाव ।

०फ०भ०से०मे०

इ लिङ्

वार्त्ता भाव ।

प्र. ὠπτα ॥ ὠφθον ॥ इत्यादि

लोड भाव।

प्र. ὠφθω ὠφθων ὠφθων वा ὠφθωσων ॥

संज्ञाभाव।

ὠφθω

विषोषणभाव।

ὠμμενο

इलोड.

प्र. ὠπτο ॥ ὠφθη ॥ इत्यादि

लड

वाक्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र. ὀρᾶ ὀρᾶτον ὀρᾶσθ ॥ इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र. ὀρᾶται ὀρᾶσθον ὀρᾶσथा ॥ इत्यादि

लोड भाव।

परस्मैपद।

प्र. ὀρᾶῖ ὀρᾶτόν ὀρᾶσῖ इत्यादि

आत्मनेपदा।

प्र. ὀρᾶται ὀρᾶσθῶν ὀρᾶνται इत्यादि

लिट्-भाव।

परस्मैपद।

प्र. ὀρᾶῖ ὀρᾶήτην ὀρᾶήσῃν इत्यादि

आत्मनेपदा।

प्र. ὀρᾶῖτο ὀρᾶσθήν ὀρᾶντο इत्यादि

लोट्-भाव।

परस्मैपद।

प्र. ὀρᾶτω ὀρᾶτων ὀρᾶτωσαν इत्यादि

आत्मनेपदा।

प्र. ὀρᾶσθῶ ὀρᾶσθῶν ὀρᾶσθῶν वा ὀρᾶσ-  
σῶν इत्यादि

संज्ञाभाव।

पर.

ὀρᾶῖ

आ. ὀρθῶσθαι

(विशेषणभावः)

पर. ὀρωντ

आ. ὀρωμενο

लङ्.

परस्मैपद।

प्र. ἑωρᾶ ἑωράτην ἑωρῶν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र. ἑωρᾶτο ἑωρᾶσθην ἑωρᾶντο इत्यादि

एलिट्

वार्त्ताभावः।

प्र. ἑώραχε ἑώραχάτον ἑώραχάσυστα

लेट् भावः।

प्र. ἑώραχη ἑώραχητον ἑώραχῶσυστα

लिट् भावः।

प्र. ἑώραχοι ἑώραχοίτην ἑώραχοιεν इ-

लोडभाव।

प्र-ἔωραχέτω ἔωραχέτων ἔωραχόντων वा  
 χέτωσαν

संज्ञाभाव।

ἔωραχέया

विशेषणभाव।

ἔωραχोट

१ लोड्

प्र-ἔωραχει ἔωραχείτην ἔωραχέσσον

इतिट्

वार्ताभाव।

प्र-ἔωρατα ἔωρασθον इत्यादि

संज्ञाभाव।

ἔωρασθα

विशेषणभाव।

ἔωραμεν

१ लोड्

प्र-ἔωρατο ἔωρασθη इत्यादि

इतिट्

वार्त्ताभाव।

प्र०-०णवपे ०णवपवतव ०णवपवव इत्या

लेट् भाव।

प्र०-०णवपण ०णवपणतव ०णवपवव इत्या

लिङ् भाव।

प्र०-०णवपव ०णवपववतव ०णवपववव इत्या

लोट् भाव।

प्र०-०णवपवव ०णवपववव ०णवपवववव वा  
पववववव

संज्ञाभाव।

०णवपववव

विशेषणभाव।

०णवपवव

२ लोट्

प्र०-०णवपवव ०णवपवववतव ०णवपवववव इत्या

१२५। ०णवपववव ०णवपवववव

०णवपववव से १ लोट् २ लोट् १ लिट् ३ लिट्

१ लोट् ३ लोट् २ लृच् २ लृच् । परन्तु १ लृच्  
२ लृच् मे x के पहिले y आताहै और १  
लिट् ३ लिट् में दूना अभ्यास होता है ।

०I से २ लृट् ।

कृEP से लृट् और लृच् ।

१ लृच्

वार्ताभाव ।

प्र० ἤνευχε ἤνευχέτην ἤνευχον इत्यादि  
लोट्भाव ।

प्र० ἐνέυχη ἐνέυχητον ἐνέυχωσ<sup>ι</sup> इत्यादि  
लिट्भाव ।

प्र० ἐνέυχου ἐνευχούτην ἐνευχού<sup>ε</sup>ν इत्यादि  
लोट्भाव ।

प्र० ἐνευχέτω ἐνευχέτων ἐνευχόντων  
वा <sup>ἐνευχέτων</sup> <sub>ἐνευχόντων</sub>  
संज्ञाभाव ।

ἐνευχεῖν

विशेषणभाव ।



ΕΥΕΥΧΟΝΤΕ

२ लउ३

वार्त्ती भाव ।

प्र. η̄νευχε η̄νευχάτην η̄νευχάων इत्या-  
लोड भाव ।

प्र. ε̄νευχάτω ε̄νευχάτων ε̄νευχάωντων  
खॉतवसाव  
संज्ञाभाव ।

ΕΥΕΥΧΑΙ

विशेषणभाव ।

ΕΥΕΥΧΑΥΤ

२ लिड

वार्त्ती भाव ।

प्र. ε̄νηνοχε ε̄νηνόχων ε̄νηνόχωντων  
लेड भाव ।

प्र. ε̄νηνόχη ε̄νηνόχητων ε̄νηνόχωντων  
लोड भाव ।

प्र. ε̄νηνοχέτω ε̄νηνοχέτων ε̄νηνόχωντων  
खॉतवसाव  
संज्ञाभाव ।

Ε̄νηνοχέων

विशेषणभाव ।

ΕΥΗΥΟΧΟΤ

३ लोट्

प्र.ΕΥΗΥΟΧΕΙ ΕΥΗΥΟΧΕΙΤΗΥ ΕΥΗΥΟΧΕΙΘΩΥ ३

३ लिट्

वार्ताभाव ।

प्र.ΕΥΗΥΕΧΤΑΙ ΕΥΗΥΕΧΘΩΥ इत्यादि

लोट् भाव ।

प्र.ΕΥΗΥΕΧΘΩ ΕΥΗΥΕΧΘΩΥ ΕΥΗΥΕΧΘΩΥ वा  
χθωσων

संज्ञा भाव ।

ΕΥΗΥΕΧΘΑΙ

विशेषणभाव ।

ΕΥΗΥΕΥΜΕΥΟ

३ लोट्

प्र.ΕΥΗΥΕΧΤΟ ΕΥΗΥΕΧΥΘΗΥ इत्यादि

३ लोट्

वार्त्ताभाव ।

प्र. गेवेच्छति गेवेच्छति गेवेच्छति इत्या-

लेट् भाव ।

प्र. एवेच्छति एवेच्छति एवेच्छति इत्या-

लिट् भाव ।

प्र. एवेच्छेति एवेच्छेति एवेच्छेति इत्या-

लोट् भाव ।

प्र. एवेच्छन्त एवेच्छन्त एवेच्छन्त इत्या-

संज्ञाभाव ।

एवेच्छन्त्या

विशेषणभाव ।

एवेच्छन्त

इत्येव

वार्त्ताभाव ।

प्र. एवेच्छेत्स्येति एवेच्छेत्स्येति एवेच्छेत्स्येति इत्या-

लिट् भाव ।

स्येत्स्येति इ-

प्र. एवेच्छेत्स्येति एवेच्छेत्स्येति एवेच्छेत्स्येति इत्या-

स्येत्स्येति इ-

संज्ञाभाव।

ἐνεχθήσεσθε

विशेषणभाव।

ἐνεχθήσομενο

२८६

वार्त्ताभाव।

प्र० οἴσθε οἴσετον οἴσουσε इत्यादि

लिङ्. भाव।

प्र० οἴσθε οἴσοιτην οἴσοιεν इत्यादि

संज्ञाभाव।

οἴσειν

विशेषणभाव।

οἴσουτε

२८६

वार्त्ताभाव।

परस्मैपद।

प्र० φέρετε φέρετον φέρουσε इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र. फέρεται φέρεσθον φέρονται इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र. φέρη φέρητον φέρωσα इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र. φέρηται φέρησθον φέρωσται इत्यादि

लिट् भाव।

परस्मैपद।

प्र. φέροι φεरोίτην φέροισεν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र. φέροιτο φεरोίτην φέροιντο इत्यादि

लोट् भाव।

परस्मैपद।

प्र. φερέτω φερέτων φερόντων वा  
φέτωσαν इत्यादि

आत्मनेपद।

प्र. एἰρήσθω εἰρήσθῶν εἰρήσθων वा σθω  
 ०५५

संज्ञाभाव।

εἰρήσθαι

विशेषणभाव।

εἰρήμ.ε.ν.०

इलोड्.

प्र. εἰρήτο εἰρήσθῆν εἰρήντο इत्यादि

२ लृच्

वार्त्ताभाव।

प्र. ἐπ' ῥήθη ἐπ' ῥήθησιν ἐπ' ῥήθησαν इत्यादि

लेट् भाव।

प्र. ῥήθη ῥήθησιν ῥήθησαν इत्यादि

लिट् भाव।

प्र. ῥήθει ῥήθεισιν ῥήθεισαν इत्यादि

लोड् भाव।

प्र. ῥήθησθε ῥήθησθων ῥήθησθων इत्यादि

संज्ञाभाव।

ἔρρεῖν

विशेषणभाव।

ἔρροοντ

१ लिट्

वाचीभाव।

प्र. εἰρήχε εἰρήχαιον εἰρήχασι इत्यादि

संज्ञाभाव।

εἰρήχεναι

विशेषणभाव।

εἰρήχου

१ लोट्.

प्र. εἰρήχε εἰρήχεται εἰρήχεται इत्यादि

३ लिट्

वाचीभाव।

प्र. εἰρήχαι εἰρήχου εἰρήχου इत्यादि

लोट् भाव।

प्र.ईरुशुवा ईरुशुवान् ईरुशुवान् वा शुवा  
 शुवान्

संज्ञाभावः।

ईरुशुवा

विशेषणभावः।

ईरुशुवो

इलोड्।

प्र.ईरुशुवो ईरुशुवन् ईरुशुवतो इत्यादि

रत्नच

वार्त्ताभावः।

प्र.ईरुशुवन् ईरुशुवन्तु ईरुशुवन्तु इत्यादि

लेट्भावः।

प्र.ईरुशुवन् ईरुशुवन्तो ईरुशुवन्तो इत्यादि

लिट्भावः।

प्र.ईरुशुवन् ईरुशुवन्तु ईरुशुवन्तु इत्यादि

लोड्भावः।

प्र.ईरुशुवन् ईरुशुवन्तु ईरुशुवन्तु इत्यादि





१३०। ΒΑΣΤΑΔ, ΒΑΣΤΑΓ  
 ΒΑΣΤΑΓ से २ लृच् ।

ΒΑΣΤΑΔ से और सब लकार ।

१३१। 'ΕΔ ΚΑΓ

ΚΑΓ से २ लृङ् ।

'ΕΔ से और सब लकार ।

१३२। ΠΙ ΠΟ

ΠΙ से १ लृङ् २ लृट् लृट् लृङ् ।

ΠΟ से १ लिट् ३ लिट् २ लृच् ।

१३३। ΤΡΑΓ ΤΡΩΓ

ΤΡΑΓ से १ लृङ् ।

ΤΡΩΓ से लृट् लृङ् २ लृट् ।

१३४। 'ΕΓΕΡ

का २ लिट् । ἐγρηγούσε ἐγρηγόρατον  
 ἐγρηγόρασε

१३५।

'ΕΔ

का १ लट् । ἐδῆται ἐδῆσθον ἐδῶ-  
νται इत्यादि

१३६।

'ΕΘ

का २ लिट् । ἐλώθε ἐλώθητον ἐλώ-  
θησα इत्यादि

१३७।

'ΕΙΚ

का २ लिट् । वार्ताभाव । ἐοίχε ἐοίχα-  
τον ἐοίχασα

विशेषण । ἐίχον

१३८।

'ΕΔ और ΠΙ

के २ लट् विना σ होने हैं । यथा ἐδῆται  
πίθηται

१३९।

ΠΕΤ (गिर)

का १ लट् । ἐπέσε ἐπέσεται ἐπέσονται  
उसका १ लट् । πέσεται πέσθησθαι  
πέσωνται इत्यादि

१४०।

'ΡΑΓ

का २ लिट् । ἑρρώγε ἑρρώγατον  
ἑρρώγασι इत्यादि

१४१।            IAक

का लट् । θάπτει θάπτετον θάπτ-  
ουσι इत्यादि

३ लिट् τέθαπται τέθαπθον इत्यादि

१४२।            XΓ

का २ लट् । परः χεύσει χεύσετον  
χέουσιν इत्यादि

आः χέεται χέεσθον χέονται इत्यादि

२ लृट् । ἔχει ἔχεάτην ἔχεαν इत्यादि

१४३।            XPE

केवल प्रथम पुरुष में होता है ।

लट् । वार्ताभाव । χρη

लेट् भाव । χρη

लिट् भाव । χρείν

संज्ञाभाव । χρηνα

विषोषाभाव। χρεωντ  
 लट्. εχρησεν वा χρησεν  
 २ लट् χρησεται

अथ नामों का वर्णन।

नवम अध्याय । मूलनामपाठ ।

१४४।

१। संज्ञा ।

ἀγαπα	प्रेम	ἀγροα	ग्रहेर
ἀγκυρα	सिमटी दुईभुजा	ἀγροο	खेत
ἀγκυρα	लंगर	ἀγρων	बलप्रदर्शक यु-
ἀγορα	हाट	ἀεφ	बाध

αετο - मृग  
 Αθηνα - सरस्वती  
 αιδο - लज्जा  
 αιματ - लोह  
 αινο - प्रशंसा  
 αιγ - बकरा  
 αισχες - निन्दा  
 αιων - आयुष  
 αχμα - नोक  
 αλγες - दुःख  
 αλ - लवण  
 αλωπεκ - लोमड़ा  
 αμμο - बालू  
 αμνο - भेमना  
 αμπελο - दाबलता  
 αναγκαι - आवश्यकता  
 ανακτ - राजा  
 ανεμο - वहता हुआ वायु  
 ανερ - पुरुष (नर)

ανθεσ - पुष्प  
 ανθρωπο - मनुष्य  
 αντρο - गुफा  
 απατα - कपट  
 Απολλων - आदित्य  
 αρα - शाय  
 αργυρο - रूपा  
 Αριε - युद्धकादेव  
 αρθρο - देहका गांठ  
 αριθμο - गिनती  
 αριστο - } प्रातःकाल  
 } का भोजन  
 αρχτο - भालू (ऋतु)  
 αρματ - गध  
 αρο - भेमना  
 αρσεναι αρρεν - पुलिङ्ग  
 ασχο - नशाक  
 ασπιδ - फरी  
 αστερτασ (ο,ι,α)

ἄστυ नगर  
 ἄστραπα विजली  
 αὐγα ज्योति  
 αὐλα आंगन  
 ἄφρο फेन  
 ἄχθο भार  
 βασινο कसौटी  
 βασιλευ राजा  
 βια बल  
 βιο जीवन  
 βια चीत्कार  
 βοF वैलवागाव (जो)  
 βορεα उत्तर दिशा वा वायु  
 βραβευ अङ्गीकृत न्यायी  
 βραχιον बाहु  
 βροντα गरज  
 βυβλο जलकासरपत  
 βωμο ऊंची वेदी  
 γα एथिही (जो)  
 γαλακत दूध  
 γαληνα नीला

γαστερ पेट  
 γεφυρα पुल  
 γηρατ बुढ़ा वस्था  
 γιγαν्ट दैत्य  
 γλωσσα जीभ  
 γονατ बुटना  
 γονυ बुटना (जात्रु)  
 γραF हुरी  
 γυναικ स्त्री  
 γωνια कोण  
 δαιμον देव  
 δαχρυ आंसु (अश्रु)  
 δαχτυλο अङ्गुली  
 δανες ऋण  
 δαπανα व्यय  
 δειπνο संध्याकाल  
 काभोजन  
 δελφु योनि  
 δενδρο हल  
 δεσποτα स्वामी  
 δημο प्रजा

Δις	स्वरीराज (यु)	ΕΥΟ	वरस
διχο	न्नाय	Επιηρηεια	दुर्घवहार
διχτυο	जाल	Εργο	कर्म
διψα	प्यास	Εριθ	भृगडा
δολο	छल	Ερμα	बुधवा गणेश
δορυ	द्वज (दारु)	Εσπερα	संध्याकाल
δραχοντ	अतिभयान	Ετες	वरस
	क सर्प	Ευνα	पलंग
δροσο	ओस	Ευρο	पूर्वादिशाकावायु
Εσαρ	वसन्त (॥५॥)	Ζεα	जव
Εγω	मैं (अहम्)	Ζηλο	जयकी इच्छा
Εοαφες	तला	Ζημια	हानि
Εθνες	जाति	Ζηβα	युवावस्था
Ειρηνα	मेल	Ζηλλο	सूर्य
Ελαια	जैतूनकापेड़	Ζημε	हम
Ελεο	दया	Ζημερα	दिन
Ελεφαντ	हाथी (इभ)	Ζηπατ	कलेजा (यकृत)
Ελχεσ	बाध	Ζηρω	आर्य
Ελλαδ	यवनदेश	Ζηχο	शास्त्र
Ελλην	यवन	Ζηο	और
Εθεσ	शक्ति	θαλασσα	समुद्र



βαλπες	उषाता
βαρσες	डाढ़स
θεο	देव
θεμιδ	धर्म
θηρ	वन्य पशु
θορυβο	डल्लड
θρονο	आसन
θυγατερ	पुत्री (डुहिनु)
θυμο	जीव
θυρα	द्वार
θωραχ	चप्रास
εμαντ	नस्मा
εματιο	वल्ल
εο	विष वा मोर्चा
επαο	चोड़ा (अम्भ)
ισχυ	सामर्थ्य
ιχθυ	मत्स्य
καιρο	अवसर
καλαμο	तारपत्र
καμिनो	ननूर
καπνο	धुआँ

χαρα	सिर (शिरस)
καρδια	हृदय
καρπο	फल
καυχα	सुमरउ
κερामο	मट्टी
κερατ	सींग (शृङ्ग)
κερτες	लाम
κεφαλα	सिर
κηραο	वारिका
κηρε	शाम
κηρυα	प्रचारक
κιθαρα	वीणा
κινουνο	जोखिम
κλαρο	फावा
κλεεε	यष्टा
κλειο	कुंजी
κληρο	विही (डालनेकी)
κολακ	हाथलून
κολπο	गोदी
κομα	केटा
κονι	धूलि

χοιρο	विष्टा	λυχο	भेडिया
χοραχ	काक	λυπα	शोक
χορυφα	शिखा	λυχνο	दीपक
χοσμο	क्रम वा जगत	μαρτυρ	साक्षी
κρατες	बल	μαστιγ	कोडा
κρεατ	मांस	μαστο	स्तन
κυοες	कीर्ति	μελες	श्रद्धा
κυκλο	चक्र	μελιτ	मधु
κυν	कुत्ता (सुन)	μεταλλο	खानि
κυοι	कुत्ता (सुन)	μετρο	मात्र
κυρες	अधिकार	μην	मास
κωλο	श्रद्धा	μητερ	माता (मातृ)
κωμο	चकरबा	μηχανα	उपाय
λαο	प्रजागण	μισθο	वेतन
λεοντ	सिंह	μο	सुभ्र
λιθο	पत्थर	μογο	श्रम
λιμεν	बन्दर	μοιχο	परस्त्रीगामी
λιμνα	भील	μορφα	मूर्ति
λιμο	अकाल	μουσα	सरस्वतीगान
λιγο	शान		

πολεμο	युद्ध	σωπα	उपरहना
πολι	नगर (पुरि)	σχελες	जोच और काव
ποταμο	नदी	σχευος	पात्रवा समान
πτερνα	खड़ी	σχηνα	उरा
πυλα	किवाड़	σχια	छाया
πυρ	आग	σχετες	अन्धियारा
πυρο	आग	σπλαγγνο	अनडी
πυργο	बुर्ज	σο	नू
ραβδο	खड़ी	σποδο	राव
ριγες	ढाड़	σταφυλα	गुच्छा
ριλα	जड़	σταχυ	अनाजका बाल
ριν	नाक	στηθος	छाती
ροδο	गुलाब	στοιχο	पंक्ति
σαλο	चञ्चलता	στοματ	मुह
σαρξ	मांस	στρατο	सेना
σεληνα	चन्द्र	στρουθο	चिड़िया
σηματ	चिह्न	συχο	अंजीर
σφενες	शक्ति	σφαιρα	गेदा
σεινα	उपरहना	σφε	देआप
σποηρο	लोहा	σφε	अपना (स्व)
σπο	गोहं	σφω	तमदो (बाम)

σφω	वे दो आप	ὄρατ	जल
σφοαγεδ	मुद्रा	ὄραρ	जल
σχοινο	रस्सा	ὄλο	उत्र
σχοला	अवकाषा	ὄλα	वन
σωματ	देह	ὄμε	जम (ययम)
ταμια	भाङ्गारी	ὄμνο	गीत
ταυρο	सांड	ὄπνο	स्वम
τειχεδ	भित्ति	ὄψεδ	ऊचाई
τεχτον	बढ़ई (तत्त)	φαρμαχο	औषध
τελεδ	अन्त	φεγγεδ	उंजियाला
τερατ	आश्चर्य की बात	φοβο	डाह
τεχνα	शिल्पा	φοβο	भय
τολμα	हियाव	φοιτο	परिभ्रमण
τοξο	धनुष	φρεν	हृदय
τοπο	स्थान	φυλλο	पत्ती
τραγο	बकरा	φωνα	वाणी
τριχ	केश	φωρ	चोर
τυραννο	स्ववर्तीभूज	χαλχο	ताम्बा
	स्वामी	χαριτ	रूपा
ὄ	शुकर	χειλεδ	झोंठ
ὄβρο	बलात्कार	χειματ	जाड़ा (हिम)

χειρ	हाथ (कर)	ὦτ	कान
χην	हंस	२ विशेषण ।	
χθον	भूमि		
χιον	हिम	ἀγαθο	भला
χλευα	दुहा	ἀγιο	पवित्र
χολα	पित्त	ἀγγο	निर्मल
χορο	नाच	ἀθροο	वन
χορτο	घास	ἀκολουθο	अनुगामी
χρονο	समय	ἀκριβες	ठीक
χρυσο	सोना	ἀχρο	उत्तम
χρωτ	चमड़ा	ἀληθες	सत्य
χωρα	देश	ἀλλο	अन्य
ψηφο	कङ्कुर	ἀμεινον	भइतर
ψοφο	रव	ἀμφο	दोनों (उभ)
ψυχα	प्राण	ἀξιο	योग्य
ψωμο	दुकड़ा	ἀπαλο	कोमल
ὦμο	कन्धा	ἀριστερο	बायाँ
ὦνο	मोल	αὐτο	वही वा यही
ὦο	आड़ा	αὐτο	यह
ὦρα	कोई परिमित स- मय	βαθυ	गहिरा

βαρβαρο	लेख	ἐγγυ	निकट
βαρυ	भारी (गुरु)	εἰχοσ	वीस (विंशति)
βελτο	अच्छा	ἐχα	एक
βεβαιο	स्थिर	ἐκατον	सौ (शतम्)
βοηθο	उपकारक	ἐχεινο	वह
βραδυ	धीर	ἐκοντ	सवशीभन
βραχυ	अदीर्घ	ἐλαφρο	हलका
γειτον	प्रतिवासी	ἐλαχυ	छोटा (लघु)
γεροντ	वृद्ध	ἐλευθερο	निर्वन्ध
γλυχυ	मीठा	ἐν	एक
γυμνο	नंगा	ἐννεφα	नौ (नव)
οειν	अमृक	εἶς	छः (षष्)
οεχα	दस (दश)	ἐπτα	सात (सप्त)
οεξιο	दहिना (दक्षिण)	ἐρημο	शून्य
οηλο	प्रगट	ἐρυθρο	लाल
οιαχονο	परिचारक	ἐταιρο	संगी
οουλο	सेवक	ἐτοιμο	सिद्ध
οουο	दो (द्वौ)	εὐθυ	सीधा
ἐ	यह (इ)	εὐρου	चौड़ा

ἡμερο	नम्रस्वभाव	λευχο	श्वेत
ἡγιο	कीमलस्वभाव	μακαρ	धन्य
ἡσσον	वा ἡττον	μακρο	लम्बा
ἡσυχो	निश्चल	μαλαχο	कीमल
θερμο	उष्ण	μεγα	बड़ा (महान)
θηλυ	स्त्रीलिङ्ग	μεγαλο	बड़ा
θρασυ	ढोढा	μελαν	काला
ἰδιο	निज	μεσο	मध्य
ἱερο	दैव	μιο	एक
ἱκαυο	शाक्त	μικρο	छोटा
ἰσο	तुल्य	μονο	अकेला
καθαρο	निर्मल	μυριο	दससहस्र
καινο	नया	μωρο	मूर्ख
καχο	दुःख	νεφο	नया (नव)
καλο	सुन्दर	νεχρο	मृतक
κενο	शून्य	ἑαυθο	पीला
κοιλο	छूछा	ἑενο	परदेशी
κοινο	साधारण	ἑηρο	सूखा
κουφο	हलका	ὀ	जो (घन)
κωφο	गूंगावा बहिः	ὀ	सो (स)

ὄκτω	आठ (अष्टौ)	πυχύο	घन
ὄλιγο	छोड़ा	ῥαόιο	सहज
ὄλο	समूचा (सर्व)	σαφες	स्पष्ट
ὄξυ	तीक्ष्ण	σληηρο	कठोर
ὄρθο	सीधा	σκολιο	ढेड़ा
ὄρφανο	हीन	σοφο	ज्ञानी
ὄσιο	धर्म	στειρο	जसर
ὄύτο	यह	στερεο	ठस (स्थिर)
πανυ	सब	πτενο	सकेत
παχύ	घोटा	σφοδρό	अत्यन्त
πεντε	पांच (पञ्च)	ταυτο	यह
πικρο	कड़ुआ	ταπεινο	नीचा
πιο	चरबी से जो	ταχυ	शीघ्र
	रा (पीवन)	τερε	कोमल
πλατυ	चौड़ा	τεταρ	चार (चतुर्)
ποικιλο	विच	τιν	कौनवा लोई (किम)
πολλο	बहुत	το	तो (तद्)
πολυ	बहुत	τουτο	यह
πραο	कोमलसम्भाव	τραχυ	अडबड
πραυ	कोमलसम्भाव	τρι	तीन (त्रि)
τρεσβυ	तुड़ा	τυफλο	अन्धा



ὄχιες	सुस्थ	ἀλλά	नवरन
ὄγρο	ओदा	+ὀμωψι	दोनों ओर
φαυλο	निकम्मा	ἔν	संदेहवाचक शब्द
φιλο	प्यारा	+ὀνω	ऊपरकी ओर (अनु)
χαλεπο	कठिन	ἀνευ	विना
χειρον:	उष्टर	+ἀντὸ	सम्मुख
χηρο	हीन	+ἀπὸ	हरकी ओर
χιλιο	सहस्र	ἀρα	इस कारण
χλωρο	हरा	ἄρα	प्रश्नवाचक शब्द
χωλο	लंगड़ा	+ἀρτε	तत्परा
ψελε	पतला	αὐ	पीछेकी ओर
ὦχυ	शीघ्र (आशु)	αὐριον	आनेवाला कल (सः)
ὦμο	कच्चा	ἄχρι	तक
		γὰρ	क्योंकि
		γε	निश्चयवाचक शब्द
		ὅδε	परन्तु (त)
		ὀεῦρο	इधर
		ὀη	दृढ़तावाचक शब्द
		+ὀιὰ	विभागवाचक शब्द (हि)
		εἰ	यदि

## ३। अवाय ।

ἀγαν	अत्यन्त		
+ἀγχι	निकट		
ἀεὶ	सर्वदा		
ἄλλοις	सस (अत्म)		

+ ἐξ ἐξ भीतरकी ओर	μέχρι तक
+ ἐξ बाहरकी ओर (उत्)	μή मतवान (मा)
ἐξ ἐξ वहां	ἄν अब
+ ἐν भीतर (नि)	οὐ नहीं
ἐνεκα निमित्त	οὐ हां
ἐπεὶ इसलिये कि	+ ὅψε विलम्बमे
+ ἐπὶ ऊपर (अभि)	+ πάλαι पूर्वकालमे (परा)
εἰτα नदनंतर	+ πάλιν फिर (उनर)
ἐτα अबभी	+ παρὰ पास (परा)
+ ἐξ अक्षीरीतिसे	πέλας निकट
ἢ वा	+ περ अधिक वाचकशब्द
ἢ से (आधिकवाचकशब्द)	περὰ पर
ἢ अबतक	+ περὶ चारों ओर (परि)
ἢ जिसे	+ πρὸ आगे की ओर (प्र)
καὶ औरवाभी (च)	+ πρὸ- पास (प्रति)
+ κατὰ नीचेकी ओर	πῶ अबतक
λίαν अधिककरके	+ σὺν संग (सम)
μάλιστα अत्यन्त	τάχα कदाचित्
μάτην निष्कारण	τε और (च)
μὲν तो	+ ὅπερ ऊपर (ऊपरि)
+ μετὰ मध्यमें	+ ὅπου नीचे (उप)

φεδ वाह	-βλαπδ रूपवाचकशब्द
χαμολι भूईपर	-δई दो (दि)
χωρεις अलग	-δωका रूपावाचकशब्द
χθεις गयाकाल(हयः)	(उर)
ω आह	-γμλ आया (साभि)
-αवा & ऐक्यवाचकशब्द	-νन अभाववाचकशब्द (न)
-αν अभाववाचकशब्द	-τγλε हर

१४५। इन अवयवों में से जिन के पहिले - य-  
हचिह्न हम ने लिखा सो अलग कभी नहीं  
मिलते हैं केवल समासों के आदि में। और  
जिन के पहिले हमने + यह चिह्न लिखा  
है सो अलग भी और समासों में भी मिलते  
हैं। अर्थात् सब अवयव केवल अलग-ही  
मिलते हैं।

दशम अध्याय — नामोंका निर्माण।

१४६। ऊपरिलिखित मूलनामों से अधिक और

बहुत नाम हैं जो क्रियाओं वा और २ नामों से बनते हैं । इन के बनने की रीतियां अब लिखने हैं ।

### १। संज्ञाओं का निर्माण ।

१। कितनी संज्ञाएं धातुओं से ठीक मिलती हैं

यथा कृत्लाक से फूलक रक्त ।

२। कितनी केवल धातु के स्वर को बदल

देती हैं यथा कृदेल से फलय जाला ।

३। कितनी ० वा ०. लगा देती हैं यथा

एतख से एवुखा प्रार्थना ΔΙΔΑΧ

से δίδαχα शिक्षा ΧΑΡ से χαρα

आनन्द ΛΕΓ से λογο वचन ΤΥΓΑ से

τυγα० मार वा मूर्ति जो मारने से बनती

है ΤΡΕΠ से τροπο फेरवा रीति ।

ये संज्ञाएं प्रायः क्रियाही बनती हैं परन्तु

कभी २ कर्त्तों को यथा ΤΡΕΦ से

τροφο फालक ἀνθρώπο और

φεῦ	वाह	-βλαπῶν	दुष्प्राणवाचकशब्द
χαμῶι	भूई पर	-τέ	दो (हि)
χωρῆς	अलग	-ὄ	अभाववाचकशब्द
χθῆς	गयाकाल(ह्यः)		(उर)
ὦ	आह	-ῶ	आधा (साभि)
-ὄ	वेकप्राचकशब्द	-ν	अभाववाचकशब्द (न)
-ὄ	अभाववाचकशब्द	-τῶ	ह्र

१४५। इन अवयवों में से जिन के पहिले - य- हचिह्न हम ने लिखा तो अलग कभी नहीं मिलते हैं केवल समासों के आदि में। और जिन के पहिले हमने + यह चिह्न लिखा है तो अलग भी और समासों में भी मिलते हैं। अतएव सब अवयव केवल अलग ही मिलते हैं।

दशम अध्याय — नामोंका निर्माण।

१४६। ऊपरिलिखित मूलनामों से अधिक और



KIEN से  $\alpha\upsilon\theta\rho\omega\pi\omicron\chi\tau\omicron\upsilon\omicron$  मनुष्य-  
चानी ।

४। कितनी  $\sigma\alpha$  लगाती हैं यथा  $\Delta\omicron K$  से  
 $\theta\omicron\epsilon\alpha$  मतवामहिमा ।

५। कितनी  $\sigma\epsilon$  वा  $\sigma\iota\alpha$  लगाती हैं यथा  $\lambda\epsilon\delta\epsilon\iota$   
उक्ति  $\beta\alpha\sigma\iota$  गति  $\varphi\upsilon\sigma\iota$  भूति अर्थात् स्व-  
भाव वा प्रकृति  $\pi\rho\alpha\delta\epsilon\iota$  कृति  $\theta\upsilon\sigma\iota\alpha$  भूति  
अर्थात् पत्र  $\alpha\epsilon\chi\rho\alpha\sigma\iota\alpha$  अशक्ति । ये प्रत्य-  
य संस्कृत ति से ठीक मिलते हैं और सदा  
क्रियाही को बताते हैं ।

६। कितनी  $\mu\omicron$  वा  $\sigma\mu\omicron$  लगाती हैं यथा  $\Delta E$   
से  $\theta\epsilon\sigma\mu\omicron$  वन्यन  $\Sigma EI$  से  $\sigma\epsilon\iota\sigma\mu\omicron$   
भूई कांघ  $\theta\theta\upsilon\sigma\mu\omicron$  रोदन । ये भी सदा  
क्रियाही को बताते हैं ।

७। कितनी  $\mu\alpha$  लगाती हैं यथा  $MNA$  से  
 $\mu\upsilon\eta\mu\alpha$  स्थिति  $\Gamma NO$  से  $\gamma\nu\omega\mu\alpha$  ज्ञान  
 $II$  से  $\tau\iota\mu\alpha$  मोल वा आदर । ये कभी-  
क्रिया और कभी २ कर्म बताते हैं ।

- ८। कितनी  $\mu\alpha\tau$  लगाती हैं यथा  $\pi\sigma\alpha\gamma\mu\alpha\tau$  कर्म  $\gamma\rho\alpha\mu\mu\alpha\tau$  जो लिखा हुआ है  $\sigma\pi\epsilon-\rho\mu\alpha\tau$  बोया हुआ बीज । ये संस्कृत मनसे ठीक मिलते हैं और सदा कर्म को बताते हैं।
- ९। कितनी  $\epsilon\zeta$  लगाती हैं यथा  $\Gamma EN$  से  $\gamma\epsilon\nu\epsilon\zeta$  जाति ।
- १०। कितनी  $\tau\sigma$  वा  $\epsilon\tau\sigma$  वा  $\alpha\tau\sigma$  लगाती हैं यथा  $\pi\sigma$  से  $\pi\sigma\tau\sigma$  षानी (१ से)  $\mu\epsilon\tau\sigma$  वृष्टि  $\sigma AN$  से  $\theta\alpha\gamma\alpha\tau\sigma$  मत्स्य ।
- ११। कितनी  $\tau\alpha$  वा  $\tau\eta\rho$  वा  $\tau\sigma\rho$  लगाती हैं यथा  $MA\sigma$  से  $\mu\alpha\theta\eta\tau\alpha$  षिष्य  $KPIN$  से  $x\rho\tau\alpha$  विचारक  $\zeta\Omega$  से  $\sigma\omega\tau\eta\rho$  ज्ञाता  $PE$  से  $\rho\eta\tau\sigma\rho$  बक्ता । ये संस्कृत नृ से ठीक मिलते हैं और सदा कर्त्ता को बताते हैं ।
- १२। कितनी उसी अर्थमें  $\epsilon\sigma$  लगाती हैं यथा  $\gamma\rho\alpha\varphi\epsilon\sigma$  खेवक ।
- १३। कितनी  $\tau\rho\sigma$  वा  $\tau\rho\alpha$  वा  $\tau\eta\rho\epsilon\sigma$  लगाती



हैं यथा λουτρον स्नानपात्र, δειχασ-  
τηριο (जो δειχασ कियासे बनाहै और  
यह δειχασ से) न्यायालय । ये संस्कृत ३  
से ठीक मिलतेहैं और क्रिया के स्थान वा  
पात्र की बताते हैं ।

१४। कितनी संज्ञाएं विशेषणों ३ और २  
संज्ञाओं से ८५ के लगाने से बनती हैं यथा  
ἀνερ से ἀνδρεια पौरुष । इसके पहि-  
ले विशेषण का अन्य स्वर लभ होताहै य-  
था σοφο से σοφια परिदित्य ५५५०  
से ५५५ια बुद्धि ५५०० से ५५०ια  
सूझना । और विशेषण के अन्त का १०  
०ια होताहै यथा ἀθανατο से ἀθ-  
ανασια अमृतता ; और εδ और ευ प्राय  
εια होतेहैं यथा ἀληθες से ἀληθεια  
सत्यता βασιλευ से βασιλεια  
राज्य । किन्तु ἀμαθες से ἀμαθια  
शिक्षाहीनता और πενητ दरिद्र से

πΕΥΛΩ दरिद्रता होते हैं ।

१५। कितनी टण्ट लगाती हैं यथा १०० से १००० टण्ट तुल्यता ०Ε९ से ०Ε०० टण्ट देवता । यह संस्कृत ना से मिलता है ।

१६। कितनी σΟΥΥΩ लगाती हैं यथा ०ΙΧΑΙΩ निर्दोष से ०ΙΧ.ΑΙ.Ο.σΟΥΥΩ निर्दोषता । इसके पहिले से विशेषण का अन्य ४ लग्न होता है यथा σΩφροοΥ जिनेन्द्रिय से σΩφρο.σΟΥΥΩ जिनेन्द्रियता । और जब ०-अन्त विशेषणों के ० के पहिले ह्रस्व स्वर है तब अन्त ० ω होता है यथा ०ΥΙ.Ο.σΟΥΥΩ पवित्रता ।

१७। कितनी ΕC लगाती हैं और इस से पहिले से विशेषण का अन्य ७ लग्न होता है यथा βαβ.Υ. से βαβ.ΕC गम्भीरता τΑΧ.Υ. से τΑΧ.ΕC शीघ्रता ।

१८। संख्यावाचक विशेषणों से संज्ञाएं बनती हैं जिनका अर्थ है संख्याका समूह । यथा

μοναὸ एक ὀυαὸ द्वय τριαὸ त्रय  
 τετραὸ चतुष्टय ἑβδόματὸ सप्त  
 δεκαὸ दशान् ἑκατονταὸ सौका सम-  
 ह ।

१९। कितनी संज्ञायं और २ संज्ञाश्रीं से τα  
 के लगाने से बनती हैं यथा πολα से  
 πολιτα नगरवासी ।

२०। कितनी ευ वा ιευ लगाती हैं यथा  
 ἔερο से ἔερευ याजकअल से अल-  
 ८८० मच्छवा ।

२१। कितनी ων लगाती हैं यथा ἔλαα  
 से ἔλαων जैतून के पेड़ों की चारी  
 ἀμπελο से ἀμπελων ज्ञाताहतालया

२२। स्त्रीलिङ्ग के बनाने के लिये α-अन्त  
 पुलिङ्ग संज्ञायं ८० लगाती हैं यथा ὀεσπ-  
 οτα से ὀεσποτα ८० स्वामिनी । οντ-  
 अन्त संज्ञायं αινα लगाती हैं यथा λεο-  
 ५८ से λεαινα सिंहकी स्त्री । ६५-अन्त

संज्ञासं ६६ वा ६७०० लगाती हैं यथा βασιλ-  
 ६६ वा βασιλεσσα राखी ।

२३। देशवासी के बताने के लिये कितने  
 देशों के नाम ६० वा ६० लगाते हैं यथा  
 Ἀθῆνα से Ἀθῆναιο Κορινθιο से  
 Κορινθιο कितने ७० १० ६० लगा-  
 ते हैं यथा Ἀσια से Ἀσιαγο कितने ६०  
 १० ७० ६० लगाते हैं यथा Ἱερο-  
 σολυμα से Ἱεροσολυμιτα Ἰσχα-  
 ρα Ἰσχαριωτα और कितने ६० ल-  
 गाते हैं ।

२४। पुलिङ्ग सन्तान के बताने के लिये  
 पितरों के नाम ६० ७० ६० और  
 स्त्रीसन्तान के बताने के लिये ६० ७०  
 लगाते हैं ।

२५। वृद्धता के बताने के लिये कितनी  
 संज्ञासं ६० ६० ७० ६० ६०  
 लगाती हैं यथा παῖρ से παῖρι छोटा

लड़का  $\theta\eta\rho$  से  $\theta\eta\rho\iota\omicron$  छोटी पशु  
 $\pi\lambda\omicron\iota\omicron$  नावसे  $\pi\lambda\omicron\iota\alpha\rho\iota\omicron$  छोटी नाव  
 $\pi\iota\gamma\alpha\chi$  से  $\pi\iota\gamma\alpha\chi\iota\omicron\iota\omicron$  छोटी पाटी  
 $\pi\alpha\iota\delta$  से  $\pi\alpha\iota\delta\iota\sigma\chi\alpha$  छोटी लड़की।

## २। विशेषणों का निर्माणा ।

१४७।  $\mu\omicron$  से  $\epsilon\mu\omicron$  मेरा  $\sigma\omicron$  से  $\sigma\omicron$  मेरा  
 $\eta\mu\epsilon$  से  $\eta\mu\epsilon\tau\epsilon\rho\omicron$  हमारा  $\omicron\mu\epsilon$  से  
 $\omicron\mu\epsilon\tau\epsilon\rho\omicron$  तुम्हारा (वह श्राव से  $\omicron$  उस  
का अपना  $\sigma\varphi\epsilon$  से  $\sigma\varphi\epsilon\tau\epsilon\rho\omicron$  उनका  
अपना बनते हैं) ।

१४८। २। कितने विशेषण और २ नामों से  
 $\iota\omicron$  वा  $\alpha\iota\omicron$  वा  $\epsilon\iota\omicron$  के लगाने से बनते  
हैं और इन के पहिले से अन्य स्वर कभी २  
निकलता है कभी २ नहीं और कभी २ अ-  
न्य  $\epsilon\sigma$  भी निकलता है। यथा  $\omicron\upsilon\rho\alpha\gamma\omicron$   
से  $\omicron\upsilon\rho\alpha\gamma\iota\omicron$  स्वर्गाय  $\varphi\iota\lambda\omicron$  से  $\varphi\iota\lambda\iota\omicron$

प्यारकरनेवाला  $\chi\upsilon\rho\epsilon\varsigma$  से  $\chi\upsilon\rho\iota\omicron$  अधिकारी वा प्रभु  $\theta\epsilon\omicron$  से  $\theta\epsilon\iota\omicron$  देव  $\acute{\alpha}\gamma\omicron\rho\alpha$  से  $\acute{\alpha}\gamma\omicron\rho\alpha\iota\omicron$  हाटवाला  $\pi\alpha\tau\epsilon\rho$  से  $\pi\alpha\tau\epsilon\rho\iota\omicron$  पेत्र  $\gamma\upsilon\upsilon\alpha\iota\chi$  से  $\gamma\upsilon\upsilon\alpha\iota\chi\epsilon\iota\omicron$  स्त्रीसम्बन्धी।  
 १०  $\sigma\iota\omicron$  होता है यथा  $\pi\lambda\omicron\upsilon\tau\omicron$  से  $\pi\lambda\omicron\upsilon\sigma\iota\omicron$  धनी ।

२। कितने  $\epsilon\omicron$  लगाते हैं यथा  $\chi\rho\upsilon\sigma\omicron$  से  $\chi\rho\upsilon\sigma\epsilon\omicron$  सोनहला । ये विशेषण उस वस्तु को बताते हैं जिससे कोई पदार्थ बना है ।

३। कितने  $\iota\chi\omicron$  वा  $\tau\iota\chi\omicron$  वा  $\alpha\chi\omicron$  लगाते हैं यथा  $KPIN$  से  $\chi\rho\iota\tau\iota\chi\omicron$  विचारक  $\sigma\omega\mu\alpha\tau$  से  $\sigma\omega\mu\alpha\tau\iota\chi$  शारीरिक  $\epsilon\lambda\lambda\eta\upsilon$  से  $\acute{\epsilon}\lambda\lambda\eta\upsilon\iota\chi$  । ये प्रत्यय संस्कृत शक से मिलते हैं ।

४। कितने  $\iota\upsilon\omicron$  लगाते हैं यथा  $\acute{\alpha}\nu\theta\rho\omega\pi\omicron$  से  $\acute{\alpha}\nu\theta\rho\omega\pi\iota\upsilon\omicron$  मानव  $\lambda\iota\theta\omicron$  से  $\lambda\iota\theta\iota\upsilon\omicron$  पत्थर का  $\pi\epsilon\delta\omicron$  से  $\pi\epsilon\delta\iota\upsilon\omicron$

चौडस ὀρεσ से (ὀρεσλυ० कीसन्ती) ὀरेλυ० पहाड़ी ।

५। कितने ल० वा ηλ० वा ωλ० लगाने हैं यथा ΔΙ से ὀελλ०भीरु ἈΜΑΡΤ से ἄμαρτωλ० पापी ।

६। कितने ιμ० वा σιμ० लगाने हैं यथा ὀφελεσ से ὀφेलιμ० लाभदायक ΧΡΑ से χρησιμ० कामके योग्य ।

७। कितने ρ० वा ερ० लगाने हैं यथा οἶχτο से οἶχτρο कर्तुणायोग्य ΣΑΠ से σπρ० सड़ा νοσ० से νοσερ० रोगी ΚΑΝ से φανερ० प्रकाशित ।

८। कितने εντ वा οεντ लगाने हैं यथा χαριτ से χαριεντ शोभायमान αἵματ से αἵματοεντ लहुलहान ।

९। कितने ωθεσ लगाने हैं यथा γου-αρχωθεσ स्त्रीयोग्य ।

१०। कितने  $\mu\sigma\nu$  लगाते हैं यथा  $\acute{\epsilon}\pi\tau\epsilon$  और  $\Sigma\Gamma\Lambda$  से  $\acute{\epsilon}\pi\lambda\sigma\tau\eta\mu\sigma\nu$  बुद्धिमान  $\acute{\epsilon}\lambda\epsilon\sigma$  से  $\acute{\epsilon}\lambda\epsilon\eta\mu\sigma\nu$  दयावान  $\acute{\iota}\mu\eta\alpha$  से  $\mu\nu\eta\mu\sigma\nu$  संभ्रम करनेवाला । यह संस्कृत मत् वत् से मिलता है ।

११। कितने  $\upsilon$  लगाते हैं यथा  $\acute{\eta}\Delta$  से  $\eta\delta\upsilon$  सारवायक ।

१२। कितने  $\alpha\upsilon$  लगाते हैं यथा  $\Gamma\Lambda\Lambda$  से  $\tau\alpha\lambda\alpha\upsilon$  दुःखी ।

१३। कितने  $\tau\lambda\omicron$  लगाते हैं यथा  $\acute{\alpha}\rho$  (जोड़) से  $\alpha\rho\tau\lambda\omicron$  ठीक ।

१४। सब क्रियाओं से दो प्रकार के विशेषण बन सकते हैं । दोनों क्रिया के उस रूप से बनते हैं जो  $\alpha$  रूप में उल्टा होता है ।  
 १। पहली  $\tau\epsilon\sigma$  के लगाने से बनता है । इस का अर्थ ठीक संस्कृत मत् से मिलता है यथा  $\pi\omicron\lambda\eta\tau\epsilon\sigma$  कर्तव्य  $\lambda\epsilon\chi\tau\epsilon\sigma$  वक्तव्य



०६०८६० भर्त्तव्य ।

२। दूसरा प्राय ८० के लमाने से परन्तु थोड़ी क्रियाओं से १० के लगाने से बनता है। इस का अर्थ हीक संस्कृत त वा न से मिलता है यथा  $\beta\alpha\tau\omega$  गत  $\gamma\rho\alpha\mu\tau\omega$  लिखित  $\delta\omega\tau\omega$  दत्त  $\theta\epsilon\tau\omega$  हित  $\chi\lambda\upsilon\omega$  सुप्त  $\iota\tau\omega$  इत  $\lambda\eta\mu\tau\omega$  लब्ध  $\sigma\tau\upsilon\gamma\upsilon\omega$  दिष्ट  $\Delta I$  से  $\delta\epsilon\iota\upsilon\omega$  भीत अर्थात् डरावना  $\Sigma EB$  से  $\sigma\delta\mu\upsilon\omega$  रजित ।

अथ तन्वर्थवाचक और तमवर्थ-  
वाचक विशेषणों का वर्णन ।

२५०। सब गुणावाचक विशेषणों और बद्धत अव्ययों के तन्वर्थवाचक और तमवर्थवाचक रूप होते हैं ।

२५१। तन्वर्थवाचक का अर्थ यह है कि जिस गुण वा गुण के अभाव का चर्चा है सो एक में दूसरे से वा कितने विधिसे दूसरों

से अधिक मिलता है।

142। तमवर्षवाचक का अर्थ यह है कि जिस गुण वा गुण के अभाव का चर्चा है सो एक में और सभी से अधिक मिलता है।

143। तरवर्षवाचक और तमवर्षवाचक दो प्रकार से बनते हैं। कितने विशेषण तरवर्षवाचक के लिये  $\tau\epsilon\rho\omicron$  (तर) और तमवर्षवाचक के लिये  $\tau\alpha\tau\omicron$  (तम) लगाते हैं और कितने विशेषण तमवर्षवाचक के लिये  $\iota\omicron\nu$  (ईयस) और तमवर्षवाचक के लिये  $\iota\omicron\tau\omicron$  (इष्ट) लगाते हैं।

144। जो विशेषण  $\tau\epsilon\rho\omicron$  और  $\tau\alpha\tau\omicron$  लगाते हैं उनमें से जिनके अन्तमें  $\epsilon$  को छोड़ें और कोई व्यंजन है सो अपने और  $\tau\epsilon\rho\omicron$   $\tau\alpha\tau\omicron$  के बीचमें  $\epsilon\sigma$  लगाते हैं यथा  $\sigma\omega\varphi\rho\omicron\nu$  से  $\sigma\omega\varphi\rho\omicron\nu\epsilon\sigma\tau\epsilon\rho\omicron$   $\sigma\omega\varphi\rho\omicron\nu\epsilon\sigma\tau\alpha\tau\omicron$  । और कितने ०-अन्त विशेषण हैं यदि इस ० से पहिले जो स्वर है

के तत्पर्यवाचक के अर्थ में  $\acute{\epsilon}\lambda\alpha\sigma\sigma\omicron\nu$  वा  $\acute{\epsilon}\lambda\alpha\tau\tau\omicron\nu$  और  $\eta\acute{\omicron}\sigma\sigma\omicron\nu$  वा  $\eta\acute{\omicron}\tau\tau\omicron\nu$  का और  $\mu\iota\chi\rho\omicron$  ही के तत्पर्यवाचक के अर्थ में  $\acute{\epsilon}\lambda\alpha\chi\iota\sigma\tau\omicron$  का प्रयोग होता है।

३।  $\chi\alpha\chi\omicron$  के तत्पर्यवाचक और तत्पर्यवाचक के अर्थ में न केवल  $\chi\alpha\chi\iota\omicron\nu$ ,  $\chi\alpha\chi\iota\sigma\tau\omicron$  वरन  $\chi\epsilon\iota\rho\omicron\nu$ ,  $\chi\epsilon\iota\rho\iota\sigma\tau\omicron$  और  $\eta\acute{\omicron}\sigma\sigma\omicron\nu$  वा  $\eta\acute{\omicron}\tau\tau\omicron\nu$   $\eta\acute{\omicron}\chi\iota\sigma\tau\omicron$  का प्रयोग होता है।

१५५।  $\acute{\epsilon}\chi\alpha$  के केवल तत्पर्यवाचक और तत्पर्यवाचक का प्रयोग होता है।  $\acute{\epsilon}\chi\alpha\tau\epsilon\rho\omicron$  का अर्थ है दोनों में प्रत्येक।  $\acute{\epsilon}\chi\alpha\sigma\tau\omicron$  का अर्थ है वृत्त में प्रत्येक।

१६०।  $\acute{\epsilon}$  (यह) के तत्पर्यवाचक ही का प्रयोग होता है।  $\acute{\epsilon}\tau\epsilon\rho\omicron$  का अर्थ है दूसरा अर्थात् दोही में दूसरा।

अथ संख्यावाचक विशेषणों का अर्थ

१११। ऊपरिलिखित संख्यावाचक विशेषणों से ये भी बनते हैं ।

२। ἑνδεκά ग्यारह δεκά वाह द्वाद-  
 σκαλέκα तेरह τεσσαρες चादह  
 चौदह πεντε καλέκα पन्द्रह ἑξκα-  
 λέκα सोलह इत्यादि ।

३। τριάχοντα तीस τεσσαράχοντα  
 चालीस πεντηχονταपचास ἑξήχοντα  
 साठ ἑξήκομηχονταसतर ἑβδομηχοντα  
 असी ἑνενήχοντα नव्वे ।

४। ὀκταχόστο दोसौ ἑπταχόστο तीन-  
 सौ τετραχόστο चारसौ πενταχόστο  
 पांच सौ इत्यादि ।

११२। कमप्रकाशक संख्यावाचक विशेषण ऊपर-  
 लिखित संख्यावाचक विशेषणों से प्रायः १०  
 के लगाने से बनते हैं यथा τρεῖς तीस-  
 र τετραῖς चौथा πεμπεῖς पांचवाँ

ἑξατο सड़वां ἑνατο मौवां ὀεκατο दस  
 वां εἰκοστο वासवां τριακοστο ती-  
 सवां πεντηχοστο पचासवां ἑκατο-  
 στο सौवां ὀεκατοστο दस सौवां  
 χιλιστο हजारवां μυριοστο दस-  
 हजारवां इत्यादि ।

(६३) परन्तु प्रथम का नाम ἑν से नहीं क-  
 ता है क्वम πρὸ कात्मवर्धवाक है । द्वि-  
 त्तीय का नाम ὀυὸ कात्मवर्धवाक है  
 अर्थात् ὀεωτερο । और सप्तम का नाम  
 ἑβδὸμο और अष्टम का नाम ὀγδ-  
 ०० है ।

१६४ । πλῶο के लगाने से गुणन लचक  
 विशेषण होते हैं यथा ἑπλῶο पचस-  
 णा ὀεπλῶο दोशुणा τετραπλῶο  
 चारगुणा इत्यादि ।

३। अथयों का निर्माण ।

(८५) १। कितने अव्यय क्रियाओं से  $\theta\eta\nu$  के लगाने से बनते हैं यथा  $KPTB$  से  $\kappa\rho\acute{\upsilon}\beta\theta\eta\nu$  चुनरीतिसे  $\lambda MEIB$  से  $\alpha\mu\omicron\lambda\beta\theta\eta\nu$  पारी पारी ।

२। कितने क्रियाओं से  $\tau\iota$  लगाने से बनते हैं यथा  $\acute{o}\nu\omicron\mu\sigma\tau$  से ( $\acute{o}\nu\omicron\mu\alpha\tau\tau\iota$  की सन्धी)  $\omicron\nu\omicron\mu\alpha\sigma\tau\iota$  नाम लेके  $E\lambda\lambda\eta\nu$  से  $\acute{e}\lambda\lambda\eta\nu\iota\acute{o}$  ध्वनभाषाबोलना और  $\acute{e}\lambda\lambda\eta\nu\iota\sigma\tau\iota$  ध्वनभाषामें ।

३। कितने संज्ञाओं से  $\iota$  का  $ε\iota$  के लगाने से बनते हैं यथा  $\pi\alpha\nu\omicron\iota\kappa\iota$  समस्तों से  $\pi\alpha\nu\theta\eta\mu\epsilon\iota$  समस्त लोगसमेत ।

४। कितने  $\iota\epsilon$  लगाने हैं यथा  $\mu\omicron\gamma\omicron$  से  $\mu\omicron\gamma\iota\epsilon$  वा  $\mu\omicron\lambda\iota\epsilon$  अम वा कठिनतासे ।

५। कितने अव्यय और २ अव्ययों से बनते हैं । यथा

αὐτὸ से αὐτοῦ किर । ἄνω से ἄνω ऊपर ।  
 οὐ से οὐρανὸς दो दुकड़े में ।

ἐν से ἐνθῶν भीतर ।

ἐξ से ἐξω और ἐξτὸς बाहर ।

ἐν से ἐσθῶ भीतर ।

κατὰ से κατὰ नीचे ।

μετα से μεταξὺ मध्यमें ।

περὶ से περίρθε चारों और ।

πέρα से πέραν पार ।

πρὸ से πρῶτε औरको πρῶτον  
 गया परसों πρὶν पहिले ।

ἐν और ἄν मिलके ἐνῶν परि होताहै ।

१८६। ἰσ और ἵμερα मिलके ἰσμερον  
 आज होताहै ।

१८७। Δεῦρο का अर्थ क्रिया के मध्यप्र-  
 रुच के एकवचन के लोट भाव काहोता  
 है अर्थात् इधर या । इस कारण से उसका

बहुवचन  $\text{ॐ६०८६}$  अर्थात् इधर आओ भी होता है।  
 १६८। सबतरवर्षवाचक विशेषणों के क्रीवलिनङ्ग-  
 के कर्ता वा कर्म के एकवचन और सब तमव-  
 र्षवाचक विशेषणों के उसी लिङ्ग के उन्हीं कारकों  
 के बहुवचन का प्रकारवाचक अव्यय के अर्थ  
 में प्रयोग होता है यथा  $\text{१०६६८८०१}$  और स-  
 च्छीरीतिसे  $\text{१११८०८६}$  मत्वसे नूनरीति से  
 अर्थात् किसी रीतिसे नहीं ।

१६९। व्यष्टिसूचक संख्यावाचक अव्यय प्रायः मू-  
 ल संख्यावाचक विशेषणों से  $\text{१८६}$  के लगाने  
 से बनते हैं यथा  $\text{८६८०६१८६}$  चार बार  
 $\text{६१८८०१८६१८६}$  सौ बार । परन्तु तीनवार  
 का नाम  $\text{८०६}$  से केवल  $\text{६}$  के लगाने से ब-  
 ना है । दोवार  $\text{०६६}$  एकवार  $\text{६१८६}$  है ।

१७०।  $\text{०००}$  अल्पप्रणान्वित स्वरों के पहिले  
 $\text{००१}$  और महाप्रणान्वित स्वरों के पहिले  
 $\text{००१}$  होता है ।

१७१।  $\text{०१}$  वा  $\text{०६}$  संस्कृत स से ठीक मिलता



प) एकट्ठा निकलें

एक साथ और

और  $0.0000$  समान

व्यंजनके पहिले  $\alpha$  होता

अतः में अन् व्यंजनके पहिले

$\alpha \gamma$

एकादश अध्याय — संज्ञाओं के रूप ।

२७६ । संज्ञा और विशेषणों के रूप लिङ्ग वचन कारक के अन्तर को प्रगट करने हैं संज्ञा और विशेषण का अन्तर यह है कि प्रत्येक संज्ञा किसी विशेष लिङ्ग की है और प्रत्येक विशेषण तीनों लिङ्ग का हो सकता है । जब हम नामों के रूपों का नाम लेंगे तब संज्ञा और विशेषणों के रूप समझना चाहिये क्यों कि अवयवों के रूप नहीं हैं ।

२७७ । कारक तो मन की भावना में अति वदन्त वरन कदाचित् अगाय हो सकते हैं परन्तु यवन भाषा में इन के पाँचही पृथक् २ रूप हैं अर्थात् कर्ता कर्म सम्बन्ध अधिकरणा सम्बोधन ।

२७८ । सम्बन्ध कारक में अथादान का भी अर्थ है वरन जानपड़ता है कि यही उस

१८५। कर्म का एकवचन प्रायः  $\alpha$  से होता है  
 $\nu$  से ब्रजत नहीं।

१८६।  $\sigma\sigma$  प्रत्यय स्वरादिक शब्दों के पहिले आ  
 के  $\sigma\sigma\nu$  होता है।

१८७। स्त्रीवलिङ्ग नामों के विषयमें दो बातें स्मर-  
 ण राधे।

१। कर्ता कर्म सम्बोधन प्रत्येक वचनमें समा-  
 नहोते हैं।

२। वङ्गवचन में इन तीन कारकों के अन्तमें  
 $\alpha$  है।

अथ उदाहरण।

१८८। पुलिङ्गवा स्त्रीलिङ्ग संज्ञा  $\alpha\lambda$ ।

कर्ता	$\alpha\lambda\sigma$	$\alpha\lambda\epsilon$	$\alpha\lambda\epsilon\sigma$
कर्म	$\alpha\lambda\alpha$	$\alpha\lambda\epsilon$	$\alpha\lambda\alpha\sigma$
सम्ब.	$\alpha\lambda\sigma\sigma$	$\alpha\lambda\sigma\iota\nu$	$\alpha\lambda\omega\nu$
अधि-	$\alpha\lambda\epsilon$	$\alpha\lambda\sigma\iota\nu$	$\alpha\lambda\sigma\alpha$
सन्धो-	$\alpha\lambda\sigma$	$\alpha\lambda\epsilon$	$\alpha\lambda\epsilon\sigma$

१८५। उलिङ्ग संज्ञा खोराख।

क०	खोराखे	खोराखे	खोराखेस
क०	खोराखा	खोराखे	खोराखास
स०	खोराखोस	खोराखोइन	खोराखोइन
अ०	खोराखि	खोराखोइन	खोराखेइ
स०	खोराखे	खोराखे	खोराखेस

१८६। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा सारख।

क०	सारखे	सारखे	सारखेस
क०	सारखा	सारखे	सारखास
स०	सारखोस	सारखोइन	सारखोइन
अ०	सारखि	सारखोइन	सारखेइ
स०	सारखे	सारखे	सारखेस

१८७। इतिव लिङ्ग संज्ञा वापु।

क०	वापु	वापुए	वापुआ
क०	वापु	वापुए	वापुआ
स०	वापुओस	वापुओइन	वापुओइन
अ०	वापुओ	वापुओइन	वापुओसि
स०	वापु	वापुए	वापुआ

१२२। कर्ता के एकवचन और अधिकरण के बहुवचन को छोड़के और सब रूपों में ये प्रत्यय प्रायः इसी नियम के अनुसार लगते हैं परन्तु इन दो रूपों में प्रायःकालन कुछ नियम विरुद्धता होती है। इस के तीन कारण हैं।

१। इन दो प्रत्ययों के आदि में ० है और यह अन्तर छोड़े ही वंजनों से मिल सकता है प्रायः वंजनों के उपशान्त आके चाहे वह श्राप लग्न होता है चाहे वह रहके दूसरे वंजन को बुझाता है। अधिकरण के बहुवचन में सदा यही दशा होती है पर कर्ता के एकवचन में किसीनाम की यह दशा होती है किसी की वह।

२। यवन भाषा में वंजनों में से केवल ०५० शब्द के अन्त में रह सकते हैं इसकारणसे जल्ल नाम के अन्त में चाहे प्रत्यय के

सभाव के कारण से चाहे  $\epsilon$  के लग्न होने से और कोई व्यंजन है तब चाहे लग्न होता है चाहे इन तीनों में से एक बन जाता है ।

३। उल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग नामों के कर्ता-के एकवचन का स्वर प्रायः दीर्घ होता है ।

१२३। उल्लिङ्ग संज्ञा  $\theta\eta\rho$  का  $\epsilon$  प्रत्यय कर्ता के एकवचन में लग्न होता है ।

क. $\theta\eta\rho$	$\theta\eta\rho\epsilon$	$\theta\eta\rho\epsilon\varsigma$
क. $\theta\eta\rho\alpha$	$\theta\eta\rho\epsilon$	$\theta\eta\rho\alpha\varsigma$
स. $\theta\eta\rho\omicron\varsigma$	$\theta\eta\rho\omicron\iota\upsilon$	$\theta\eta\rho\omicron\iota\upsilon\upsilon$
स. $\theta\eta\rho\iota$	$\theta\eta\rho\omicron\iota\upsilon$	$\theta\eta\rho\omicron\iota$
स. $\theta\eta\rho$	$\theta\eta\rho\epsilon$	$\theta\eta\rho\epsilon\varsigma$

१२४। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा  $\sigma\omega\mu\alpha\tau$  का अन्त व्यंजन कर्ता और कर्म के एकवचन में और स. अधिकरण के बहुवचन में लग्न होता है ।

क. $\sigma\omega\mu\alpha$	$\sigma\omega\mu\alpha\tau\epsilon$	$\sigma\omega\mu\alpha\tau\omicron\iota\upsilon$
क. $\sigma\omega\mu\alpha$	$\sigma\omega\mu\alpha\tau\epsilon$	$\sigma\omega\mu\alpha\tau\alpha$
स. $\sigma\omega\mu\alpha\tau\omicron\varsigma$	$\sigma\omega\mu\alpha\tau\omicron\iota\upsilon$	$\sigma\omega\mu\alpha\tau\omicron\iota\upsilon\upsilon$

अ. σῶματι σώματων σώμασι  
 स. σῶμα σώματι σώματα  
 १५५। उल्लिङ्ग संज्ञा ὄαιμον का स्वर वीच  
 होता है ।

क. ὄαιμων	ὄαιμονε	ὄαιμονες
क. ὄαιμονα	ὄαιμονε	ὄαιμονας
स. ὄαιμονος	ὄαιμόνῳ	ὄαιμόνων
अ. ὄαιμονι	ὄαιμόνῳ	ὄαιμοσι
स. ὄαιμον	ὄαιμονε	ὄαιμονες

१५६। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा φρεν की वही दशा  
 होती है ।

क. φρεν	φρένε	φρένες
क. φρένα	φρένε	φρένας
स. φρενός	φρενοῖν	φρενῶν
अ. φρενι	φρενοῖν	φ्रेसि
स. φρέν	φρένε	φρένες

१५७। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा φωτ ट को जब अ-  
 न्य होता है तब ट से बदल देता है ।

क०	φῶς	φῶτε	φῶτα
क०	φῶς	φῶτε	φῶτα
स०	φωτὸς	φῶτοις	φῶτων
अ०	φωτὶ	φῶτοις	φῶσι
स०	φῶς	φῶτε	φῶτα

१९८। पुलिङ्ग संज्ञा λEOVT कर्त्ता के एकाव-  
चन में T को छुड़ाना है और अधिकरण के  
वद्भवचन में OVT को OYσ कर देना है।

क०	λέων	λέοντε	λέοντες
क०	λέοντα	λέοντε	λέοντας
स०	λέοντος	λέοντοις	λέοντων
अ०	λέοντι	λέοντοις	λέουσι
स०	λέον	λέοντε	λέοντες

१९९। पुलिङ्ग संज्ञा ὀδOVT के नौ रूप में  
OVT को OYσ कर देना है।

क०	ὀδοὺς	ὀδόντε	ὀδόντες
क०	ὀδόντα	ὀδόντε	ὀδόντας
स०	ὀδόντος	ὀδόντοις	ὀδόντων



अ० ὄδόντι ὄδόντοιν ὄδούσι  
 स० ὄδον ὄδόντε ὄδόντες

२०० । पुलिङ्ग संज्ञा ἴमान्ति वृत्त को छुड़ा-  
 ती है ।

क० ἴμας ἴमान्ते ἴमानτες  
 क० ἴमानτα ἴमानτε ἴमानτας  
 स० ἴमानτος ἴमानτοιν ἴमानτων  
 अ० ἴमानτι ἴमानτοιν ἴमांसि  
 स० ἴमान ἴमानτε ἴमानτες

२०१ । स्त्रीलिङ्ग संज्ञा νύχτι इन्द्रो रूपों में  
 वृत्त को छुड़ाती है ।

क० νύξ νύχτε νύχτες  
 क० νύχτα νύχτε νύχτας  
 स० νύχτος νύχτοιν νύχτων  
 अ० νύχτι νύχτοιν νύξ̄ि  
 स० νύξ νύχτε νύχτες

२०२ । स्त्रीलिङ्ग संज्ञा γαλακτι कर्त्तृ  
 और कर्म के एकवचन में वृत्त को छुड़ा-  
 ती है ।

क०	γάλα	γάλαχτε	γάλαχτα
क०	γάλα	γάλάχτε	γάλαχτα
स०	γάλαχτος	γαλάχτοι	γαλάχτων
अ०	γάλαχτι	γαλάχτοι	γάλαξι
स०	γάλα	γάλάχτε	γάλαχτα

२०३ । पुलिङ्ग संज्ञा पाठो कर्त्ता और सम्बोधन के एकवचन और अधिकरण के बहुवचन में ठ को छुड़ाती है ।

क०	παῖς	παῖδε	παῖδες
क०	παῖδα	παῖδε	παῖδας
स०	παῖδες	παῖδοῖν	παῖδων
अ०	παῖδι	παῖδοῖν	पासि
स०	पाῖ	παῖδε	παῖδες

२०४ । पुलिङ्ग संज्ञा पाठो कर्त्ता और सम्बोधन के एकवचन में ० ठ को ०७ कर देता है ।

क०	ποῦς	πόδε	πόδες
क०	πόδα	πόδε	πόδας
स०	πόδες	ποδοῖν	ποδων

अ. ποδὲ ποδοῖν ποσὲ  
 स. ποῦ πόδε πόδες

२०५। पुलिङ्ग. वा स्त्रीलिङ्ग. संज्ञा ὀρνιθ इ-  
 न दो रूपों में θ को छुड़ानी है।

क. ὀρνις ὀρνιθε ὀρνιθεσ  
 क. ὀρνιθα ὀρνιθε ὀρνιथाσ  
 स. ὀρνιθος ὀρνιθων ὀρνιθων  
 अ. ὀρνιθι ὀρνιθων ὀρνισι  
 स. ὀρνις ὀρνιθε ὀρνιθεσ

२०६। वज्रतर्-अन्त ओर-अन्त नामों  
 के कर्म के एकवचन में ठा था की  
 सन्ती v भी होसकताहै। यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ἔριδ ।

क. ἔρις ἔριδε ἔριδες  
 क. ἔρις वा ἔριδα ἔριδε ἔριदास  
 स. ἔριδος ἔριδων ἔριδων  
 अ. ἔριδι ἔριδων ἔरिसι  
 स. ἔρις ἔριδε ἔριδες

२००।  $\pi\alpha\tau\epsilon\rho$   $\mu\eta\tau\epsilon\rho$   $\theta\upsilon\gamma\alpha\tau\epsilon\rho$   $\gamma\alpha\sigma\tau\epsilon\rho$   
 सम्बन्ध और अधिकरण के एकवचन में  $\epsilon$   
 को छुड़ाते हैं और अधिकरण के बहुवचन  
 में न केवल ऐसा करते हैं वरन्  $\rho$  के पी-  
 छे  $\alpha$  भी ले लेते हैं। यथा

क.	$\pi\alpha\tau\eta\rho$	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho\epsilon$	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho\epsilon\varsigma$
क.	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho\alpha$	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho\epsilon$	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho\alpha\varsigma$
स.	$\pi\alpha\tau\rho\varsigma$	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho\omicron\upsilon\upsilon$	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho\omega\upsilon$
अ.	$\pi\alpha\tau\rho\acute{\iota}$	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho\omicron\upsilon\upsilon$	$\pi\alpha\tau\rho\acute{\alpha}\sigma\iota$
स.	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho$	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho\epsilon$	$\pi\alpha\tau\acute{\epsilon}\rho\epsilon\varsigma$

२०८। बहुत नामों का अन्त्य व्यंजन स्वरादिक  
 प्रत्यय के पहिले लग्न होता है और तब प्राय  
 दोनों स्वर संधि के नियमानुसार मिल जाते  
 हैं।

२०५। स्त्रीवलिङ्ग संज्ञारं  $\chi\epsilon\rho\alpha\tau$   $\chi\rho\epsilon\alpha\tau$   
 $\gamma\eta\rho\alpha\tau$   $\tau\epsilon\rho\alpha\tau$   $\tau$  को छुड़ाती हैं।  
 यथा

स. ई०१००८ ई०१००१ ई०१००१  
 अ. ई०१००८ ई०१००१ ई०१००८  
 स. ई०१००८ ई०१००१ ई०१००१

२१३ । स्त्रीलिङ्ग संज्ञाएं αἰδो φελο केवल  
 एकवचन की होती हैं स्वरादिक प्रत्ययों में  
 संधि होता है और सम्बोधन में ०८ होता  
 है । यथा

क. αἰδῶς क. αἰδῶ स. αἰδῶ  
 अ. αἰδοῦ स. αἰδοῦ

२१४ । लिन नामों के अन्तमें ८ वा ० है  
 उनके केवल कर्ता कर्म सम्बोधन के व  
 द्ववचन में संधि होता है । और उन के कर्म  
 के एकवचन में प्राय १ प्रत्यय लगता है  
 यथा

दुलिङ्ग संज्ञा ἔχθου ।

क. ἔχθου क. ἔχθου ἔχθου  
 क. ἔχθου ἔχθου ἔχθου  
 स. ἔχθου क. ἔχθου ἔχθου

अ. ἔχθου ἔχθουεν ἔχθουσι

स. ἔχθου ἔχθουε ἔχθουε

२५। परन्तु साधारण भाषा में इन नामों का  
 ८ और ७ कर्ता कर्म सम्बोधन के एकत्व  
 न को छोड़के और सब रूपों में ε बन जा  
 ता है और तब अधिकरण के एकत्व न में  
 भी संधि होता है। और पुलिङ्ग और स्त्रीलि  
 ङ्ग नामों के सम्बन्ध के ου और ουν का  
 ० दीर्घ होता है। यथा

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा πολυι ।

क. πόλις πόलेε πόलेις

क. πόλιν πόलेε πόलेις

स. πόλεωσ πόलेων πόलेων

अ. πόλει πόलेων πόलेσι

स. πόλι πόलेε πόलेις

वर्द्धी संज्ञा ἄστυι ।

क. ἄστυ ἄστεε ἄστη

क. ἄστυ ἄστεε ἄστη

स. ἄστεοσ ἄστεοιν ἄστεων

अ. ἄσται ἄστέον ἄστέον

स. ἄστυ ἄστέε ἄστυ

२१६ । तिन नामों के अन्त में εϽ है उनका  
 εϽ वैसाही अधिकरण के बहुवचन को को  
 इके और तल उक्त रूपों में ε होता है ।  
 किन्तु सम्बन्ध के केवल एकहीवचन के प्र-  
 त्यय का ० दीर्घ होता है । और कर्म के  
 बहुवचन में प्रायः सधि नहीं होता है ।  
 और कर्म के एकवचन का प्रत्यय α है ।  
 यथा

क. βασιλεὺς βασιλέε βασιλεῖς

क. βασιλέα βασιλέε βασιλεῖσσι

स. βασιλέως βασιλέων βασιλέων

अ. βασιλεῖ βασιλέον βασιλεῦσι

स. βασιλεῦ βασιλέε βασιλεῖς

अथ द्वितीय प्रकार के प्रत्यय ।

२१७ । द्वितीय प्रकार की सब संज्ञाओं के अ-  
 न्तमें ० है और उन के प्रत्यय ० से मि-

लके ऐसे होते हैं ।

प्रकारचम	दिवचन	बहुवचन
संज्ञाएँ सही स्त्री	तीनों लिङ्ग	उभोरही स्त्री
कर्ता ०५ ०४	०	०६ ०
कर्म ०४	०	००५ ०
सम्बन्ध ००	०६४	०४
बुद्धि ०	०६४	०६५
संज्ञा ६ ०४	०	०६ ०

२१८ । अविचार करने से देव पड़ता है कि ०५  
 ० ० ०६४ ००५ ० ०४ ०६५ और  
 कर्म का ०४ ये प्रत्यय पहिले प्रकार के प्रत्य  
 यों के साथ ० मिलने से बने हैं । परन्तु  
 स्त्रीव लिङ्ग का ०४ और ०० ६ ०६ ये प्र  
 त्यय कहां से आये हैं सो स्पष्ट नहीं है ।  
 केवल ०० के विषय में जान पड़ता है  
 कि मूल रूप ००६० या ओरपीछे ०६ ल  
 ग हुआ ।

अथ उदाहरण ।



२१९ । उलिङ्ग. संज्ञा अ०न०प० ।

क०	अ०न०θρωπος	अ०न०θρω०πω	अ०न०θρωποι
क०	अ०न०θρωπον	अ०न०θρω०πω	अ०न०θρω०पु०ς
स०	अ०न०θρω०पु०	अ०न०θρω०पु०ι०ν	अ०न०θρω०प०ν
अ०	अ०न०θρω०πῶ	अ०न०θρω०पु०ι०ν	अ०न०θρω०प०ς
स०	अ०न०θρω०π०ε	अ०न०θρω०πω	अ०न०θρω०पु०ι

२२० । स्त्रीलिङ्ग. संज्ञा ०० ।

क०	०००८	०००	०००३
क०	०००ν	०००	०००५
स०	०००ϋ	०००ι०ν	०००ν
अ०	०००ῶ	०००ι०ν	०००ις
स०	०००ε	०००	०००ι

२२१ । स्त्रीलिङ्ग. संज्ञा फ०ल० ।

क०	फ०ल०ν	फ०ल०	फ०ल०
क०	फ०ल०ν	फ०ल०	फ०ल०
स०	फ०ल०ου	फ०ल०ι०ν	फ०ल०ν
अ०	फ०ल०ῶ	फ०ल०ι०ν	फ०ल०ι०ς
स०	फ०ल०ν	फ०ल०	फ०ल०

२२२। ०६० का सम्बोधन ०६६ नहीं वरन् ०६०६ है ।

२२३। जिन नामों के अन्तमें ६० और ०० है उस में से बङ्गों में नियमानुसार संधि होता है किन्तु श्रीवल्लिङ्ग के कर्त्ता आदि के बङ्गवचन के ६० और ०० दोनों ० होते हैं ।

उल्लिङ्ग संज्ञा १०० ।

इ० १००६	१०	१०६
क० १००१	१०	१०६
स० १००	१०१	१०१
अ० १०	१०१	१०६
स० १००	१०	१०६

श्रीवल्लिङ्ग संज्ञा ०६०६० ।

इ० ०६००१	०६०	०६०
क० ०६००१	०६०	०६०
स० ०६००	०६०१	०६०१
अ० ०६०	०६०१	०६०६
स० ०६००१	०६०	०६०

क. μαθητήν	μαθητὰ	μαθητάς
स. μαθητοῦ	μαθηταῖν	μαθητῶν
अ. μαθητῶ	μαθηταῖν	μαθηταῖς
स. μαθητὰ	μαθητὰ	μαθηταῖ

### स्त्रीलिङ्ग संज्ञा ψυχα।

क. ψυχή	ψυχὰ	ψυχαῖ
क. ψυχῆν	ψυχὰ	ψυχὰς
स. ψυχῆς	ψυχαῖν	ψυχῶν
अ. ψυχῆ	ψυχαῖν	ψυχαῖς
स. ψυχῆ	ψυχὰ	ψυχαῖ

२२१ । और छोड़ी स्त्रीलिङ्ग. α- अन्त संज्ञाएँ केवल सम्बन्ध और अर्थ करण के एकद्वय में α को η कर देते हैं और किसी रूप में नहीं । यथा

### स्त्रीलिङ्ग संज्ञा δόξα

क. δόξα	δόξα	δόξαι
λόξαν	δόξα	δόξας

स. ठोँङ्ग	ठोँङ्ग	ठोँङ्ग
अ. ठोँङ्ग	ठोँङ्ग	ठोँङ्ग
स. ठोँङ्ग	ठोँङ्ग	ठोँङ्ग

हादया अथाय । नियमविरुद्ध संज्ञापं ।

२३० । ए॒ग — मु॒० — व॒० — ण॑मे ।

क. ए॒ग — व॒० वा॒ व॒० । ण॑मे॒ऽऽ

क. मु॒० वा॒ ए॒मे॒ । व॒० वा॒ व॒० । ण॑मे॒ऽऽ

स. मु॒० वा॒ ए॒मु॒० । व॒० व॒० वा॒ व॒० । ण॑मे॒०

अ. मु॒० वा॒ ए॒मु॒० । व॒० व॒० वा॒ व॒० । ण॑मे॒०

२३१ । श॒० — श॒० — उ॑मे ।

क. श॒० । श॒० वा॒ श॒० । उ॑मे॒ऽऽ

क. श॒० । श॒० वा॒ श॒० । उ॑मे॒ऽऽ

स. श॒० । श॒० व॒० वा॒ श॒० । उ॑मे॒०

अ. श॒० । श॒० व॒० वा॒ श॒० । उ॑मे॒०

२३२ । श॒० (सो) — श॒० — श॒० ।

क.	σφωε	पु वास्ती σφεῖς	क्रीव- σφέα
क. ई	σφωε	σφᾶς	σφέα
स. ०७	σφωεῖν		σφῶν
अ. ०८	σφωεῖν		σφῆσ

कर्ता का एकवचन नहीं है ।

२३३ । ᾶνερ ।

सब स्वरादिक प्रत्ययों के पहिले ε के स्थाने ० रावता है और अधिकरण के ब-  
हुवचन में न केवल ऐसा करता है बरन  
ρ के पीछे α भी लेता है । यथा

क. ᾶνερ	ᾶνερε	ᾶνερεσ
क. ᾶνερα	ᾶνερε	ᾶνερασ
स. ᾶνερòς	ᾶνερòν	ᾶνερῶν
अ. ᾶνερῆ	ᾶνερòν	ᾶνερᾶσ
स. ᾶνερ	ᾶνερε	ᾶνερεσ

२३४ । क्रीवलिङ्ग-संज्ञापं γονατ-γону।  
ठोरपट-ठोरु। γονύ और ठोरु निष्प्र-

त्यय रूपों में होता है ।

$\gamma\omicron\upsilon\alpha\tau$  और  $\theta\omicron\omicron\alpha\tau$  और सब रूपों में ।

२३५ ।

$\gamma\omicron\upsilon\alpha\lambda\chi\iota$

कर्ता के एकवचन में न केवल  $\omicron$  प्रत्यय को छुड़ाता है बरन  $\chi$  को भी छुड़ाके  $\alpha\lambda$  को  $\eta$  से बदल देता है ।

२३६ ।

$\Delta\epsilon\Phi$

एकही वचन में होता है और कर्ता और सम्बोधन में  $\Sigma\epsilon\upsilon$  बन जाता है ।

२३७ ।

स्त्रीलिङ्ग संज्ञा  $\chi\lambda\epsilon\lambda\theta$

के कर्म के बहुवचन में  $\theta$  छूटके  $\chi\lambda\epsilon\lambda\tau$  भी हो सकता है ।

२३८

$\chi\upsilon\upsilon - \chi\upsilon\omicron\upsilon\iota$  ।

$\chi\upsilon\omicron\upsilon\iota$  कर्ता और सम्बोधन के एकवचन में होता है ।

$\chi\upsilon\upsilon$  और सब रूपों में ।

२३९ ।

$\mu\alpha\rho\tau\omega\rho$  ।

कर्ता के एकवचन में  $\mu\alpha\rho\tau\upsilon\varsigma$  होता है  
और कर्म के एकवचन में  $\mu\alpha\rho\tau\upsilon\upsilon$   
भी हो सकता है ।

२४०। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा  $\nu\alpha\tilde{\nu}$

के रूप ऐसे होते हैं ।

क.  $\nu\alpha\tilde{\nu}\varsigma$        $\nu\tilde{\eta}\tilde{\epsilon}$        $\nu\tilde{\eta}\tilde{\epsilon}\varsigma$

क.  $\nu\alpha\tilde{\nu}\upsilon$        $\nu\tilde{\eta}\tilde{\epsilon}$        $\nu\alpha\tilde{\nu}\varsigma$

स.  $\nu\tilde{\epsilon}\tilde{\omega}\varsigma$        $\nu\tilde{\epsilon}\tilde{\omega}\tilde{\nu}$        $\nu\tilde{\epsilon}\tilde{\omega}\tilde{\nu}$

स.  $\nu\tilde{\eta}\tilde{\epsilon}$        $\nu\tilde{\epsilon}\tilde{\omega}\tilde{\nu}$        $\nu\alpha\upsilon\sigma\tilde{\epsilon}$

स.  $\nu\alpha\tilde{\nu}$        $\nu\tilde{\eta}\tilde{\epsilon}$        $\nu\tilde{\eta}\tilde{\epsilon}\varsigma$

२४१। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा  $\pi\upsilon\rho - \pi\upsilon\rho\omicron$  ।

$\pi\upsilon\rho$  एकवचन में और द्विवचन में होता  
है ।

$\pi\upsilon\rho\omicron$  बहुवचन में ।

२४२। स्त्रीलिङ्ग संज्ञा  $\omicron\tilde{\delta}\alpha\tau - \omicron\tilde{\delta}\omega\rho$

$\omicron\tilde{\delta}\omega\rho$  विद्यमान रूपों में होता है ।

$\omicron\tilde{\delta}\alpha\tau$  और सब रूपों में ।

२४३ । स्त्रीलिङ्ग संज्ञा  $\chi\epsilon\epsilon\rho$

सम्बन्ध और अधिकरण के द्विवचन और अधि-  
करण के बहुवचन में  $\chi\epsilon\theta$  होता है ।

२४४ । स्त्रीवलिङ्ग संज्ञा  $\omega\tau$

निष्प्रत्यय रूपों में  $\theta\upsilon\epsilon\varsigma$  होता है ।

### त्रयोदश अध्याय-विशेषणों के रूप ।

२४५। प्रत्येक विशेषण मानों तीन संज्ञाओं का सम्बन्ध है । कितने विशेषण केवल पहिले प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं कितने केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं कितने दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं और कितने पहिले और तीसरे प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं ।

#### प्रथम भाग ।

अथ उनविशेषणों का वर्णन जो केवल पहिले प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं ।

२४६ ।

अथ उदाहरण ।



२४८ । जिन तरवर्षवाचक विशेषणों के अन्तमें  
 ०१ है वे कर्म के एकवचन और कर्ता कर्म  
 सम्बोधन के बहुवचन में १ को छुड़ा सकते  
 हैं तब संधि होता है । यथा

ΧΡΕΙΤΤΟΥ ॥

उल्लिङ्ग वास्वील्लिङ्ग स्त्रीव      तीनों लिङ्ग

क.	ΧΡΕΙΤΤΩΥ -ΤΟΥ	ΧΡΕΙΤΤΟΥΕ
क.	ΧΡΕΙΤΤΟΥΑ -ΤΟΥ	ΧΡΕΙΤΤΟΥΕ
स.	वा ΧΡΕΙΤΤΩ	ΧΡΕΙΤΤΟΝΟΥ
स.	ΧΡΕΙΤΤΟΥΟΣ	ΧΡΕΙΤΤΟΝΟΥ
स.	ΧΡΕΙΤΤΟΥΙ	ΧΡΕΙΤΤΟΥΕ
स.	ΧΡΕΙΤΤΟΥ	ΧΡΕΙΤΤΟΥΕ

उवा स्त्री      स्त्रीव

ΧΡΕΙΤΤΟΥΕΣ	-ΤΟΥΑ
वा ΧΡΕΙΤΤΟΥΣ	वा ΤΤΩ
ΧΡΕΙΤΤΟΥΑΣ	-ΤΟΥΑ
वा ΧΡΕΙΤΤΟΥΣ	वा ΤΤΩ
ΧΡΕΙΤΤΟΝΩΥ	

ΧΡΕΙΤΤΟΑΙ

ΧΡΕΙΤΤΟΥΕΣ	-ΤΟΥΑ
वा ΧΡΕΙΤΤΟΥΣ	वा ΤΤΩ

## द्वितीय भाग ।

अथ उनविशेषणों का वर्णन जो केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं

२४१ । वृद्धन् ०-अन्त विशेषण ऐसे होते हैं । यथा गंसुख० ।

उंवा स्त्री स्त्रीच नीनो लि उंवास्त्री स्त्रीच

क. गंसुखोऽ गंसुखोऽ	गंसुख्वा	गंसुखोः	गंसुखा
क. गंसुखोऽ	गंसुख्वा	गंसुखोऽ	गंसुखा
स. गंसुखोऽ	गंसुखोऽ	गंसुखोऽ	गंसुखा
अ. गंसुखोऽ	गंसुखोऽ	गंसुखोऽ	गंसुखा
स. गंसुखे गंसुखोऽ	गंसुख्वा	गंसुखोः	गंसुखा

२४० । छोटे विशेषण ०-अन्त नहीं चरन् ० को दीर्घ करके ०-अन्त होते हैं । यथा  
 ईलेऽ प्रसन्न ।

उंवास्त्री स्त्रीच नीनो लि उंवास्त्री स्त्रीच लिङ्

क. ईलेऽ ईलेऽ	ईलेऽ	ईलेऽ	ईलेऽ
क. ईलेऽ	ईलेऽ	ईलेऽ	ईलेऽ

स.	ἔλεω	ἔλεῶν	ἔλεων
अ.	ἔλεῶ	ἔλεῶν	ἔλεῶς.
स.	ἔλεως	ἔλεων	ἔλεω

### तृतीय भाग ।

अथ उन विशेषणों का वर्णन जो दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं ।

२५१ । ये सब विशेषण पुलिङ्ग और स्त्रीव-  
लिङ्ग में दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं  
और स्त्रीलिङ्ग में तीसरे प्रकार के प्रत्यय ।

२५२ । इन सब विशेषणों को हम सबीला के  
निमित्त ० - अन्त तो कहने हैं परन्तु सब  
एक ही तो उनके पुलिङ्ग और स्त्रीवलिङ्ग ० -  
अन्त हैं और उन के स्त्रीलिङ्ग α - अन्त ।  
यथा सब एक ही तो दो विशेषण हैं  $\alpha\lambda\omicron$   
और  $\alpha\lambda\alpha$  किन्तु सबीला के लिये हम  
दोनों को  $\alpha\lambda\omicron$  कहते हैं मानों एक ही  
होता ।

२५३ । इन विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग यदि α के पहिले ρ वा ० को छोड़के और कोई स्वर हो तो α को नहीं बदल देता है पर यदि ० वा ρ को छोड़के और कोई व्यंजन हो तो समस्त एकवचन में α को γ से बदल देता है । यथा

० - अनिश्चितस्वरान्वित विशेषण γ Ε ० ।

	उ. लिङ्ग	स्त्री	उ. लिङ्ग	स्त्री
क.	γ Ε 0 ς	γ Ε 0 ν	γ Ε α	γ Ε ω
क.	γ Ε 0 ν	γ Ε α ν	γ Ε ω	γ Ε α
स.	γ Ε 0 ο	γ Ε α ς	γ Ε 0 ι ν	γ Ε 0 ι ν
अ	γ Ε ω	γ Ε α	γ Ε 0 ι ν	γ Ε α ι ν
स.	γ Ε 0 ς	γ Ε 0 ν	γ Ε α	γ Ε ω

उ. लिङ्ग	स्त्री	स्त्री
γ Ε 0 ι	γ Ε α	γ Ε α ι
γ Ε 0 ο ς	γ Ε α	γ Ε α ς
γ Ε ω ν		γ Ε ω ν
γ Ε 0 ι ς		γ Ε α ι ς
γ Ε 0 ι	γ Ε α	γ Ε α ι

स.	ἔλεω	ἔλεω̄ν	ἔλεων
अ.	ἔλεω̄	ἔλεω̄ν	ἔλεω̄ς
स.	ἔλεω̄ς	ἔλεω̄ν	ἔλεω

### तृतीय भाग ।

अथ उन विशेषणों का वर्णन जो दूसरे और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं ।

२५१ । ये सब विशेषण पुलिङ्ग और स्त्रीव-  
लिङ्ग में दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं  
और स्त्रीलिङ्ग में तीसरे प्रकार के प्रत्यय ।

२५२ । इन सब विशेषणों को हम सबीला के  
निमित्त ० - अन्त तो कहते हैं परन्तु सब  
पुछो तो उनके पुलिङ्ग और स्त्रीवलिङ्ग ० -  
अन्त हैं और उन के स्त्रीलिङ्ग α - अन्त ।  
यथा सबरुद्धो तो दो विशेषण है  $\alpha\lambda\omicron$   
और  $\alpha\lambda\alpha$  किन्तु सबीला के लिये हम  
दोनों को  $\alpha\lambda\omicron$  कहते हैं मानों पकही  
होता ।

२५३ । इन विशेषणों का स्त्रीलिङ्ग यदि  $\alpha$  के पहिले  $\rho$  वा  $\sigma$  को छोड़के और कोई स्वर हो तो  $\alpha$  को नहीं बदल देता है पर यदि  $\sigma$  वा  $\rho$  को छोड़के और कोई अंगन हो तो समस्त एकवचन में  $\alpha$  को  $\eta$  से बदल देता है । यथा

० - अनिश्चितस्वरान्वित विशेषण  $\nu\epsilon\sigma$  ।

	उ.लिङ्ग	स्त्री	पु.वा.स्त्री	स्त्री
क.	$\nu\epsilon\sigma\sigma$	$\nu\epsilon\sigma\nu$	$\nu\epsilon\alpha$	$\nu\epsilon\omega$ $\nu\epsilon\alpha$
क.	$\nu\epsilon\sigma\nu$	$\nu\epsilon\alpha\nu$	$\nu\epsilon\omega$	$\nu\epsilon\alpha$
स.	$\nu\epsilon\sigma\sigma$	$\nu\epsilon\alpha\sigma$	$\nu\epsilon\sigma\iota\nu$	$\nu\epsilon\alpha\iota\nu$
श्च	$\nu\epsilon\omega$	$\nu\epsilon\alpha$	$\nu\epsilon\sigma\iota\nu$	$\nu\epsilon\alpha\iota\nu$
स.	$\nu\epsilon\epsilon$	$\nu\epsilon\sigma\nu$	$\nu\epsilon\alpha$	$\nu\epsilon\omega$ $\nu\epsilon\alpha$

उ.लिङ्ग	स्त्री	पु.वा.स्त्री	स्त्री
$\nu\epsilon\sigma\iota$	$\nu\epsilon\alpha$	$\nu\epsilon\alpha\iota$	$\nu\epsilon\alpha\iota$
$\nu\epsilon\sigma\sigma\sigma$	$\nu\epsilon\alpha$	$\nu\epsilon\alpha\sigma$	$\nu\epsilon\alpha\sigma$
$\nu\epsilon\omega\nu$		$\nu\epsilon\omega\nu$	$\nu\epsilon\omega\nu$
$\nu\epsilon\sigma\iota\sigma$		$\nu\epsilon\alpha\iota\sigma$	$\nu\epsilon\alpha\iota\sigma$
$\nu\epsilon\sigma\iota$	$\nu\epsilon\alpha$	$\nu\epsilon\alpha\iota$	$\nu\epsilon\alpha\iota$

वज्रवचन

क. χρύσεον χρυσοῦ χρύσεα χρυσαῖ  
 χρύσεαι χρυσαῖ ἑयादि

चतुर्थ भाग ।

अथ उनविंशोद्योगों का वर्णन जो पहिले अंश  
 र तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाने हैं ।

२५६ । इनसभों के पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग पहिले  
 से प्रकारके प्रत्यय लगाने हैं और स्त्रीलिङ्ग  
 तीसरे प्रकार के प्रत्यय । और स्त्रीलिङ्ग आ  
 ने अन्तभाग को ऊछ न ऊछ वदलके ये  
 प्रत्यय लगाताहै ।

२५७ । ७-अन्त विंशोद्योगों का स्त्रीलिङ्ग ७ वें  
 टक करदेताहै । यथा

गुंठे ७ सखदायक ।

पु	प्र	नं	पवा	स्त्री
क. गुंठे ७	गुंठे ७	गुंठे ७	गुंठे ७	गुंठे ७
क. गुंठे ७	गुंठे ७	गुंठे ७	गुंठे ७	गुंठे ७
स.	गुंठे ७	गुंठे ७	गुंठे ७	गुंठे ७





वङ्गवचन

क. χρύσοι χρυσοῖ χρύσεα χρυσᾶ  
 χρύσεια χρυσαῖ इपादि

चतुर्थ भाग ।

अथ उनविंशोद्योगों का वर्णन जो पहिले और तीसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं ।

२५६ । इनसभों के पुलिङ्ग और स्त्रीपुलिङ्ग पहिले प्रकारके प्रत्यय लगाते हैं और स्त्रीलिङ्ग तीसरे प्रकार के प्रत्यय । और स्त्रीलिङ्ग आने अन्तभाग को ऊह न ऊह बदलके ये प्रत्यय लगाता है ।

२५७ । ७-अन्त विधोद्योगों का स्त्रीलिङ्ग ७ को ६८ करदेता है । यथा

गुंठे ७ सखिदायक ।

पु	शु	नग	पुपाकी	स्त्री
क. गुंठे ७८	गुंठे ७	गुंठे ६८	गुंठे ६६	गुंठे ६९
क. गुंठे ७८	गुंठे ७	गुंठे ६८	गुंठे ६६	गुंठे ६९
स.	गुंठे ६०८	गुंठे ६९	गुंठे ६९	

अ. ἦδέῃ ἦδέῃα ἦδέῃων ἦδέῃαι

स. ἦδέῃ ἦδέῃα ἦδέῃε ἦδέῃαι

यु. <sup>यु.</sup> ἦδέῃ <sup>स्त्री</sup> ἦδέῃ <sup>स्त्री</sup> ἦδέῃ

ἦδέῃ <sup>यु.</sup> ἦδέῃ <sup>स्त्री</sup> ἦδέῃ

ἦδέῃων ἦδέῃων

ἦδέῃαι ἦδέῃαι

ἦδέῃε ἦδέῃαι ἦδέῃαι

२५८। सब ४८-अन्त क्रिया के विशेषणों का

स्त्रीलिङ्ग ४८ को ० बनाके पूर्वगतभार को

बढ़ाना है अर्थात् ५४ को ५० ६४

को ६० ०४ को ०५० कर देता है। और

उस के सम्बन्ध और अधिकरण के एकदम

न में ५ १ से बदल जायेंगे। यथा

२ लङ् के विशेषण आदि का विशेषण

ἦδέῃαι

यु. स्त्री. स्त्री. यु. यु. यु.

ἦδέῃαι - ἦδέῃ - ἦδέῃαι - ἦδέῃαι - ἦδέῃαι

ἦδέῃαι - ἦδέῃαι - ἦδέῃαι - ἦδέῃαι - ἦδέῃαι

घ.	प्रा॒खान्तो॑ः-खा॒शः	खान्तो॑न्-खा॒सन्
झ.	प्रा॒खान्ति॑ - खा॒श	खान्तो॑न्-खा॒सन्
ञ.	प्रा॒खा॒न् - खा॒सा	खान्ते॑ खा॒सा

पु.	क्री॒व	क्री॒षी.
-खा॒न्ते॑	-खा॒न्ता॑	-खा॒सा॑
-खा॒न्ता॑ः	-खा॒न्ता॑	-खा॒सा॑ः
-खा॒न्त॑व्य	-खा॒स॑व्य	
-खा॒सा॑	-खा॒सा॑ः	
-खा॒न्ते॑	-खा॒न्ता॑	-खा॒सा॑

२ लृच् का विशेषण भाव लेखन्ते ।

पु.	क्री॒व	क्री॒षी.	पु॒ण॒क्री॒षी.	क्री॒षी.
क.	ले॒ख॒न्ते॑	-थे॒न्-थे॒षा॑	-थे॒न्ते॑	-थे॒षा॑
क.	ले॒ख॒न्ता॑	-थे॒न्-थे॒षा॑न्	-थे॒न्ते॑	-थे॒षा॑
स.	ले॒ख॒न्तो॑ः	-थे॒षा॑ः	-थे॒न्तो॑न्-थे॒षा॑न्	
झ.	ले॒ख॒न्ति॑	-थे॒षा॑	-थे॒न्तो॑न्-थे॒षा॑न्	
ञ.	ले॒ख॒न् - थे॒षा॑	-थे॒न्ते॑	-थे॒षा॑	

पु.	क्री॒व.	क्री॒षी
-थे॒न्ते॑	-थे॒न्ता॑	-थे॒षा॑

-θέντας -θέντα -θείσαι  
 θέντων θεισῶν  
 θεῖσι -θείσαι  
 -θέντες -θέντα -θείσαι

लट् के विशेषणभावका परस्मैपद बालवन्त

क०	βαίνων -वोव-वουσα	-वोवते -वούσα
क०	βαίνοντα -वोव-वουσαν	-वोवते -वούσα
स०	βαίνοντος -वούσης	-वόντοι -वούσαι
अ०	βαίνοντες -वούση	-वόντοι -वούσαι
स०	βαίνον -वουσα	-वोवते -वούसा

-वोवτες -वोवτα -वουσαι  
 -वोवτας -वोवτες -वούσας  
 -वόντων -वουσῶν  
 -वουσι -वούσαι  
 -वόντες -वोवτα -वουσαι

२५१ । अ० लट्-अन्त विशेषण पालवन्त, भी  
 वैसाही होता है । यथा

क०	πᾶς	πάν	πᾶσα	πάντε	πάσα
क०	πάντα	πᾶν	πᾶσαν	πάντε	πάσα
ख०	παντός	πάσης	παντοῖν	πάσαιν	
ख०	παντί	πάση	παντοῖν	πάσαιν	
ख०	πᾶν	πάσα	πάντε	πάσα	

πάντες πάντα πάσαι  
 πάντας πάντα πάσας  
 πάντων πασῶν  
 πᾶσι πάσαις  
 πάντες πάντα πάσαι

२४०। और ०न्त - अन्त विशेषण ६०न्त  
भी वैसाही होताहै। यथा

क०-६०न्त ६०न्त ६०न्तसा | ६०न्तते ६०न्तसा |  
६०न्तते ६०न्तता ६०न्तसा इत्यादि

२४१। परन्त ६०न्त - अन्त विशेषणों का  
जो क्रिया के विशेषण नहीं हैं स्त्रीलिङ्ग  
६०न्त को ६०न्त से बदल देताहै।

यथा अीमातोएन्ट ।

क. अीमातोसि - तोएन् - तोएसा | तोएन्ते - तोस-  
सा | तोएन्तेस - तोएन्ता - तोएसा इत्यादि ।

२६२ । मेलां तालां तरेण क  
स्त्रीलिङ्ग. अ को अि षीर ए को ए८ करयेते  
इं । यथा

क.	μέλας - λαν - λαινο		- λανε - λαινα
ख.	μέλανα - λαν - λαιναν		- λाने - λαιना
ग.	μέλανος - λαινης		- λानोस् - लानोस्
घ.	μέλανι - λαινη		- लानोस् - लानोस्
ङ.	μέλαν - लािना - लाने - लािना		

- लानेस - लािना - लािना

- लानास - लािना - लािना

- लािन् - लािन्

- लासि - लािनास

- लानेस - लािना - लािना

२६३ । ०८-बना क्रिया के विशेषणों का स्त्री-  
लिङ्ग. ०८ के होने ०८ बना होता है । यथा

५ लिट् का विशेषणभाव ईदोत् ।

क. ईदώς	ईदός	ईदु᳚᳚	ईदότε	ईदु᳚᳚
ख. ईदότα	ईदός	ईदु᳚᳚	ईदότε	ईदु᳚᳚
ग. ईदότης	ईदु᳚᳚	ईदότης	ईदότης	ईदु᳚᳚
घ. ईदो᳚᳚	ईदु᳚᳚	ईदो᳚᳚	ईदो᳚᳚	ईदु᳚᳚
ङ. ईदός	ईदु᳚᳚	ईदो᳚᳚	ईदो᳚᳚	ईदु᳚᳚

ईदότες ईदो᳚᳚ ईदु᳚᳚  
 ईदो᳚᳚ ईदो᳚᳚ ईदु᳚᳚  
 ईदो᳚᳚ ईदु᳚᳚  
 ईदो᳚᳚ ईदु᳚᳚  
 ईदो᳚᳚ ईदो᳚᳚ ईदु᳚᳚

चतुर्दश अध्याय— नियमविरुद्ध विशेषण ।

२५४ । πολυ—πολλο । μεγα—  
 μεγαλο ।

πολυ और मेगा पुलिङ्ग और स्त्री-  
 वलिङ्ग के कर्ता और कर्म के एकवचन  
 में होते हैं । πολλο और μεγαλο

श्रीर सप्त रूपों में । यथा

क. πολὺς πολὺ πολλή | πολλῶ πολλὰ

क. πολὺν πολὺ πολλήν | πολλῶ πολλὰ

πολλοὶ πολλὰ πολλά

πολλοὺς πολλὰ πολλά इत्यादि

क. μέγας μέγα μεγάλη | μεγάλῳ μεγάλα

क. μέγαν μέγα μεγάλην | μεγάλῳ μεγάλα

μεγαλοὶ - ला - लाः

इत्यादि

- लους - ला - लाः

२८५ । ए० — मी० ।

ए० उलिङ्ग. श्रीर क्रीडालिङ्ग. में रोदा है ।

मी० त्वीलिङ्ग. में । यथा

क. εἷς ए० मी०

क. ἑνᾶ ए० मी०

स. ἑνός ए० मी०

अ. ἑνὶ ए० मी०

स. ἑν ए० मी०



२१६                      ००० और ०५००

द्विवचनमें केवल दूसरे प्रकार के प्रत्यय लगाते हैं। परन्तु इस से अधिक ००० कर्ता और कर्म में वैसाही रह भी सकता है अर्थात् ०००। और सम्बन्ध और अधिकरण में बहवचन के पहिले प्रकार के प्रत्यय भी लगा सकता है अर्थात् ०००̄ν ०००̄ι।

२१७।

τρϋ

के पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग कर्ता के ६ और कर्म के १० दोनों को ६८ बनाते हैं। यथा

	प और स्त्री	ह्री व.
क.	τρϋ̄ῑς	τρ̄ί̄α
क.	τρϋ̄ῑς	τρ̄ί̄α
स.	τρ̄ί̄ων	
अ.	τρ̄ί̄ο̄ῑ	
स.	τρϋ̄ῑς	τρ̄ί̄α

२१८

τ̄ε̄τ̄ᾱρ

समासों में τ̄ε̄τ̄ρ̄α होगा है और जब समा

स में नहीं आता है तब साधारण भाषा में  
 τασσαρ होता है ।

२६५ ।                      τλν

का ν स्त्रीलिङ्ग के निश्चय रूपों में लभ-  
 होता है । यथा

प्रओरस्त्री	क्वी	तीनोलिङ्ग	उओरस्त्री	स्त्रीव
क-τλς	τλ	τλνε	τλνς	τλν
क-τλνα	τλ	τλνε	τλνς	τλν
स	τλνς	τλνολν		τλνν
श्	τλν	τλνολν		τλν

२७० । αὐτο ἔχειν ο ἰ (जो) το τουτο

ἄλλο के स्त्रीव लिङ्ग के कर्ता और कर्म के  
 एकवचन में चाहता था कि ν के स्थाने τ  
 प्रत्यय लगे जैसा बहूत संस्कृत सर्वनामों  
 में तू लगता है । परन्तु यह τ लभ हुआ  
 है । यथा

क-ἄλλος ἄλλο ἄλλη ἄλλω ἄλλα  
 क-ἄλλον ἄλλο ἄλλην ἄλλω ἄλλα

ἄλλοι ἄλλα ἄλλαι  
ἄλλους ἄλλα ἄλλας

इत्यादि

२७१ । τὸ ——— ὀ (तो) ।

ὀ पुलिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन और बहुवचन में होता है । τὸ और τῶν रूपों में । और इस से अधिक पुलिङ्ग का प्रत्यय ८ लग्न होता है जैसा संस्कृत में सः नहीं लग्न स होता है । यथा

क०	ὀ	τὸ	ῆ	τῶ	τᾶ	οἱ	ταῖ	αἱ
क०	τοῦ	τῶν	τῆν	τῶ	τᾶ	τοῦς	τᾶς	ταῖς
स०	τοῦ	τῆς	τῶν	ταῖν	ταῖν	τῶν	ταῖν	
स्य०	τῷ	τῇ	τοῖν	ταῖν	τοῖς	ταῖς		

२७२ । αὐτο-οὐτο-ταυτο-τουτο ।

αὐτο स्त्रीलिङ्ग के कर्त्ता के एकवचन और बहुवचन में होता है ।

ταυτο स्त्रीलिङ्ग के इन रूपों और सम्बन्ध के बहुवचन को छोड़के और सब

रूपों में और स्त्रीलिङ्ग के कर्ता और कर्म के बद्धवचन में होता है ।

००८० पुलिङ्ग के कर्ता के एकवचन और बद्धवचन में होता है ।

१००८० पुलिङ्ग के और सब रूपों में और स्त्रीलिङ्ग के सम्बन्ध के बद्धवचन में होता है और स्त्रीलिङ्ग के उन सब रूपों में जिनमें १००८० नहीं होता है । यथा

क. ००८०९	१००८०	००८१	१००८०	१००८०
क. १००८०	१००८०	१००८१	१००८०	१००८०
स.	१००८०	१००८१	१००८०	१००८०
अ.	१००८०	१००८१	१००८०	१००८०

००८० १००८० ००८०  
 १००८० १००८० १००८०  
 १००८० १००८०  
 १००८० १००८०

१०३ ।

००८०

के तीनों लिङ्ग के कर्ता और कर्म के एक-

वचन में  $\alpha$  प्रत्यय लगाता है। यथा

क. $\delta\epsilon\tilde{\nu}\alpha$	$\delta\epsilon\tilde{\nu}\epsilon$	$\delta\epsilon\tilde{\nu}\epsilon\varsigma$	$\delta\epsilon\tilde{\nu}\alpha$
क. $\delta\epsilon\tilde{\nu}\alpha$	$\delta\epsilon\tilde{\nu}\epsilon$	$\delta\epsilon\tilde{\nu}\alpha\varsigma$	$\delta\epsilon\tilde{\nu}\alpha$
स. $\delta\epsilon\tilde{\nu}\omicron\varsigma$	$\delta\epsilon\tilde{\nu}\omicron\iota\nu$	$\delta\epsilon\tilde{\nu}\omega\nu$	
अ. $\delta\epsilon\tilde{\nu}\iota$	$\delta\epsilon\tilde{\nu}\omicron\iota\nu$	$\delta\epsilon\tilde{\nu}\sigma$	

२७४ ।  $\pi\acute{\alpha}\nu\tau\epsilon$  से लेके  $\acute{\epsilon}\chi\alpha\tau\omicron\nu$  तक सब संख्यावाचक विशेषण और नितने संख्यावाचक विशेषण इन के मिलाने से बने हुए हैं उन सभी के वही रूप रहते हैं और कोई रूप उन का नहीं होता है।

पञ्चदश अध्याय — उपसर्गों का वर्णन ।

२७५ । उपसर्गों का मूल अर्थ प्रायः समासों में मिलता है परन्तु समासों में भी और जब अलग आते हैं तब भी यह अर्थान्तराधिक सरल जाता है।

२७६ ।  $\acute{\alpha}\mu\phi\acute{\iota}$

का मूल अर्थ दोनों ओर है यथा  $\alpha\mu\phi\lambda\omicron\gamma\omicron$  जिस की दोनों ओर बात हो सकती है अर्थात् सन्दिग्ध । परन्तु बहुत शब्दों में उसका अर्थ चारों ओर है यथा  $\alpha\mu\phi\epsilon$  और  $\epsilon$  (एहिन) मिलके  $\alpha\mu\phi\epsilon\epsilon$  होता है जिसका अर्थ है अपनी चारों ओर एहिनना अर्थात् ओढ़ना ।

$\alpha\mu\phi\epsilon$  अलग होके प्राय कर्म के साथ आता है और उस का अर्थ है पास का लगभग यथा  $\omicron\iota\ \alpha\mu\phi\epsilon\ \tau\omicron\nu\ \Pi\alpha\upsilon\lambda\omicron\nu$  जो लोग पौल के संसर्ग थे वा हैं ।

७७ ।  $\alpha\nu\alpha$

का मूल अर्थ है ऊपर की ओर यथा  $\alpha\nu\alpha\sigma\tau\alpha$  उठना  $\alpha\nu\alpha\beta\alpha$  बहना  $\alpha\nu\alpha\tau\epsilon\lambda\epsilon$  उगना । इस से फिरने का अर्थ निकला है क्योंकि इस संसार की दशा नदी के समान है जो सदा नीचे की ओर

वली जमीनी है यथा  $\acute{\alpha}\nu\alpha\lambda\alpha$  फिर जीना  $\acute{\alpha}\nu\alpha\gamma\epsilon\rho\nu\alpha$  फिर से जन्माना । इससे फिर २ करने और इससे अच्छी रीति से करने का अर्थ निकलता है । यथा  $\acute{\alpha}\nu\alpha\chi\rho\iota\nu$  लीक २ विचार करना  $\acute{\alpha}\nu\alpha\gamma\nu\omicron$  फिर २ जानलेना अर्थात् पढ़ना ।

$\acute{\alpha}\nu\alpha$  अलग होके प्राय कर्म के साथ आता है और उसका अर्थ प्राय नीचे से लेके ऊपरतक अर्थात् सम्पूर्ण किसी देश वा काल में होता है यथा  $\acute{\alpha}\nu\alpha\ \chi\acute{\omega}\rho\alpha\nu$  समस्त देश में  $\acute{\alpha}\nu\alpha\ \rho\acute{\omicron}\chi\tau\alpha$  समस्त शत में इस से प्रत्येकता का अर्थ निकलता है यथा  $\acute{\alpha}\nu\alpha\ \epsilon\chi\alpha\tau\omicron\nu$  सौ २ करके ।

२७६ ।

 $\acute{\alpha}\nu\tau\epsilon$ 

का मूल अर्थ सम्प्राप्त है यथा  $\acute{\alpha}\nu\tau\epsilon\ \gamma\alpha\rho\rho\epsilon\rho\chi$  सान्धने सेचला जाना । इस से खदले का अर्थ निकलता है यथा  $\acute{\alpha}\nu\tau\epsilon$

$\lambda\upsilon\tau\rho\omicron$  अर्थात् छूटने का मोल । और साह-  
 श्य का अर्थ यथा  $\acute{\alpha}\nu\tau\iota\tau\omicron\mu\omicron$  जो तत्त्व  
 मूर्ति का है । परन्तु प्रायः उस का अर्थ विरोध  
 का है यथा  $\acute{\alpha}\nu\tau\iota\lambda\epsilon\gamma$  अर्थात् विरुद्ध कह-  
 ना  $\acute{\alpha}\nu\tau\iota\tau\alpha\gamma$  अर्थात् विरोध में उहाना।  
 $\acute{\alpha}\nu\tau\iota$  अलग होके केवल सम्बन्ध के साथ  
 आता है और उस के उक्त सब अर्थ होते हैं  
 यथा  $\chi\alpha\rho\iota\gamma$   $\acute{\alpha}\nu\tau\iota$   $\chi\alpha\rho\iota\tau\omicron\varsigma$  कृपा के  
 तत्त्व कृपा ।

२७१ ।  $\acute{\alpha}\mu\omicron$

का मूल अर्थ हर की ओर है यथा  $\acute{\alpha}\mu\omicron-$   
 $\beta\alpha\lambda$  हर फेंक देना  $\acute{\alpha}\mu\omicron\tau\epsilon\mu$  काटनिका  
 लना । इससे काश्र हो समाप्त करके छोड़ने  
 का अर्थ निकलना है यथा  $\acute{\alpha}\mu\omicron\lambda\alpha\beta$  पूरा  
 पाना । और फेरने का भी अर्थ यथा  $\acute{\alpha}\mu\omicron-$   
 $\omicron\omicron$  फेर देना ।  $\acute{\alpha}\mu\omicron$  अलग होके सम्ब-  
 न्धही के साथ आता है और उस का अर्थसे  
 है यथा  $\acute{\alpha}\mu\omicron$   $\acute{\epsilon}\mu\omicron\upsilon$  मुझसे ।



ले आना । कभी २ सम्पूर्णता का अर्थ उस  
में है यथा εἰς αὐτὸν. ऐसा सुनना कि  
उसके अनुसार करे भी ।

εἰς अलग होके कर्मही के साथ आना  
है और उसके ये अर्थ हैं

१। स्थान में प्रवेश करना यथा εἰς τὴν  
οὐχίαν ἦλθεν चरमें गया ।

२। काल तक यथा εἰς τὸν αἰῶνα  
सदा तक ।

३। और यथा βλέψον εἰς ἡμᾶς  
हमारी ओर देख ।

४। अभिप्राय यथा εἰς τὸ, किस लिये  
εἰς τὸ κατὰ βαίνεῖν उतरने के  
लिये ।

२८२ । εἰς

स्वर के पहिले εἰς होता है और उस  
का मूल अर्थ εἰς के विरुद्ध अर्थात्

निकलने का है। प्राय यही अर्थ मिलता है यथा  $\acute{\epsilon}\chi\beta\alpha\lambda$  निकालडालना  $\acute{\epsilon}\chi\chi\alpha\lambda\epsilon$  औरों में से बुलाना  $\acute{\epsilon}\acute{\epsilon}\circ\circ$  निकलने की यात्रा। कभी २ उस का अर्थ सम्पूर्णता का है यथा  $\acute{\epsilon}\acute{\epsilon}\alpha\iota\tau\epsilon$  मांगके प्राप्त करनी।

$\acute{\epsilon}\chi$  अलग होके सम्बन्धही के साथ आता है और उस के ये अर्थ होते हैं

१। से यथा  $\acute{\epsilon}\acute{\epsilon}\circ\circ\rho\alpha\gamma\circ\circ$  स्वर्ग से  $\acute{\epsilon}\acute{\epsilon}\alpha\rho\chi\eta\varsigma$  आदि से  $\acute{\epsilon}\acute{\epsilon}\alpha\gamma\acute{\alpha}\pi\eta\varsigma$  प्रेमसे।

२। सम्बन्ध यथा  $\acute{\epsilon}\chi\tau\eta\varsigma\acute{\alpha}\lambda\eta\theta\epsilon\acute{\iota}\alpha\varsigma$   $\acute{\epsilon}\sigma\tau\iota$  सत्यता की और का है।

३८३।  $\acute{\epsilon}\chi$

का मूल अर्थ भीतर का है और समा-  
सों में प्राय यही अर्थ मिलता है यथा

ἐννουχόν रातको ἐνθε भीतर रख-  
 ना ἐμβλέπ भीतर देखना ἐνυπνιο  
 जो स्वप्न में देखा जाता है ἐντεμो जो  
 प्रतिष्ठा में है अर्थात् प्रतिष्ठित ἐντοχ  
 मिलके संगति करना ἐνθεlex जो भीतर  
 है सो दिखाना ।

ἐν अलग होके अधिकराही के साथ  
 आता है और उस के ये अर्थ हैं ।

१। में यथा ἐν τῷ τόπῳ उस स्थान में  
 ἐν πολλοῖς ἀδελφοῖς बहूनों  
 भाईयों में ἐν τῆμῃ εἰναῖ प्रतिष्ठा  
 में हो रहना ।

२। उपाय वा द्वारा यथा ἐν πορῆ आगसे।

२८४ ।

ἐπῆ

कामूल अर्थ ऊपर का है और मंथाओं से  
 माय यही अर्थ मिलता है यथा ἐπιτοχ-  
 οπαο जो ऊपर होके देखना है ἐπιγυελο

पृथिवी परका ἔγειρα, किसी के ऊपर पड़े  
 रहना ἔγειρα किसी के ऊपर फेरना  
 अर्थात् उसको सोंपना ἔγειρα किसी के  
 ऊपर दिखाई देना ἔγειρα जो मारे  
 जाने पर है ।

ἔγειρα अलग होके कर्म सम्बन्ध और अ-  
 धिकरण के साथ आता है ।

जब कर्म के साथ आता है तब उस के ये  
 अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἔγειρα θάλασσαν  
 περὶπατεῖ वह समुद्र के ऊपर चल-  
 ता है ।

२। और यथा ἔγειρα τὸν ποταμὸν  
 ἰέναι नदी के पास जाभा ।

३। विरोध यथा ἔγειρα τῶν γονεῶν  
 विरुद्ध उठना ।

४। तक यथा ἔγειρα ὅσον जहाँ तक ἔγειρα

χρόνον ऊँक काल तक ।

५। अलि शाय ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐπεὶ χειρῶν αἰρεῖν हाथों पर उठाना ἐπεὶ τῆς γῆς पृथ्वी पर ἐπεὶ τῆς πόλεως ἄρχειν नगर का अधिकार रखना ।

२। साम्हने यथा ἐπ' ἐμοῦ κρίνεσθαι मेरे साम्हने विराहित होना ।

३। समय में यथा ἐπεὶ Ποντίου Πιλάτου पन्थ पीलात के समयमें ।

४। शीति यथा ἐπ' ἀληθείας सचमुच ।

जब अधिकारा के साथ आता है तब उसके ये अर्थ हैं

१। ऊपर यथा ἐφ' ἑμαυτοῦ कण्ठे पर ।

२। पास यथा ἐπ' αὐτοῖς उनके पास ।

३। अधिक यथा इंग्ले गार्ड टोपटोद  
 इनसबसे अधिक ।

४। कारण यथा इंग्ले जिसके कारणासे ।

२५। Xατα

का मूल अर्थ नीचे की ओर है यथा Xατα-  
 ρια उतरना Xαταγ उतारलेखना । इससे प्र-  
 मुक्त का अर्थ निकलता है यथा Xατα Xα-  
 υα किसी के ऊपर चढ़ाऊ करना । और  
 विरोध का भी अर्थ Xατα में बहलसिलना है  
 यथा Xατα Xρυι विरोधमें विचार करना अ-  
 र्थात् दाद के योग्य रहना Xατα μολο-  
 υρε विरोधमें सही देना । और बहल वा-  
 दों में Xατα केवल शब्द के अर्थ को उल-  
 ता देता है यथा Xατα λυ नाश करना  
 Xατα ρυι सम्पूर्ण रूपसे जोड़ना Xα-  
 τα ρηλo अतिस्थल ।

Xατα अलग होके कर्म और सम्बन्ध के

साथ आता है । जल कर्म के साथ आता है  
तब उस के ये अर्थ हैं

१। नीचे और साथ यथा  $\chi\alpha\tau\alpha\ \rho\acute{o}\sigma\upsilon\upsilon$   
 $\pi\lambda\acute{\epsilon}\epsilon\iota\upsilon$  धारा के साथ नाव चलाना ।

२। ऊपर से नीचे तक अर्थात् समस्त देश में  
यथा  $\chi\alpha\theta\prime\ \omicron\lambda\eta\upsilon\ \tau\eta\upsilon\ \pi\acute{o}\lambda\iota\upsilon$  सम  
स्त नगर में ।

३। लगभग यथा  $\chi\alpha\tau\prime\ \acute{\epsilon}\chi\epsilon\iota\upsilon\omicron\upsilon\ \tau\acute{o}\nu$   
 $\chi\alpha\iota\rho\acute{o}\nu$  उस समयके लगभग  $\chi\alpha\tau\alpha\ \tau\acute{o}\nu$   
 $\tau\omicron\pi\acute{o}\nu$  उसस्थान के पास ।

४। में यथा  $\chi\alpha\tau\prime\ \omicron\iota\chi\omicron\nu\ \alpha\upsilon\tau\acute{\omega}\nu$   
उनके घरमें ।

५। और यथा  $\chi\alpha\tau\alpha\ \mu\epsilon\sigma\eta\mu\beta\epsilon\rho\iota\acute{\alpha}\nu$   
दक्षिणकी ओर ।

६। प्रत्येक यथा  $\chi\alpha\theta\prime\ \eta\mu\acute{\epsilon}\rho\alpha\nu$  प्रति  
दिन  $\chi\alpha\tau\prime\ \omicron\iota\chi\omicron\nu$  घर घर  $\chi\alpha\tau\alpha\ \delta\upsilon\acute{o}$   
दो दो ।

७। अनुसार यथा κατὰ φύσιν स्वभाव-  
के अनुसार । τὰ κατ' ἐμῆ

८। विषय यथा τὰ κατ' ἐμῆ मेरी  
दशा ।

९। भाव यथा κατὰ σάρκα शरीरके  
भावसे ।

१०। किरिया कसाली यथा κατὰ τὸν  
θεὸν ईश्वर की किरिया ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उस के  
वे अर्थ हैं

१। से और नीचे यथा κατὰ τοῦ κρ-  
νημοῦ ἑὸραμον वे कड़ाड़े से नीचे  
होड़े ।

२। नीचे और पर यथा κατὰ τῆς  
κεφαλῆς αὐτοῦ ἔχεν उसने उसके सि-  
र पर आला ।

३। एक ओर से दूसरी ओर तक यथा κατὰ



ὄλησ τῶσ χώρασ सनस्त देश में ।

४। विरोध यथा κατ' ἐμοῦ मेरे विरुद्ध ।

५। किरिया का साक्षी । यथा ὡμῶσε  
καθ' ἑαυτοῦ उसने अपनी किरियाएँ

२६६ ।                    μετὰ

कामूल अर्थ मध्य है जिससे μεσο वि-  
शेषण भी निकला है । समासों में उस के  
ये अर्थ हैं

१। संगित्व । μεταδο सम्भोगी करना ।

२। पीछे । μεταμελ पश्चात्ताप करना ।

३। बदलना । μετανοε मन बदलना

μεταμορφο मूर्ति को बदलना ।

μετὰ अलम होके प्राय कर्म और स-

म्बन्ध के साथ आता है ।

जब कर्म के साथ आता है तब उस का

अर्थ प्राय पीछे है यथा μεθ' ἑδ' ἡμέ-

ρας छः दिन के पीछे μετὰ τὸ εὔερ-  
 θῆναι με मेरे जगाये जाने के पीछे ।  
 जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उस का  
 अर्थ प्रायः साथ है यथा μετὰ τῶν νε-  
 κρῶν मृतकों के साथ μετ' ἐμοῦ  
 मेरे साथ वा मेरी ओर ।

२८७ । παρὰ  
 का मूल अर्थ पास है यथा παρὰστα  
 पास खड़ा होना παρὰρρῶ पास से ब-  
 ह जाना παρακλήτω जोकिसी के पा-  
 स बुलाया गया । इससे सोंप देने का अर्थ  
 निकलना है यथा παρὰθε वा παρὰδο  
 सोंप देना παραλαβ किसी के पास  
 से पाना । और उसी मूल अर्थ से सीमा  
 के उथर जाने का भी अर्थ निकलता है  
 यथा παρὰβα वा παραπετ अपरा-

य करना παράχου, आज्ञा लड़न करना ।  
इस से विरोध का भी अर्थ निकलता है यथा  
παράτε विरोध में मांगना या अनङ्गी-  
कार करना ।

παρά अलग होके कर्म सम्बन्ध और  
अधिकरण के साथ आता है ।

जब कर्म के साथ आता है तब उस के  
ये अर्थ हैं

१। पास जाना । ἐρριψαν παρά  
τοὺς πόδας αὐτοῦ, उन्होंने ने उस-  
के पांवों पर डाल दिया ।

२। पास पास । यथा παρά θάλασσαν  
ἦλθε वह समुद्र के तीरे २ गया ।

३। अधिक । ἄμαρτωλοι παρά  
πάντας सबसे बड़े पापी ।

४। छोड़के । यथा παρ' ὃ παρελάβε-  
τε उस को छोड़के जो तुमने पाया ।

५। विरोध ।  $\pi\alpha\rho\acute{\alpha}$   $\phi\acute{o}\sigma\iota\nu$  स्वभाव के वि-  
रुद्ध ।

६। कारण ।  $\pi\alpha\rho\acute{\alpha}$   $\tau\omicron\upsilon\tau\omicron$  इस कारण से।  
जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके ये  
अर्थ हैं

१। पास से ।  $\pi\alpha\rho'$   $\alpha\upsilon\tau\omicron\upsilon$   $\acute{\alpha}\chi\eta\kappa\acute{o}\alpha\mu-$   
 $\epsilon\nu$  हमने उस से सुना है ।

२। पास ।  $\omicron\iota$   $\pi\alpha\rho'$   $\alpha\upsilon\tau\omicron\upsilon$  उसके पास  
के अर्थात् चरकेलोगा। जब अधिकरण के सा-  
थ आता है तब उस का अर्थ केवल निकट-  
ही है यथा  $\pi\alpha\rho'$   $\acute{\epsilon}\mu\omicron\iota$  मेरे निकट सामीप्य  
सम्बन्ध में ।

२८८।  $\pi\epsilon\rho\iota$

का मूल अर्थ चारों ओर है यथा  $\pi\epsilon\rho\iota\beta-$   
 $\lambda\epsilon\pi\alpha$  चारों ओर देवता  $\pi\epsilon\rho\iota\chi\omega\rho\sigma$  चारों  
ओर का देश । इस से अधिल्य का अर्थ  
निकलता है यथा  $\pi\epsilon\rho\iota\epsilon\rho\gamma\omicron$  जो अधिक-

काम करता है  $\pi\epsilon\rho\iota\lambda\upsilon\pi\omicron$  अतिशोकित  
 $\pi\epsilon\rho\iota\chi\lambda\upsilon\tau\omicron$  अतिशुभ अर्थात् ब्रह्म की-  
 निर्माण ।

$\pi\epsilon\rho\iota$  अलग होके कर्म और सम्बन्ध और  
 अधिकारा के साथ आता है ।

जब कर्म वा अधिकारा के साथ आता है  
 तब उसके ये अर्थ हैं ।

१। चारों ओर ।  $\tau\omicron\upsilon\omicron\varsigma\ \pi\epsilon\rho\iota\ \alpha\upsilon\tau\omicron\upsilon\nu$   
 $\chi\alpha\theta\eta\mu\acute{\epsilon}\nu\omicron\upsilon\varsigma$  उन को जो उसकी चारों  
 ओर बैठे थे  $\omicron\acute{\iota}\ \pi\epsilon\rho\iota\ \acute{\epsilon}\mu\acute{\epsilon}$  मेरे संगी लोग  
 $\tau\omicron\upsilon\ \pi\epsilon\rho\iota\ \acute{\epsilon}\mu\acute{\epsilon}$  मेरी दशा ।

२। लगभग ।  $\pi\epsilon\rho\iota\ \tau\eta\nu\ \tau\rho\acute{\iota}\tau\eta\nu\ \acute{\alpha}\rho\alpha\nu$   
 तीसरे घाटे के लगभग ।

३। विषय में ।  $\pi\epsilon\rho\iota\ \pi\acute{\alpha}\nu\tau\omicron\varsigma\ \kappa\alpha\tau\omicron\iota$   
 के विषय में ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसका  
 अर्थ प्रायः विषय में है यथा  $\pi\epsilon\rho\iota\ \kappa\upsilon\ \gamma\epsilon-$

ῥαπταλ जिसके विषय में लिखा है ।

२८१ ।                      ἄρο

का मूल अर्थ आगे है । आगे उस का अर्थ है आगे की ओर यथा ἄροβρα आगे जाना (इससे ἄροβρατο भेड़ निकलता है) ἄροφα कह निकालना । कभी २ अगले समय का अर्थ उरु में है यथा ἄरोεπ आगे से कहना । कभी २ आधिल्य का अर्थ है यथा ἄροαλεε एकचक्र को दूसरे से अधिक लेना अर्थात् चुनना । कभी २ लाहने का अर्थ है यथा ἄροφασα को साहने दिखाई देता है । इस से उपकार का भी अर्थ निकलता है यथा ἄρομαχ किसी के लिये लड़ना ।

ἄरो अलग होके सम्बन्धी के साथ आता है और उसका अर्थ आगे है चाहे देण में यथा ἄरो ἄροσπατου σου और पुत्र



जब सम्बन्ध के साथ आता है तब उसके प्रायण अर्थ हैं

१। निमित्त । ὄπερ τίνος προσεύχεται किसी के लिये प्रार्थना करना ।

२। स्थाने । ὄπερ τίνος ἀποθνήσκειν किसी की सती मरना ।

३। ὄπο

का मूल अर्थ नीचे है यथा ὄπορθεῖ नीचे उतराना या घणीभूत करना ὄπο-

μειν नीचे रह जाना अर्थात् भार को सह लेना । इससे गोपन का अर्थ निकलता है यथा ὄπορχειν कपट करना ὄπο-

βιαι उसमें उभाड़ना । इस से धीरे २ करने का अर्थ निकलता है यथा ὄποσ-

वेυ धीरे २ वहना ।

ὄπο अलग होके कर्म और सम्बन्ध और अधिकरण के साथ आता है ।



जब कर्म के साथ आता है तब उस का अर्थ प्राय नीचे है यथा ὁπὸ τῆν σὺχῆν ἄजीर के पेड़ तले । कभी २ समय यथा ὁπὸ τὸν ὀρῆρῶν भोर को ।

जब सम्बन्ध के साथ आता है तब प्राय परकर्तक और अकर्मक क्रियाओं के कर्ता के साथ आता है यथा τὰ εἰρημένα ὁπὸ σὺ जो बातें तसे कही गयी हैं πᾶσχω ὁπ' αὐτῶ में उससे उःए उठाताहूँ ।

जब अधिकरण के साथ आता है तब उस का अर्थ नीचे है ।

२५४ । उपसर्गान्वित क्रियाओं का आगम प्राय उपसर्ग और क्रिया के मध्यही में आता है यथा ὁπετάγη वह वर्षीभूत किया गया । केवल जब निरे धातु का प्रयोग नहीं होता है तब आगम उपसर्ग

के पहिले ही आता है यथा ἔχεται  
 ὅς τε वे सप्रम थे ।

अभ्यास सदा उपसर्ग और क्रिया के मध्य  
 में आता है यथा διαμεμενηχότες  
 लगातार रहे हुए ।

षोडश अध्याय — और कितने अव्ययों का  
 वर्णन ।

श्लोक १ । ἄμα अधिकरण के साथ आता  
 है ।

२ । ἄνευ ἄλλοι μέχρι πέρα सम्बन्ध  
 के साथ आते हैं ।

३ । ἄγχι πέλας सम्बन्ध वा अधिक-  
 रण के साथ आते हैं ।

श्लोक ४ । γὰρ γέ ὅτε ὅτι μὲν τε वाक्य  
 वा उस के किसी अङ्ग के आदि में नहीं आते

सकते हैं। प्रायः उस के पहिले ही शब्द के पीछे आते हैं।

२५७। 'Av के विशेषकरके दो प्रकारके प्रयोग हैं।

१। वह सम्बन्धवाचक शब्दों के साथ आके उन को अधिक संदेह वा अनिश्चयता का अर्थ देता है। यथा ὄσ ἄν ἔχῃ वा ὄσ τῆς ἄν ἔχῃ जिस किसी के पास हो ὄσ ἄν ἔχῃ जब कभी तु आवे ὄσ ἄν ἔχῃ जहां कहीं भी होऊँ ὄσ ἄν βουλεύωμεν जिस किसी प्रकार से हम ठावें। इस प्रकार से ἔσῃ वा भी कभी २ प्रयोग होता है।

२। वह लड़ वा १ वा २ लड़ वा लोड़ के धार्त्तभाव के साथ आके यह बताना है कि उक्त क्रिया होनी वा हुईनी नहीं

परन्तु यदि और ऊँच होता तो वह भी होती यथा εἰ χ<sup>θ</sup>έ<sup>ς</sup> ἢ χ<sup>ο</sup>υ<sup>ο</sup>ν τ<sup>ο</sup>ὔ<sup>τ</sup>ο, οὐ<sup>κ</sup> ἄ<sup>ν</sup> ἐ<sup>π</sup>ο<sup>ί</sup>ο<sup>υ</sup>ν οὐ<sup>τ</sup>ω<sup>ς</sup> यदि मैं ऊँच यह सुनता तो ऐसा करता ।

२६८। "H सदा तरवर्धवाचक विशेषणों के पीछे आता है यथा οὐ<sup>δ</sup>έν ἕ<sup>τε</sup>ρον ἢ λέ<sup>γ</sup>ειν  $\tau$ ι ऊँच कहने से ऊँच भिन्न वही अर्थात् केवल ऊँच कहना । इसी अर्थ में संज्ञा के सम्बन्धकारक का भी प्रयोग हो सकता है यथा σὺ εἶ δ<sup>ι</sup>κα<sup>ι</sup>ότε<sup>ρ</sup>ος ἢ ἐ<sup>γ</sup>ώ वा σὺ εἶ δ<sup>ι</sup>κα<sup>ι</sup>ότε<sup>ρ</sup>ος ἐ<sup>μ</sup>οῦ  $\tau$ ι तु मुझसे अधिक धर्मी है।

२६९। Καὶ के दो अर्थ हैं अर्थात् और । भी । जब इसका अर्थ है भी तब सदा उस शब्द के पहिलेही आता है जिससे विशेष सम्बन्ध रहता है यथा ἡ<sup>μ</sup>εν γάρ πο<sup>τε</sup> καὶ ἡ<sup>μ</sup>εῖς ἀ<sup>γ</sup>ό<sup>η</sup>το<sup>ι</sup> क्योंकि हम भी

सभी निर्बुद्धि थे ।

जब दो  $\kappa\alpha\iota$  पास २ आते हैं तब उन का अर्थ है दोनों यथा  $\kappa\alpha\iota$  ἡμεῖς  $\kappa\alpha\iota$  ὑμεῖς हमभी और तुमभी ।

३०० ।  $\text{Μέν}$  का प्रयोग केवल तबही होता है जब पीछे  $\theta\acute{\epsilon}$  आता है या कला के म-  
न में है यथा  $\tau\acute{o}\tau\epsilon$   $\mu\acute{\epsilon}\nu$   $\epsilon\theta\acute{o}\upsilon$   $\lambda\epsilon\acute{\upsilon}\sigma\alpha\tau\epsilon$   $\epsilon\iota\sigma\acute{\alpha}\lambda\omicron\iota\varsigma$   $\nu\acute{\upsilon}\nu$   $\theta\acute{\epsilon}$   $\gamma\nu\acute{o}\nu\tau\epsilon\varsigma$   $\theta\epsilon\omicron\nu$   $\kappa$   $\tau$   $\lambda$  तब तो तुमने मूर्तिन की सेवा किं परन्तु अब ईश्वरको पहिचानके इत्यादि ।

३०१ ।  $\text{Μη}$  और  $\omicron\acute{\upsilon}$  का केवल वही अन्तर नहीं है जो मत और नहीं के बीच है अर्थात्  $\mu\eta$  न केवल लोह भाव के साथ नहीं आता है वरन् जहाँ कहीं अशङ्कीकार का निश्चय नहीं है तहाँ

μη का प्रयोग होता है । यथा εἰ μη  
 ἦλθον यदि मैं न आता ἔνα μη ἄχ-  
 αρπος γέγεται तिलों निलफला न  
 होवे ।

सप्तदश अध्याय - कितने  
 विशेषणों का वर्णन ।

३०२ । Ἄυτο जब समास में आता है  
 तब उसका अर्थ आप है यथा αὐτοχειρ  
 आपने हाथ से करने वाला αὐτοπτα  
 अपनी आंख से देखने वाला । जब अलग आ-  
 ता है तब विशेष करके उसके कर्त्त का-  
 रक में प्राय वही अर्थ है वथा αὐτός  
 ἐγώ में आप αὐτοὶ ὁμεῖς तुम आप  
 αὐτός ἦθεε τί ἤμελλε ποιεῖν

पहिले आता है तहां नाम अकेला होता  
 है परन्तु उसके पीछे जहां कहीं आवे  
 तहां यह विशेषण उसके साथ आवेगा।  
 फिर जब तात्पर्य है कि कोई पदार्थ एक  
 ही है अथवा वस्तुओं में विभिए है तब  
 यह विशेषण उसके साथ आता है यथा  
 ὁ ἄλλος ἄλλος ἄλλος क्योंकि सूर्य एक ही है  
 ὁ ἕως ἕως ἕως ὁ ἕως ἕως ἕως  
 देव अर्थात् ईश्वर । और जब विशेषण  
 या क्रिया के विशेषणभाव के साथ आ-  
 ता है तब उस का अनुवाद हिन्दी में  
 जो से होना आवश्यक है यथा ὁ ἕλεν  
 μωυ यह जो दयावान है οἱ εἰς ποτα-  
 ἕλεν εἰς εἰς εἰς εἰς εἰς  
 किथा ।

१०७ । इस विशेषण के अन्त में जब

०६ आता हे तब उस का अर्थ हे यह।  
यका टाँ०६ ये जाते ।

परिष्कृत धातु ।

ΚΤΙΔ बना ।

ΛΕΠΙ छिन्नका निकाल । इस से

λεπτο पत ला λεπρο' लोड़ी ।

ΠΕΝ अमकर । इस से πονο

अम πενγητ अमी वा वारिद ।

॥ समाप्तम् ॥

✻ लिखितं पंडितजगदीशचंद्रकाशीश्री ✻